#### বিজ্ঞাপন



চারি বংশর পূর্বে আমি কাব্যপ্রন্থ রচনা করিব ভাষা স্বশ্নেপ্ত জানিতাম না। তিন বংশর অতীত ঘইল, আমি "চিত্রঞ্জিনা" নামে একখানি ক্ষুদ্র কাব্যপ্রস্থ রচনা করি। "চিত্রঞ্জিনা" নিশিয়া আমি বেরপ্রপ্রশাহ পাইয়াছি, বোধ হয়, কোন কালে কোন দেশে কোন প্রস্থার রেনরপ্রপ্রস্থায় পান নাই। তবে আমি কি সাহদের উপর নির্ভর করিয়া এই বহুবায়সাধ্য ব্যাপারে পুনর্কার প্রব্রত ঘইলাম। সক্ষদয় পাঠকগণ! ইমার উত্তর আমি নি ছুই নিতে পারিলাম না। তবে যদি আপনারা আলু এই করিয়া এই পুত্তক খানি অধ্যয়ন করেন, বোধ হয়, ইঘার উত্তর কিছু পরিমাণে পাইলেও পাইতে পারেন। এই প্রস্থানি বাল্লালা কাব্যপ্রস্থা পাঠ করিবার ফল। ব্যেহতুক আমি বাঙ্গালাক্ষার্থস্থ পাঠ করিবার কল। ব্যহতুক আমি বাঙ্গালাক্ষার্থস্থ তাধিক পাঠ করিবার কল। ব্যহতুক আমি বাঙ্গালাক্ষার্থস্থ তাধিক পাঠ করি নাই।

উপকার স্থাকার না করা বড় অধর্ম। সেই অধর্মপ্তরে আমি এই স্থলে স্বীকার করিতেছি বে স্কটলগু ও ইংলগু দেশীর প্রসিদ্ধ করিম্বন্ধ বরক্ষ ও বাইরণের কিছু কিছু ভাব এই পৃশুকের কোন কোন স্থানে সমিবেশিত করিয়াছি।

অবশেষে সহাদর পাঠকগণের নিকট আমার নিবেদন এই, ধদি উহার। অস্থ্রছ করিরা এই পুশুক্থানি একবার পাঠ করেন, সকল শ্রম সার্থক জ্ঞান করিব।

ঞ্ছকারস্য।

### মানাবর শ্রীযুত ঈশ্বরচন্দ্র বিদ্যাসাগর মহাশয় মহাশয়েয়ু।

ওহে <mark>পুথীবর. ত</mark>ব ও অন্তর কোমল কমল যেন. দয়ার আকর, বিদ্যার সাগর, কয় জন তোমা হেন গ প্রকৃতি স্থন্দরী, এ ভব উপরি অত্যে গঠনিল ্কত জीব बढ़ थानी, नाहि পारत वानी বর্ণনা করিতে তত। দর্ব্ব শেষে নর, প্রফুল্ল-অন্তর্ প্রকৃতি গঠিল করে, রভি নানা রূপ, \* একের স্বরূপ ে কে দেখে, বল অপরে ? মানব থেমন, কুতুহুলী মন রহস্ত বেড়ায় খুজি, প্রকৃতি তেমন, রহুন্ডে মগন ' হতে চায় সেওঁ রুঝি : রহস্তের ভরে, এই ভব'পরে প্রকৃতি গঠিল তাই,

প্রাণী এক আর. প্রাকৃতি ভাহার বড়ই মঞ্চার ভাই। পর সুখ ভরে, অঙ্গ কালি করে ভাবি ভাবি সারা দিন. পর সুখ তরে, স্বাস্থ্য ভঙ্গ করে, আমোদ প্রযোদ হীন। পর তুথ তরে অশন উদরে: জুটে না তাহার রোজ, ভবিষ্যত তরে, ভাবেনা অন্তরে, যেই জুটে তাই ভোজ। এর পুরক্ষার, গালাগালি ভার ইবা নিন্দা কুৎসা তীর, বক্ষ ভেদে তার, জ্বালায় যাহার, হ্রাদ তার নহে স্থির। নাম এ প্রাণীর, হলো প্রকৃতির, ইস্ছা কবি বলি দিতে. কিন্তু দে প্রকৃতি পাঠান প্রকৃতি নিতান্ত না বুঝি চিতে। হুঃখ ভাবি ভারঁ, প্রকৃতি আবার আশ্রয় করিয়া দিল। ত্থী, দয়াবান্, আশ্রয়ের স্থান, তার সে তাই হইল।

কাব্য লতিকার, কে আছে আমার
তোমা ভিন্ন গো সহায় ?
বির তবাপ্রায়, কাব্যলতাচয়,
ব্যাপুক উদ্যান প্রায়
এ বিশাল বঙ্গে, যেন তব সঙ্গে
কাব্য বল্লী না শুকায়।
"চিত্ত-রঞ্জিকার," যেমন স্থালায়
পাদপ কন্টক-প্রায়,
ভাবি সহকারে, "চিত্ত-রঞ্জিকারে"
কঠিন শমীরে দিহু,
"মোহিনী-মোহন" পাদপ-চন্দন
ভোমায় ভাবি অপিপু।

একান্ত বশবদ **এইশ্বরচন্দু চটোপাধ্যায়,** সাং বালি।

## ্ শুদ্ধিপত্ত।

	و ه		
781	পংক্তি	ভ্ৰম	<b>म</b> ःटमाधन
<b>ર</b>	, २२	ু যুঠেনি 🥤	যুটেনি
Ь	هٔ کر ،	পেঁছিছিতে	পঁহ ছিত্তে
٣	&	সদত	সতত
76	* 39	মন <b>×চচ</b> ক্	मन=७८%
<b>9</b> b-	39	ন্ড়িল	ल फ़ि <b>ल</b>
85	২৩	সদত	সতত
90	\$2	পড়েছে	পরেছে
95	ર	চাৰু তায়	চা <b>ৰু</b> তায়
92	b*	मङ्गीद्व	मद्रः भी ८ व
95	>A	স†স্থ-কলে	আশ্হা ফলে
-99	২৬	steel.	শোভা
<b>b</b> - 9	>0	ফুপ	কুল
৯২	২৩	পরিশর	পরিসর
७०६	৬	কয়	ক্
**	?2	সম্ভোগি	न रेग्न !
\$\$0	<b>&gt;</b> b	বিজান	বিশ্বান
<i>&gt;&gt;%</i>	<b>\$</b> 2	<b>শর</b> †	শর্;
25.0	<b>২</b> 8	रूप	হৰ্ম্য
599	<b>২ ७</b>	খোনি "	আ'দে
364	২৩ .	ভজি ইন্ছা	কত সাধ
>>¢ .	æ	<b>ভ্ৰ</b> ম	হৰ্ম্য
ንል৮	२५	<b>হ</b> ৰ্ম <sup>*</sup>	<b>र्</b> या
520 .	२०	ध्रम	धूटम
२२७	30	কিবা	কেৰা
288	9	<b>म्</b> कंतित्व	मू@त्रिटव

#### মেহিনীমোহন কাব্য।

#### প্রথম সর্গ।

"What is man! for simple is he look."
Do but try to decelop his hooks and his crooks,
With his depths, and his shallows, his cood and his evil,
All in all he's a problem must puzzle the devil "-Borns.

'গেং সংসার সংখ আগার যেই জন কর,
দরাশুনা জারি দেই কি আছে সংশয়।
যে পার্ছে কিরাই আঁথি দেখি জীবকন্তী,
হথ হয় শব্দমান জান হয় স্পন্তী।
হর্বলের প্রতি প্রবলের প্রসীড়ন,
প্রাণ কাদি উঠে যাহা করি সম্পর্ণন।
হাতি চিকা ই অল পজল পাদপে
পশিয়া প্রকৃতিশোভা, করিছে আতপে।
কি চাক বরণ প্রভা সাঁথি ভৃত্তিকর,
নিরীক্ষণে নির্বাশিত উত্তপ্ত অন্তর।
প্রমন সময় এক কাল বিছল্প,
ধরিল পতল আসি প্রকৃত্তি বিজ্ঞা।
কোন ছানে দধীমুখী বিদি শাখী' পরে,
করিছে সংগীত কিবা স্বমধুর অরে।

त्र पूत्रली - श्रीन श्रीन मन श्रूनिकंड, विश्व मीना मञ्जा भाग्न छनि तम मश्मीछ। अमन ममन्न अक मिकातिना गांधी, দেয়ে। দে দধীমুখী হতে এক শাখী। কালাভক কাল সম করি পরাক্রম, कतिन कवनष्टिक जाशादि अधम। কোন ছলে নয়ন পুতলি পুত্রবরে জননী হইয়াহারা কাদে শোকভরে। अमृति निर्मन्न काल मन्नायुना मन, জननीत क्लाफ़ इट्ड कार्ड श्लामन। कक्ष अस्मनश्चि असि जनभीत. আছে কি এমন মন হতে পারে ছির ৮ वत्क कराषां करत ध्नाम न्यूछित, কার কার কারে অঞ্চ ছাহাসছলিত। कामन धानत्भ छ। समग्र निम्दत्र, जिक्का मश्मात, वत्म स¦३ इन्हर करता। कोन ছान् नार्विका मलिन दिन पति, ভ্রমিতেছে দারে দ্বাঁরে মুক্তিভিক্ষা করি। मिन वमन हिन्न जाएक मांच जानि, टिति यादां इके निक (निक्र कत्रजानि। কন্দে বুলি করাস্থলি ধরি বংশয**ি**, शुर्ठिन छेमरत अंध वृत्यि मिन मन्ही, ৰক্ষ কেশ অন্থিপেৰ তাহে চক্ষু বসা, **छेनग्र अन्तर्भ नेक्श** निर्देश महन्। कान शादन कूर्वगाधि गाजि-माकि शीम, रख धर्मातिश किका हाटर वित मीन।

খন খড়ো কার শির কার কাটে ছাত শোণিতে ভাসরে ভূমি তাহার পশ্চাৎ। সমরের সহোদর ছার্ডক ভীষণ, পশ্চাতে আদিয়া তার নাশে নরগ !!. ক্মিষ্ঠ ভাই মত্ক হৰ্জয়, \ বিস্তারিত করে পরে ধোর মারীভয়। कान च्रान पारिक, शीमान, शीत करन, भाषिक भाष्ठ नद नियुक्त भौड़ान। 'লোঘী নন অন্ত দোষে হাধু সতাপ্রিয়, দোষী নন অন্ত দোষে ক্লব্ব জিতেভিয়। मठा धर्म जागा कथा (यह जान नात, निर्द्वाध विनश प्रके उपहादि मुक्तार । •शरका, धाराद्रग्, शद्रथेगे न. कतिए समक (यह मिरे विक जन मग्रायान, माननील, छुश्यी छुश्यह्रज्ञ, নিবের্বাধের শিরোমণি তাদের গোচর; পরদেষী, পরস্তুপ, পর-হিংসাকারী, वृक्षिकीवी मिरं कर्न आपत जाराति! গঠনিল যেই জন এ ছার সংসার, কেমনে হদর তার কৰণা আধার। कीरवरत यञ्जनभ किटल (यहे क्रम मक्क, म जन मक्स मिए सान(वह साक। সতা, ধর্মা, যে সংসারে এত স্থবিরল, विषयना (म मश्मादि वम्हि क्वम। मतायक लाक धुँकि ना शाहे कगरक, বল মন সে সংসারে রছিব কেমতে।

পদে নাছি পদাস্থলি তাহে কত শত, ভন্ ভন্ করে মাছি তাহে অবিরত। কোন, ছানে অন্ধ্ৰুতনে প্ৰসাহিয়া কর " দে বাপুরে ভিক্ষা মোরে" বলে নিরন্তর। দুৰ্ভিছীৰ খেই জন কি কফটই তার, হতভাগ্য তার সম কেবা আছে আব ? ষে জন জীবেরে পারে সৃজিবারে অন্ধ, কভু না ভাহার হৃদে আছে দ্যা-গন্ধ। উচ্চ- অভিনাষ-সূত্র সমর অগম, 🤲 প্রকাশিছে কোন স্থানে বিষম বিজ্ঞা: विभान मिक्नि करह अधि अख धर्द, চক্তকি তরবার বলে বামি করে। লোহিত লোচন তার যেন প্রভাকর, मानवर्गिति जारा तकारू अध्रा। অক্ষে অনল অস্ত্র যবে সঞ্চালন . अक्रिश म्निरकूरल नागरत इड्बंन। मूक्यूक् र्रिकात मार्टन यक शांत्र लाज. উপলক্ত হয় মনে প্ৰলয় বিৱাজ। श्वितृष्ठि मिथि इत्य थान कें। एन उत्त, শিলাকৃষ্টি,বলি জম জনমে অন্তরে। शीम्।इंग्रि यट<sup>क</sup> रमें करत वित्रथा, भंज छेन्कार्भि ७ वटर्व स्वम करैन कन। সহল্ল সক্ত লোক পাত সে প্রহারে, অট্টানিকা কত শত যায় ছারখারে। ञ्चुमा बर्गनत्मोकः गूड्टर्स विनये न। क्य जिल्ली मार्ट कात महन करें ?

गत्भाष्ठः नर्सू भूं कि का छोडे इ का न. না পাই ধার্কি জনে এ বড় জঞাল। অমূত বলিয়া জ্ঞান যাসা হয় মটন, গরল প্রতীত হয় সেই পরকণে। মিণভাষী, হাস্মুখ, সভাব্ৰতী কত, জিতেন্দ্রিয় সুগন্ধীর, ধর্মপথে রত কথা ভানি মনে গণি ধর্ম-আবতার, মনে করি এই বুঝি পাত্র বন্ধুতার। ্ত্তিক বন্ধু হপাশে আবন্ধ হইতে, তুমিক মতনে নন তারি একচিতে, যেমন সভাব যার ক্রমেতে প্রকাশ, সতা অভাবের শেষে পাইল আভাষ। ভন-কাব্যপ্রস্ম - উচ্চানে যের৷ বাস, नक्षनात्माक मूट्य खडाव डेमान्। অন্তর-উদ্যান ত'়র করি বিলোকন অবাক্ হইয়া আছি না সরে বচনঃ यज्ज्ञ शाश्चक शास्क मत्नामहत्त्व, সতেজ দে সর্বতক ন্যুনে প্রদানে। কুটলতা-তৰু যিটি সিটি ভরস্কর, নির্থিলে সিটি চক্ষে গায়ে আসে জুর। এ সংসারে বাসতরে যাখা ছিল আল, এ বর্র সহবাসে গেছে সে. প্রবাস। '**৭য়ন সংসা**রে আর নাকরিব বাস, ত্যজিব ভুজজনম নরসহবাস। " जिमिश्रा कांग्रें काल यांव जिलाखर्ब, সভাবের শোভা হেরি ছুডাব অন্তরে।

किंह रात्र आवम्य मन त्थारतीरत. जिल्हा कर्मान याहे कि मिश्रिय किरत। मदना अवना नाहि जातम आमा वहे. विष्मिणंखमार्ग यात (कमान वा कहे। र भिष्डा भिष्यकारम शतिगम्भार b কেৰ বা বাদ্ধিয়া ছিলে ! অঞা নীয়ে ভাষে তাই मम क्षि धरवः तन श्री धर्म কেমনে সে স্নেছপাশ করিব ছেদন। हि शिष्ठः ! छामाति मिर मिर व। कम्पन. काल मिनाहात्रवरन मर्डि ध्यास्ट्रास्ट्रास्ट রে দেশাচার ছাট তুই কত দিনে, कांख इवि मैकारेए वक्कन मीरन। তো होत क्यांति १ छि यउ वज्रक्रत. कतिराज्य इते कहे विश्व खनान। যা হবার হবে তাই রবনা কখম, তিলেক এ পাপাপারে করিত মনন। शर्राहित नाम। (मर्ग. नगद्र, धालुद्र, সভাবের শেভা চেথি ছড়াব অন্তর। নির্থিব রত্বাকর, শ্রোত্থিনী শত, ভাষিৰ কান্মপথে দেখিৰ পৰ্বত। निर्मात सर्मात भाग खानव धारा। বিহলম-গাম বদি শুনিব কাননে। কিন্ত হার বিদায় চাহিব কোন্প্রাণে, धांगमम मम मिह थिता-मित्रिश्वा াবাই নয় না বলিয়া ৰতুবা কখন, मिट्र मा विभाग मादि मि विश्वमन।

कि कहिन्न, हेरेनाम तुबि भूगा-छान, নতুবা এমন চিন্তা ছদে পায় স্থান। यनि याहे ना दिन शा थिया अखिगातन, निक्षा विधित (महे जार्शन श्रद्धाः। तूर हेग्रा यकि विन बुबिद निम्हग्र, মম প্রণয়িনী কভু অবোধ ত নয়। বলি গিয়া যাই তাই চাহিগে বিদায় कला यांब (मर्गेष्ठिर कि मत्मर जाता" এইরপে খুবা এক বসিয়া বিজ্ঞান, विलेग कि परिनाद गरन। वरः भक्षविश्मधात्र कास्ति मत्नाहत, স্তুচিক্রণ কাল কেশ দেখিতে স্থন্দর। •ললাট বিশাল ছেরি মনে জান হয়, ধীশক্তি বসতি করি চির তথি রয়। স্থচাৰু চিৰূণ কিবা তার যুগা ভূক, হেরি রমণীর ছিয়া কাৃপে इक इक। जाकर् नम्रन-यूगं मोम्पर्धा - जानाम, कि माधुदी रमरनित कतिए शकानी। আঁথি ছুটা হেরি তার মনে জ্ঞান হয়, বিক্ষারিছে বুদ্ধি-জ্যোতি দিয়া তারাদ্বর नामिका खुन्नश्र खडि, 'क्रिश मन्नन, नेयम् भौरकत द्रश हाक ऋभाजन। ওঠাধর ছইথানি স্থাতের অতি, মূহল মধুর হাসি তথি নিবসতি। कोयूनी किनिया त शनिय तर्ग इही, (गाँकक्रभ-चम भार्ष ददि-त्रिश-चष्र)।

चमदूत कथाश्रील कातात्र च्याहत, त्म खन्न अवर्ग नाही नार्थ कि ध्वकारन कून, भीन, नक्कां, छग्न: क्टब मरन भर्न, कुरम जाबि मना एरन रम मधुनिकर्ण। বিশাল সে বক্ষঃত্বল সৌন্দর্য্য কি তার, নারী ভিন্ন সে রূপের মর্মজ্ঞান কার? ट्न क्कः इन मार्त्य , खरुत आवाम, যে অন্তর কত উচ্চ বলিয়া প্রকাশ कतिरव (कमरन कवि: भौति विनिर्दार अना नत मन जिथ (शे हैं <del>कि क्रांटन</del> যেমন দে উচ্চ পুনঃ তেমনি কোমল, জগতে নাহিক যার উপমার ছল। কুংখী ফুঃধিনীর অঞ্চ মুছাবার তরে, যত্ন করি গঠিছিল তার যুগা করে এ বিশ্ব - সূজন - পাতা, সে বাছযুগল পর-উপকার-ব্রতে সদত চঞ্চল। जना ज**न** धारा माधूरी विवास কিরা প্রয়োজন আর; সেন্দির্যা যাহারে निष्क পরিণয় করি শরীর মাঝারে বিরাক্ত করিত সদা শোভিত তাহারে। অভিধান মোহন হ্রাক্ষণ সন্তান, চিন্তাপুর নিবসতি মনোরম স্থান। खननीत अक माज महान माइन, অতি প্রিয় মধা ষ্টি খঞ্জ প্রেরধন। উত্তম সঙ্গতিপন্ন জনক আছিল, আত্মজে কালেজে বিদ্যা যত্নে শিকা দিল।

जर्भ किट्न कुडिका इरेन माइन, वृद्धिकीयी विन मुगम्स श्रिशिकनः করিত চাহার অতি; অসা বয়ঃক্রা, বিভা দিয়া পিন্ধ তার রাখিন সমুমে। তে জিয়ান, বুজিমান, বিশ্বান যে জন, বল-রাজে। বাস তাঁর বিষম জ্লুন্। অজ্ঞতা-তিমিকে যথা চির আহাদিত, বিদ্বান তথায় কোথা হয় গো,আদুর্ত। মুর্খের কোথায় মিল সহ পণ্ডিতের, विषाद्य पूर्व मिन क्ष्युद्धार देखनः। বিশ্বাক্তে কাৰ্যা দেখি মৃত্ কাঁপে কোপে, মিছা কত অপবাদ তাঁহারে আ্রোপে। কু ফাঁদে কেলিতে তাঁরে হয় যত্রান, मन ( किया करत किरम इत्य ज्ञानाम । हम मना चिन माइत्वत विक थारिम, জুলিয়া উঠিত সব মোছনের নামে। **प्रि. क्रमश्कांत किएम इहेर**वक पृत्र, করিল মোছন তার যতন প্রচুর। विधवा निवाह न्याटि इस शहनन, ধন মন দিয়া চেষ্টা করিল মোহন। कूष्रश कूलमर्यामा किरम इति श्रः म, বহল মোহন তার পরিভাদ অংশ লইল আপন করে; ফল'লাভ তার, কুবচন, জ্বালাতন, অপমান ভার। इः एथ मक्ष कति मिन मिर मिश्रमात्र, সরল স্বভাব যার সে কি অসতের

\*\*\*

क्षेत्र व्यक्तिक मक्ष भागव - ध्रकृति मिलिया कामिल धान अकांता बाक्रि । मत्नाइः एष जारे नजरति भून अता, ত্যজিতে বাসনা তার হলো মনোভর।। যথা ব্যাত্তপূৰ্ণ বন তাজি মৃগদল, অবেষণ করি তার। অন্ত বনস্থল, शनात्र हूर्টि मद्दत नाहि हाटर किर्द्ध, · যায় তারা শৃষ্ঠাপুত্র অরণদানী তীরে। হে পাঠক সহদয় মোহন মতন, नद छे शबूक नइ ब्रांटन व कूनन। नक्रू क्षिक जिन्दाम क्षेत्र मेरियक, না কর কোন পাঠক না করছে কেছ। (मिष्ड आर्थन हत्क उंत दक्षकन, তব সর্বনাশ তরে, একান্ত যতন।° তোমার মলল দেখি ঈ্গায় কাতর, তৰ যশ আকৰ্ণনে ব্যাকুল অন্তর। - তথাপিও তার প্রতি সন্দেহ ন। কর, বুঝোনি কিছুই যেন তাহার অন্তর ' হেন ভাবে কথা কবে তুমি তার সনে, 'সক্ষ হইবে তবে রহিতে ভূবনে। জিজাসা করছ যদি বন্ধু সৈ কেমন, অমঙ্গল অৱেষণ করে যেই জন। তহুত্তর দিতে কিনা সক্ষম সহর, কোণা পাৰে সতা বন্ধু অবনী ভিতর ? কেহ না আপন তব আপন সহল, क आर्थन वन खर दिना अर्थ दन !

দারা, স্তুড় ডাই, ভগ্নী হউক না যে জন, বিনা অর্থে অপদার্থ ক্রেকরে যতন ? काश कुरव बहु वर्ल ? श्रेत वर नज्ञ, দেখিয়া তাছার ঈর্বানামান বিশায়। কৰ্তনা মনেতে ঈধা মুখে রেখো প্রীতি, সম্পুত্তি শাস্ত্রজ্ঞদের এইরপ নীতি। হয় যদি উচ্চ মন, হেন আচরণ, म्रागाल्यम विल यिन कत्र ग्राप्ता তবে যাহ বাদী জাজি মোহন মতন, তুমি উপযুক্ত নও র'তে এ ভুবন ৷ পাযুত্রী পাশকে নির বেক্টিত ভবন, তার মধো ভূমি যদি মুধিষ্ঠিও জন ! इत मना उव नित्म निवाकी जम, बाशम- हथः का कत यञ्जा विषय। প্রাণের প্রতিমা প্রিয়া হক্ক না শমতে: প্রাণের পুতলি পুত্র যাগ না জীবনে: হচকুর মাথা খেয়ে থাকনা কমিয়া, দারে দারে ভিক্ষা তরে যাওনা খুঁড়িয়।; उथाशिक मृष्ट ভক্তি রাখিবে ঈশ্বরে, ন্তুৰা নান্তিক তুমি এ ভব ভিতরে। হেখায় মোছন বসি দিয়া গণ্ডে কর, রাছ অভ্যত্তে যেন ক্রুর নিশাক্র। ুচিন্তা-রাছ মুখটাদে কলিয়াছে আসে, সদা হাস্য যার আস্মে তার নাহি হাস। ভাবিতে ভাবিতে দিবা ক্রমে অবসান, मिनम्ब मीन जारव क्रिन अधान।

गामनी-कामिनी शांत कालिका अनेब, व्याद्रिक्छं अंक्रुवत्न, श्रंशी कीवशन। तमगी-कामत्र-जिद्ध (इति काख-मंगी, डिमिनिया डिटिन त्य, प्रधी उ क्रमेगी। महा। मनाशंख दिति हिन्ति। मार्स, করিতে প্রেম্নসিম্বানে বিদায় প্রহণ। त्याहिनी मार्थात (इति कहिरह उथन, করপদ্ধে করপদ্ম করিয়া আছণ;--" এम এम প্রাণনাথ। এ আর কেমন, " मनिन रंगन उद आंखि कि स्वादि ! " नमा बात शांनि मूर्रे, "रम मूथम छरतू " वमिक करबर्द्ध किन वियोग-गंबरन। " (एथा इर्ल जाना किन विशे ने जावर्ग " पुषिएक मामीत मन, आखि कि कातरन " মেন হয়ে আছ নাথ ? শীত্র মোরে বল, " क्रांनिट्ड रेब्रांत र्ड्ड हिंख महक्ष्म। "ছিছি ওকি প্রেমময় অঞ্চ বিদর্জন, " করিতে লাগিলে কেন ? প্রাণ যে কেমন " করে মম ছেরি তব শোক-ত্তাশন। " সে মন্ত্রীর মূর্ত্তি এবে এ ভাব ধারণ "করিল কেন, হে নাথ, শীত্র সে কারণ "কহি ভূষি কর মোর সম্পেদ ভঞ্জন। " (मथ, नाथ, ध्यवल वार्षिका छत्र गांधी "ছির ভিন মদি হয়, আজিত দতা কি " কভু রছে পুর্বভাবে ! দে ছচাক কান্তি " হয় না মলিন তার ? দেবি জ্বো তান্তি

" बज्जी अभित वरन: स्व मिर्च मना " इहेल जामात जाश इंग्रे विवर्ण। " বাক্তু তি নাহি ছয়; প্রাণ যে কেমন " कविशा छेठिएइ मच ; तूबि अ क्षीवंन, " ক্ৰিরিল এইবারে; নতুবা আমারে " তৰ মনোহঃখ কছি রাধ জীবাস্বারে। "আমারে ছেরি বিষয় কতই কাতর " হইত বল হে সংখ তোমার অন্তর। " আজি এত হঃখ প্রকাশিছি তব স্থানে, " তথাপি কেন ছে বল নাছি শুন কাণে।" কিছুক্ণ ছজনায় এ উহার পানে রছিলেক জানিমিযে; উত্তর প্রদানে অশক্ত মোহন; অনুৰ্গল অঞ্জল বৰিতে লাগিল তার ছাদমে কেবল: জ্ঞান হলো মনে, ছঃধ ত্তাশনে বাকা ক্রবীভুত ছয়ে করিল নয়নে। ধরিয়া মোহন শেষে হাল ধীরতার, উদ্বেশ- জুফানে তত্ত্ব-তরীর উদ্ধার করিয়া চকিত মনে কহিতে লাগিল;--" मम स्थानी. श्रित्त, त्राहर आंजिन। '' যে ব্লাক্ত ক্রথ-রতনে স্থারিক আমার, " সে রাভু কিঁ ভরকর কহিব কি তার। ্রবি, টাদে, যে রাছতে ৰুরে, ধনি, আুপুস, · সে রাছ এ রাছ কাছে পারলো ত**রী**ঘটি ' চিন্তারাত নাম এর অতীব ভয়ান,

" भानत्वत ऋश्लेणी आशिवादत कालः।

" धारवण करत अ ताक स मनिय-कात " অহি শেষ করি ভার রক্ত চ্যি থায়। " जमा होत काछि शूके नित्रथि नत्र तै, "क्षम अकूस इत्र जिमि सूथ मत्न; " কলা যদি ছদে তার প্রবেশে চিন্তার, " কোথা সেই কান্তি রছে বলনা আমায়। " अति थिएत वामना करति आमि मरन, "काहीव जीवन मम विकास जमत। " त्रवन। अ खतकत नश्मात-मासारित, "পর্যাটিব বন উপকন ও কব্ডিকে। " अक्रुं ि-त्रमणी (अरम क्ति मन नीन, "কাটাৰ সময় মম বাঁচিব যদিন। " প্রকৃতির প্রেমমুধা যে করেনি পান, " রথা তার তত্ন, প্রিয়ে, রথা তার প্রাণ 🔭 (माइर्मन कथा छनि कहिल माहिनी, धित्रा कारखद गमा विस भागनिनी। "কি বলিলে, জীবিতেশ, আর যোলো নাই, " विराम या चेरव के म्हा जा चे मम ठाके " চাছিছ विमान्न, वन कान श्राटन " कंट्रिन मारून वाका मम महिशादन। " এ জीवन धरे कर्ण शाबि जानिवाद्य, " তবু ছে বিদায় আমি দিব নী তোমারে। " विरमण जमत्य देम्हा यनि इत्त थात्क, " वन अटेंड अनेनिधि नरेशा जामारक। " তুমি যাবে দেশান্তর আমি রব যরে, '' ধরেছ এমন চিন্তা কেমনে অন্তরে।

"তোমার অন্তরু আর আমার অন্তর. " (थरमत्र भिक्टंस दौधा-आर्छ नित्रसद्र। '' নে প্রেমণ্ডালে, দখা, করে তুমি ছিন্ন, " ছ-অন্তরে একৃষ্টির করিবে হে ভিন্ন গ " বিছ্লিশিখা যদি ইচ্ছে বায়ু ছাড়া থাকি, " विकल (म डेक्ट) नाथ छात्र दग्न ना कि ? " ভূমি ছাড়া থাকি যদি লতা ইচ্ছা করে, " বিফল সে ইচ্ছা তার জান হে অওরে। " প্রাণছাতা থাকি যদি ইচ্ছা করে দেহ, " (म रेष्ट्र) विकल जांत्र कि আছে मत्ल्र । " তোমা ছাড়া থাকি যদি ইচ্ছা করে মন, " (म इंक्ट्र) विकल इत्व अत्नत मजन। " विट्रांच छ ३, छ नंशांग, जगरनेत्र क्रिन "সৃহিতে অশক্ত হবে শুন স্বিশেষ।" কিছুক্ণ মৌন ভাবে রহিয়া মোহন, পরে মধুবাক্য তার করিল বর্ষণ। "যা কছিলে, বরামনি, সৰ সত্য মানি, '' একান্তর তুমি আমি ভাল আমি জানি : " কিন্তু, চন্দ্রাননি, আমি করিয়াছি মনে, " কল্যাব দেশান্তর নগর ভ্রমণে। " প্রকৃতি গঠিল মোরে করিয়া পুক্র, " সহিতে হৰিবে তেঁই যন্ত্ৰণা পৰুষ। " काश्रुक्य (यहे छन, विराम खमर्ग, "আশক্ষা তাহার হয় জেনো তুমি মনে। " সাহসী পুৰুষ যারা বিদেশ ভ্রমণ 'করিছে অকুতো ভয়ে ন। ডরে শমন।

" जैयां श क्रनविक्रनः (भाउ जीदमहर् " छेड़ीर्थ इंटर्ड मना वानिका काबरन । "উতাল তরজমালা হেরি জলবির, "কাঁপে ভরে ভীক্ষন হইয়া অছির। "সেই সে পর্বতাকার উর্বি পরোধির, " সাহসী আরোহী চলে ছদর স্থাছর। "সাহসী পুৰুষ যারা স্কুর্গম দেশে, "यहिष्ट् निःभक्तमत्न मुर्शाज-व्यात्मत्म। "বাহির করিছে নানা প্রদেশ স্তন, "বাহির করিছে নানা নদী প্রস্তবণ। " উঠিছে গিরি-শিখরে লয়ে তাপমান, " गानिष्ट डेकंड। शीम स्ता यज्ञनान। " ভয় যে কছে কাছারে জানে না তাহারা, "কথন হয় না তারা ভয়ে জানহার।।° "সাহস অমূল্য ধন সংসার মাঝারে, 'নাহিক সাহস যার কাপুরুষ তারে "কছে সাহসিক জন জেনো তুমি মনে, "পুৰুষত্ত মানবের সা<mark>হস</mark> ভূবনে।" राइत्नद्ध कथा अनि साहिनी सम्बदी. কহিতে লাগিল কাতে সবিনয় করি। " প্রাণনাথ, দেখ থোর ছইল যামিনী, " घूमा केटह यज जन श्रूक्य के मिनी। "আমরা ছজনে হার্বু আছি হে জাগিয়া, " শরীর করিছ শীর্ণ ভাবিয়া ভাবিয়া। "या इराज इरव कमा आंकि निका यां छ, " সন্তাপ হারিণী-নিক্রা-ক্রোড়েন্ডে ক্ড়োও

" তোমার আঁকুল চিত্ত করি হে মিনতি, '' क्रमत इहे, उं मृत कर हि छ। मञी। '' **এ** ज. वीन (याहिनी (याहन-कर धति, শয়ন করিল , দৌছে পর্যায়-উপরি। মে ছিনী-নয়নে নিজা শীত্ৰ উপস্থিত. সে স্থাধ মোহনে নিজা করিল বঞ্চিত। विखाबाद यात (मर्ट करबरह धारनम, তার চন্দে কোথা হয় নিজার আবেশ! (माहिनी निक्ति) (मिथ छेठिन (माहिन, **এक मृत्ये भा**हिनीत वनन করিতে লাগিল, তবু নাফিটিল আল. কে করে চাঁলে ছেরিতে বিরাগ প্রকাশ ? माहिनी-वनन हाहि निक्कन नग्रत. ডোছন কহিছে কথা স্বপ্ত প্রিয়াসনে। " অয়ি প্রাণেশনি আজি বাঞ্চা পূর্ণ করি. " (इति उर हक्षानन ; अहे मि नर्ज्ती 'জাগিয়া বহিৰ স্থু নেহারিতে কান্তি "তব। ফত হেরি তোমা নাহি জয়ে আছি। "একেতো তোমার রপ জগত-খোহনী, "তবসম নিক্পমা কোনু সে ভামিনী ? " তাহে निजावत्म ज्ञान विश्वन डेज्जन, "সতাকি নাঁ এই কথা রসিক কেবল "কহিতে সক্ষম, প্রিয়ে, র্মান্তি যেই লোকে, " ऋद्ध ऋमती नाती (स्टब मीपाटनाटक। " দীপশিখা কেন স্থলে মিটির মিটির ? '' धनीः'ণ নাহিক তৈল। তাই হবে ছির।

"এই যে প্রদীপ-পূর্ণ তৈল রহিয়াছে, " কি' নিৰ্বোধ আমি রহিয়াছে কাছে "কারণ ইছার, তবে আমি মিছে কৈন ' ভ্রমে পড়ি অক্স রূপ ভাবি মনে হেন। "যথা ভামু গগনেতে হইলে উদিত্ত " প্রদীপ-শিখার জ্যোতি কবে সে বঞ্চিত, "मम প্রাণেশরীরপ দিনাণি জিনি. "প্রদীপ-শিখার জোতি যদিও মেহিনী, · "পাৰে পরাজয় কিবা আঙে দে সন্দেহ, "ছুখে তাই ধরিয়াছে সুমলিন দেহ "অরি ইত্রুথি আজি মিটাইয়া আশ. "হেরি তব চন্দ্রানন, তব সহবাস-"সুখে বহু দিন আমি রহিব বঞ্চি, "क्रमिश्राष्टे **उव क्रश** कतिव अक्रिः। " তোমার কারণ হ'লে আকুলিত মন, "করিয়া অংমার জাদ-পাট উদ্ঘাটন "মনশচচক্ষে নেহারিব ও চার্বদন, " श्राट्याथ मिलिएल (धी ठ कहित ८ मन : "यामिनी रूरेन देशक नाहि निका धरला, "वरंशांनभी होन करम करम जर्छ रगरन "श्रकृष्टिश्रमती भंगी निकात् दिस्तन, '' क्रांगिशा दिहिष्ट्रे सुदू खंडाभा करना "কতি<mark>ণে শয়ৰ কৈ</mark>ৱিবাৰে আহাধন: 'निकारमवी, व्यक्तिक व्यक्तिक कामरा 'यमि भूगें दर्ब धनी दक्षा क्रिया, " कृ**भागीत्म, कृभामुक्ति कर तो जामि**हा। " ं उत्तर विभ त्याहन कतिल भशन. महार्तिः इदेशां निका निर्मं नत्मन्। शति, निक्त, धत कृषि कि शक्ति स्माकिनी, সদয় হও যাহারে সম্ভাপহারিলী, ङ गेष-खानार्श जाते कि कदिए जैरेर्द १ কিঞ্চিত কৰুণা দৃষ্টি কর্মো আমারে। ত্র আশে নিশাকালে করিলে শয়ন. পলাও জাগি ছইতে বল কি কারণ ? জায়ি নিজে, তব দোৰ দিই বা কেখন গ ভোষার **স**তিনী চিতা যে কবে ভজন. তাহার নিকট তুমি কভুত আমে মা, লার সনে তব প্রেম কড় ও হর ম। ছেন খাচরণ তব নছে শ্রেষক্রা, ভাবির। দেখুন দেবি তোমার সম্বর। भागात्वर भञ्जाख ७% ७२!मनी ্য নহে নাডিডা করে সেত পশুমতী। তোমায় মে জন ভজে সাস্থা ভার গালে তোমায় যে জন ভাজে রক্ষা কব ভাকে হইতে সংসাধ কয়; খেই চিন্ত, ভঞে, त्मरे जन जारन युद्ध कि जारमारन भरज । ক্রীশ্বর মেক্সপিয়র ভজি চিন্তাসতী, भारते एक कि कारवाशियान, यान वस्रमञी বহিয়াছে পূৰ্ণ সদা, হিবে মত কাল, गमानत ज्योक्रांस लहार द्रमान काता। य नात्यामान क्षत्रमिकनिन, भोतरक क्रमः **करन** करत गारमानिकः

य काना-कूछ्य कछू रश्न नी मनिन, य कांचा-कूर्रभ-गक्ष बट्ट विविधिन, य काना-कृष्य-मधु ककु ना कुक्षारी, যার লোতে হথী অনি জান্ধুন্য ধার। হেন কাব্যোদ্যান, দেবি, চিন্তার সূজন, निভিত্ত এমন प्रदा मक कहाजन? श्रुप्त रे जन कम (य जनात मन, চিন্তার সহার করি এমে ত্রিভুবন। স্বৰ্গ, মৰ্জ্জ, পাতাল যাহার মনোপটে পশি রহে একবারে সেই জন বটে ক্রিপদ পেতে দক; আর চিন্তাসতী, গঠিরা অলক্ষ্য দ্রব্য হয়ে যতুবভী লক্ষ্য করি দেয় চক্ষে; যাহা শুক্রময়, কৰির লেখনীমুখে ৰস্তু জ্ঞান হয়। হেন যে কবির পদ হয় চিন্তাসতী, প্রদান করিতে পারে মানবের প্রতি। ভারত-গৌরৰ ক্বীশ্ব কালিদাস, यात यणः-प्रवि-एका। छि छ्यी-मनाकाम উজ্জ্বল করিছে চির: যার কাখোদ্যান, ऋशीजदन कि जानम कृदत त्य अमान, किंच कि मीन अर्मि। आत्म तमहे सन, त्म क्रीन्-कूक्स-मधु योत सुक्के मम করিয়াছে পান কভু। ছেন কালিদাস, কৰিপদ পাইৰারে কাহার আখাস পাইল ৰল গ্লে দেৰি? ডোমার সভিনী **ठिखाटमरी, निया निका भारत एवं (याहिनी,** 

যদি না কবির মন করিত উজ্জল, কোথা পাইতাম অভিজ্ঞান শক্ষল বল মোর।? অয়ি অভিজ্ঞান শকুন্তলে, কোন এব্য তব সম আছে ভূমগুলে ? ধর্থনামে হেন দ্রব্য যদি কিছু থাকে, মধীমন লুৱা হয় পাইতে যাহাকে: থাকে যদি কোন দ্রব্য অবনী ভিতরে, য'তে সুবিমল সুধ লভিতে জানুৱে क्यरभा सक्तम। विमयत । शर्मारत, সার কোন জব্য যদি পারে থাকিবারে, ত্র নাম, শক্তনে, করিবারে পারি। मम भट्ड मिट्र में या पिट्र विहासि। सन्तिभी काष्ट्रात, निध्य, यस भाकुखना, यात लाएक श्रभीमन अठरमा छेउला। বুঝি দেখ জয়ি নিজে, তব সতিনীয় দে সন্ততি; যার স্থাপূর্ণ হাদর গভীর ভাগুরেতে রম্বর্থনি চির বিরাঞ্জিত, যে রত্বরাশি লভিতে সকলে ব্যক্তি। দে রক্তরাশি হৃদয়ে যতই সঞ্চয় कब्र. मार्थक भनीत मार्थक इन्छ। অতএব, অগ্নি নিজে, চিস্তাদেবী সহ, হয় না উচিত তব বিবাদ কলছ। এার্থনা করি গো তাই মর্থে চিন্তাসভী ভাবিয়া ভাবিয়া হৃদি আকুনিত অতি कतिरव आश्रम, जरव इत्स मग्रावजी, কৰি ক্রোড়ে কোরো তুই ক্লিই চিন্তাৰতী।

# া হৈছে। দ্বিতীয় সর্গ ।

" Thou glorious mirror where the Almighty's arm Glasses itself in tempests." Brnos.

উযাসতী প্রাচী দিক করিয়া উজ্জল, তুষ্তে মানবে আবিভূতি ভূমওল। किक्र पिर्देश धनी कि द्वांक कांखि. নির্থি নয়নে নাহি জবো কতু আহি। किया (महे अशहरे। निक चाटना करत, वत्रभ অতি ऋमत জন-मरना इर्व, শুক্তারা মনোহরা ফুডণ ভূষণ, পরিদিয়ে ধনী তাহে রভিমা ব্যান, इंदि जार्ग भूक डार्ग जामि प्रश किल, উষার পশ্চাতে রবি আপনি রছিল। যথা যবে নরে করি নব পরিণয়, মনস্থে নব বহু আনিলে আলয়; নিজ পুরংঙ্গনা গণ করিতে বরণ, आर्थ कारण नवनध् शिटह कामी त'न , यशार्थहे (इंन जान इश कवि-मत्न, উষাসতী দিন্পতি সহিত মিলনে। জাগিল প্রকৃতিসতী-সহ দিবাচর, भीउन मनश्मिन बट्ट यात यात्र। " বিহল্ম প্রফুল, সন্তরে, কুজু নিল ছুটিল মধুপকুল মধুপান তরে।

গুন এন স্বামে পাশে প্রকৃষ্ণ কুম্বামে, '' भृदिल जुरन (यन स्फेल्मर धूरमा "রাতি **পালা, রাতি পালা**" কোকিল ডাকিল, मानतम् मव गानव छेठिम। निकृष ल्यार साइटन व मानम मन्दित, छेतिन तमनी अक स्भीर्भ मतीरत। আকুল কুত্তল তার লোহিত লোচন, স্থচঞ্চল ভাব তার বালিকা মতনা". মাস্ত তার হাস্থ্য তিল নাহি স্থ, भिद्रथित्व (दर्ध इस मान्हे जञ्जूश) देश्हामञी नाम छोत्र (६ भारत जन) रेक्ट्रानादी मनसूक रल (३ कथन। (माइन मानरम शिंग जाकृत इम्रोत्र, সম্ভাষিক ধনী তায় অতি স্বিশ্ৰে। " উंधर साइन इटला निर्मा अवमान. িকি আশ্তর্যা এ পর্যান্ত রহিলে শ্রান। 'বাইতে এমণে তুরা কর আংগ্রাজন, · নারিবে মাইতে পরে মোহিনী-মোহ-" উঠিলে রমণী তব: কর আকর্ম, ' এদো মম সঙ্গে শীত্র শীত্র দে কারণ।'' চমকি উঠি মোহন জাগিলা উঠিল, ধীরি ধীরি মোহিনীর বদন চ্রিল। এথয়োজন মত নিল গরিধেয় বাস. সহজ মুদ্রার নোট নিলা অপ্রকাশ। <sup>\*</sup> খানকত মনোমত গ্**ন্ত**ক স্থবিশ্বাপ্ত ভাল এক সং করি নিল।

जनक जननी भेष कतिशी व्यात्त. গুপ্ত ভাবে বাছিরিল হইতে ভবন। ष्ट्रंचक निक्र यिन ष्ट्रि कान भारत, আকর্ষণ করে যথা সত্তর ভাহাকে ৷ जनधिजन-निमध इत्रक शार्थन, আকর্ষিল স্থচীরূপ মেশ্ছন-অন্তর! जर्गत रहति ज् जाया माहानत मन, **इहेल** চঞ্চল তাই স্থচীর মতন। বনচর বিহলম আবদ্ধ পিঞ্জর, স্বাধীনতা পেলে যথা প্রকুল অন্তর, সংসার-পিঞ্জর হ'তে তেমনি মোছন. হইয়া শোচন তার বিকসিত মন। প্রতিঃকাল স্থনিম্প গগন মওল. মুত্র সমীরণ তাহে বছে পুশীতল। সেবি সে সমীর য়ুত্র মোহানের মন, डेरिन जानत्म नाहि, बानक रयमन পুত্তলি মৃতন পেলে। চক্ষে প্রেমনীর ঝরিল নেহারি রূপ প্রকৃতি সভীর। कान चारन कृतपरन साइन क्रशीत. বনস্থলী নিরীক্ষণ করে, করি স্থির ভাহার নয়ন গুগ; কিবা শোভাষয়, বনরাজি-বিরাজিত শোভার মালয়। মুচাৰু তৰুৱ কায় মৰ কিসলয়. नज्ञम, कीरन, अकरात्व काड़ि नज्ञ। আহা কি মোহন মুর্ত্তি জান্ধি প্রীতিকর, কি দ্রব্য ইহার তুল্য ভূবন ভিতর?

मलत माक्ड मर्था मर्था ब्रह्म तहा, সান্দ উথলি দেয় তক্র হাদর। মনসুখে তাই তারা সঞ্চালি পল্লব, (मथार**ा रमीन्मर्सा तुत्रि जॉकिर** मानन। यक्ष शामशकुम कतिम मर्गन. গ্রাহা না করিল কেছ বাতীত মোহন। তাই হাসি চলে তৰু তৰু-অলে পড়ি, কহিছে কেভিকে কথা বার বার করি। ' দেখ হে হুছদ, নর সৌভাগ্য-গোরবে, " চাতে না ফোদের পানে ব্যাপৃত বিভাবে। ' যে তুল্ছ বিষয় মধ্যে **সুথ অৱেষণ** ' করমে তাহারা তাহে বিষ দংমিজন। "বারাজনা-অজ বিভূষণে বিভূষিত, " করে নিরীকণ কত হ'রে পুলকিত: " থাকে চাহি অনিমিষে পড়ে না পলক, ' মুখমধু পীতে জিহ্বা করে দক দক; " তাদের অন্তর यদি করে নিরীকণ, " অবাকৃ ছইয়া থাকে না সরে বচন। "মোদের অন্তর আর তাদের অন্তর, " হয় সুধা হলাহলে যতেক অন্তর। ' কিন্তু ছে মোদের পার্নে চাছেমা তাছারা, 'দেখিয়া তাদের ভাব হই জ্ঞানছারা। " भारतक मधाना तरक यिष्टे स्वधीकन. " অই দেখ একদৃষ্টে চাহিরা মোহন। " याहेरक जिन्ना शर्थ हरत भूज-कान, " মোদে বিক কিরিয়া রহিচে বরান;

" ड रहा विवाह शात नादि कि बान, " এমৰি আমঁরা প্রিয় হ**ই 'ওঁর ছান**। " তাহারা পাষ্ড নর চকু খেকে অন্ধ, " মোদের সরিধি এলে পাই পাপ গন্ধ। " मारित मधामा जाता कि आमिर व र. " वाजाकना नाजी मटक शीख्य गतन। " ऋथी यनि अकजन करत সমामत, " जुम्ह कति यमि वाक करत लक्क नत्र।" भागरभ भागरभ कथा **छ**निएक मधुत, বুঝিবে ইহার মর্ম পণ্ডিত চতুর। পাদপে পাদপে কথা শুনি পক্ষিগণ. मिहे कथा कर्श्यक कतिल धारान। গায়ক যেমন শুনি বেহালা বাদন, কণ্ঠস্বরে গীত পরে করে দল্লীর্তন। 'আছা কি মধুর অর 'যেন স্থাকরে, मधिशंषी करत गान क्रुांत अखरत। काकिन काकनी गात्र भाभित्रा बहाद्य, না করে মোহিত ইহা বলহ কাছারে? শুনিতে শুনিতে গান চলিছে মোহন, ভাৰণে ইতেছে তাল ছখা বরিষণ। ক্রমে এক ফুল মাঠে আসি উপস্থিত, তকণ অকণ উঠে মোহন মোহিত। আহা কি অপুর্ব রূপ কি চাক শোভন, लाहिज-वर्ग कांग्र महत्र-दक्षम। কৰিত কাঞ্চন সম তপনী উজ্ল, भीता भीता छेठिएउट इ'र्ट्ये नमूच्या।

त्रांशन क्षांभोन महत्र मार्ट छेशव्छि, " শ্যামল দ্রবার দলে গাভী স্থলোভিত। প্রকৃতি-মেছন-মুর্ত্তি দেখিতে দেখিতে, মোহন লজ্বিল মাঠ প্রকৃরিত চিতে। थँड हिन आमि कारम अक मरता वरत, নাচায়ে তুলিল তাহা মোহন অন্তরে। स्रमीर्थ मत्रभी (मह नीत नित्रमन, आभक्ष् हे इहेटल्ड् सूठाक कमन। কেমনে ভাছার শোভা করিব বর্ণন, ভেবে দেখ স্থাবির কেমন সে ধন। আধক্ট শত শত পদা মনোহর নয়ন মেলিল শত যেন সরে বর দেথিবারে প্রকৃতির চাক স্থগোডন, নিক্রায় মধন ছিল যেই এতকণ। সরঃ চকু খেত-ষেরা মানিত কমল, চক্ষুতারা কোথা যাহা দৌন্দর্যোর ছল। जलिएस शिच्चित्रीत छेशदत विमिशाः চক্ষমণি আছে মরি যেন রে শোভিয়া। चष्ट्रगटत थाजःसान करत नात्रीगण. নির্থি তাদের রূপ মোহিত মোহন। বুৰো না পাঠকজুন মেছিন-নয়ন लम्माठे लाग्टिन जाट्य कतिन मर्भन। (य চক্ষে कमन-मोडा केरिन मर्थन. ्रिहे हरक वांशांकूरल मिश्रिल स्थाइन। ু একবার ু ছার্ডু বি পালে ছেরে ধীর, 'জান বার নারী মুখ হেরে জাঁখি স্থির।

দর্শনের ভঙ্গি হেরি মনে জ্ঞান হয়, বছকণ জাঁথি ধেন পদ্মোপরে রয়। হতে পারে এতে মনে মেছনের মন সমধিক মৃদ্ধ ছেরি নলিনী বদন। বিষয় না মান মনে ইছাতে পাঠক, ইহার কারণ অংছে মন সম্ভোষক। गरतां जिनी कृत अरे नाथ नमागरम. थ मिन्या प्रत किल इत्य क्राय क्राय। जिशास या इति यात जिल्लाहम, ধরিয়া মেক্সন মৃত্তি রবে কি কমল ? इम्भी अनग्रकाख निवा आगमत्म, क्लिया गियाट नाती वित्रकृत महत्। তাই মনোড়ঃধে বুধ এত ম্রমীণ, তাই অন্ত-সুদৌন্দর্যা করেছে প্রস্থান। आगवधु शीरत मधु गाइ कामिनीत, मनिन मांधुर्मा जारे विश्वक मंत्रीत। वागाकूटन जर्भतादः स्थीत त्याहन, গাত্র-ধেতিকালে যদি করিত দর্শন; স্থকেশ - বিক্তাস করি পরি আভরণ, যথন তাহার। থাকে জীবনে মগন। যামিনী আগতাপার, পরির মিলন आनात्र তारमत् यत्व धाकूत वमन; তथन यमाणि किल जोतमंत्र आनम, " कमिनी जामा शीव कविछ मूर्गन। দক্ষ হতে৷ তবে কৰি কৰিতে কৰি, मका (मग्र महताजिनी दमशी वंमनै।

या इडिक शीठेकजन इहे ममत्रभ, " যদিও জান হে' নারী প্রভাতে বিরূপ। অপরাত্তে ৰাৱীমুখ সহিত তুলনায় হাস্যাস্পদ জানহ কেবল। নানা জলচর পক্ষী স্থাথে কেলি করে. निविधि नक्षरम क्षेत्र क्षमगरना इरवा চারি ধারে পাড় উচ্চ, তাছার উপরে চাৰু তৰু-রাজ-রাজি কিবা শোভা করে। তারি প্রতিবিদ্ধ পড়ি বারির ভিতরে, রমণী তাড়নে নীর কম্পিত উপরে, সহসা নির্ধি মনে হেন জ্ঞান হয়, किनि विनि कतिराउद जुज ह निष्ठा। হেরিল সরসী-শোভা মোহন স্থীর, দাঁড়াইয়া কিছুক্ষণ আঁথি করি ছির। প্রকৃতির প্রাতঃ শোডা দেখিতে দেখিতে চলিল মোহন পরে প্রকুলিত চিতে। স্থবিস্তৃত মাটে এক ক্রমে উপস্থিত, করিতেছে ধুধু মাঠ দৌব্দর্য বর্জ্জিত। নাহিক সে ধান্ত-শোভা ইছা গ্রীমকাল. बनिन पिटिए ज्ञि दिवि-दिणि-कान। ক্রমেতে বাড়িছে বেলা, উত্তপ্ত তপন, অত্যুক্ত মহুৰ রাশি করিছে বর্ষণ। ৰ্ণকছু পূৰ্বে যেই ভূমি ছিলা ক্থাময়, गत्रम वर्षिष्ठ उथि श्रित मिनम्र। ्महे अम जिमाधकान निवाकत-कत्र, শর সম ভেদিলেক মোছন - অন্তর।

মোহনের তত্ন থানি বেন বিবনীত, আরভুল হাতে এব হইতে অপিত তাহাতে তপন তাপ। স্বেদ ছলে ডাই प्रवीकृष्ठ उपननी बारत मर्बाणाहै। উত্ত भारत मन नाहि महत वानी, ক্লান্ত কলেবর অতি বিশুক মুখানি। মুত্রবরে রামধনে কছিল মোছন, " আর তো চলিতে নারি চলে ন। ৮রণ। " হইতে এ মাঠ পাব যাবে কতক্ৰণ, "তক্তৰ পাবে। শীষ্ত্ৰ না দেখি সক্ষণ। " "আহ্ব বাহুগো আর বছদূর নাই, " তৰপুঞ্জ অই' ৰাবু দেখিবারে পাই।" - সম্ভাবিদ মূহ্ভাবে প্রভুৱে দে ভূতা, শুনি মোহনের মন করি উঠে নৃত্য। যত যার তত ধার সে রক্ষ অন্তরে, লাগিল বিষম ধাঁধা মোছন অন্তরে। यथा मकरमटन शासु रहति मज्रणान, লভিবার আশে ধায় আকুল পরাণ, যত যায় নাহি পায় মৰু উপবন, ক্লান্তকলেবর করে আ্কুলিভ মন। जनत्भारत (मार्ट उक महिशि जामिन, **ভূতা, भारत्व भव जानत्म छीतिन।** उक्डरन जानि र्कंटम क्यांक स्थीन, বসিল আফুলমন পরীর অস্থির। भगामाना हिना **धक उक्टा ी भार**म, তথি রামধন গোলা তালয়ন্ত আপো

আনি পাখা নিজ প্রভু করিল ব্যজন, (मरह जात (महं अरमा की बर्रन की वन। পথ প্ৰাটন ক্লেশ কভুত মোহন, না জানিত তার মনে হংলছ এমন। রামধন মোহনেরে সাত্রনর করি, কহিল মুহ্বচনে সভাব বিশারি। "দেখুন বাৰুগো এবে পথক্লেশ কত, '' যাইতে বিদেশে তাই হ'ন গো বিরত। " এक मिर्न उर मूथ घरना आध थानि, ' হৃদর বিদীপ হর নেহারি মুখানি"। "কি কহিলে রামধন" কছিল কুমার, "কর দূর হেন চিন্তা ছতে দৈহাগাব। " অন্তরে ভেবেছি যাহা ভাহার অন্তর, " জीवन यमिन द्राव मिट्ट छिउत, "কভুত আমি না করি জেনো তুমি মনে, "কার সাধ্য কিরাইতে বল হে মোছনে। " यथा नमी वाश्तितम श्ट धताधत, "গতি ফিরাইতে তার দক্ষ কোন নর ? " পশ্চিমে यनिও इन्न द्रवित्र উদয়, " পশুজাতি নর সমযদি কথা কয়; " প্রসারিয়া কর যক্ষি ধরা যায় টাদ, " जनभित जारन यनि भारत रहै उर्गानः " छ्थीत यहन हेंबू मी इस ख्रानम, " নিশ্চয় জানছ ভূমি, ওছে রামধন। " এত পথ পর্যাটন কন্তু নাহি করি, " তেকারণ ক্লান্ত দেহ আজি এত ধরি।

ं करम करम शतिखरम शाहर जन्डा ग्र - " এ বিষয়ে দৃঢ় মোর আছমে বিশাস। " यक कता यात्र कट्नबटतत हड्नमी, " দেহ কি ততই দৃঢ় বল হে হয় না ? " বামেতারে দেখ ভুমি কত বলাধান, " বাম করে সামর্পের কোথা বল স্থান। "ইহার কারণ ডান করের চালনা, " বাম হতে সমধিক নিশ্চয় জান না।" यश्रम विमन जामि स्थीत माइन, উহ। অতি রমা স্থান সহদয় জন। অশ্ব পাদপ আর বট-রক্ষয়, নির্থি যাহার শোভা জুড়ার হুদর। অশ্বত্য পাদপ আর বট-রক্ষ তল, প্রদানিছে পাষ্ জনে ছায়া স্থাতন। নোদাঘ-তপন-কর ধরি শিরোপরি, তক্রেণী, পাত্ত হংশ হরিতেছে মরি। **চাৰুপর্ণ - স্মাকীর্প পাদপ-শরীর,** বর্ষিতে রশ্মি তথি কি সাধ্য রবির। কিবা রমণীয় স্থল তৰু-পুঞ্-তল। धीषकात, यात त्रवि माह ज़म्छन। তরপরে নানা পক্ষী বদি শুক্ক রছে, প্রচণ্ড উত্তপ্ত বায়ু মধ্যে মধ্যে ৰছে। পাদপ পত্তের কিন্তু আছে ছেন গুণ, স্পর্ণান্তে শীতন করে কিরণ আগুন। অশ্বত্য পাদপ-পত্ত প্ৰধেষী কম্প্ৰিড: রবিরশ্যি চকু চকে তাছে নিপতিত;

नितीकत्। यात लाज बुज़ाय कनमः; ক্তিছে খতোৎ যেন মনে জান হয়। कि द्रथं छेमन्न इत्मा माइत्मन मत्न, ব্দিরা এছলে ভাছা বর্ণিব কেমনে। (यः जन श्रीषकातन मधाक भगः), স্প্ৰিত্ত মাঠ হাঁটি উত্তপ্ত হৃদয়, পরে হেন রমণীয় স্থানে উপস্থিত, জানে হুণু সেই জন মন আনন্দিত কতই যে হয় ভার বসি হেন স্থলে, সে সুথের সমস্ত্রণ নাহি ভূমওলে। দেই জন মোছনের বুরিবে অন্তর, (कगरन रम खर खरत दल धनी नह। পণাশালা সন্নিকটে ছিলা সংখ্যক, অবগাহি দেহ দোঁহে প্রকল্ল অন্তর। জলপান করিয়া রন্ধন সাংগ্রেজন, করি দিল মোছনেরে জরা রামধন। এ পর্যান্ত পাচকের কর্মে মোহন, অনভিজ্ঞ সম্পূর্ণ আছিল, সে কারণ হলো স্বচঞ্চল অতি কুমারের মন। नक्ष रतना एक्त कद्र; जुलत्म जीवन নিক্ষেপ করিল কভু, কভু বা দহন মিটির মিটির জ্বলে; কোমল-লোচন আঁগুনে ফুণকার দিতে লেছেত বর্ণ। রশ্বন হইলে শেষ বহু কটি পতের, ভোজনে বিসিল দোঁহে প্রফুল অন্তরে।

ভোজনাত্তে অভ্রাগ প্রকাশি গোহৰ, गड़ाचि करिन फृट्डा रुक्ति दनन। " (मश्र क्रोमश्रम मम' क्रीवन श्रातः भः '' रूपृष्ठः बीरन अठ रहनिः (क्षांकरन । '' ভক্ষণ যে করে নিজা নিজের রন্ধন, " নিত্য নিতা তারি তৃঞ্জি হয়ত এমন। "নিজ বিনিৰ্মিত ক্লবা কিখা জ্ঞান হয়, "হইলেও মনদ তাহা মধুরতা মর<sup>়</sup>" উৎস্থক কুমার চিত্ত লক্তিতে বিশ্রাম, পরিজ্ঞম পরে নিজ্ঞা কভু নহে বাম। অলস শরীর ভারাক্রান্ত হুনয়ন, ত্থাপিল আসিয়া নিক্রা আপন আসন भारत नहात, मीखि-पूर्व व मश्माद , শোহবের পক্ষে দব হইল জাধার। मिर मिन मिरे श्रुल हिन इक्जान, পর দিন আতঃকালে চলিলা ভ্রমণে। যাইতে যাইতে পথে এক ভৰুতনে, হেরিল রাখাল এক কসি কুভূহলে। বিচরণ কিছু দুরে করে ফাঙীদল, वरमभन कार्छ कूमि मिथ मिरह बन राता साक्रामंत्र इन ; जाननिक मान, বিদল রাধাল সহ খ্যামল আমনে। मधूर्य महिए अक निर्मन कीवन. कल कल ब्राउ मीह स्वा अवस्य ; বহিছে ন্মীর মুদ্র দলিল উপরে, छेक्टिए हिट्डानकून कन कन चरतः

ভালিছে ভরলমাল। নদীতটে আদি, বরায়ছে অবণেতে ফেন স্থারাশি। **ठल-क्रम-ंटल विश भाइन स्थी**त, খুত্ত-মনা হয়ে হেরে শোভা প্রকৃতির। माना क्र**प** हिन्ना कडू डेठिट इन्ट्स. প্রেমনীর ক**ড় বা**রে তার চক্ষুদ্বরে। নদীর প্রবাহে আর চিন্তার প্রবাহে, মোছনের মন মরি যেন অবগাছে। নদীর প্রবাহ আর প্রবাহ চিন্তার, তুলনায় সম দৌহে সঞ্চে কি ভার। নদী উঠে গিরি হ'তে চিন্তা হ'তে মন. নদীবোত চিন্তাবোত একই গঠন। नमीत्याज-जरहे कत्य नाना जकत्र, **ठिस्तां छ-जीतः** कान-भागभ एकतः। नमीत्यां निकारेष्ठ उक करन न न, আৰাদন ভার বল স্মিটই কত; চিত্তাভোত নিকটমু জান-তৰ-ফল, आयापत्न स्थामम खीवन मीलन। নদীজোত নিকটম্ব প্রস্থন পাদপে. মজাইরা দেয় মন প্রাকৃতির জপে। ष्ठिशास्त्राठ उठेवर्जी कार्या-कून-वन, भाहित ना करत वन कान् अन्य भन ? নদীলোতে উঠে ইশ্বি জীতি ভারহর, চিন্তান্তোতে ক্রোধ রিপু **বছে ধর**তর। नमीत्यात्म विश्वक्र क्षीत, श्राहत, আদি করি রছে কত জন্ত ভয়হর।

ঁঠিন্তাভোতে দেয়, ঈর্যা, কাম কয়ে বায়ঃ যাহার আচার দেখি মনে লাগে তার। नमीत्यां शर् (भर क्षित करनः চিন্তাতোত পড়ে শেষে ঈশ পদতলে। হের হে পাঠক জন মোহন মান্দ্রে, চিন্তার প্রবাহ বহে তক্তলে বদে। প্রকৃতির চাক শোডা করি বিলোকন, करह कथा भन मत्न स्थीद त्याहन। " 9হে উচ্চপদায়ত মানৰ মণ্ডল. ত্ৰ উচ্চাসন বল শুনা কি গাৱল গ আসীন হইয়া তব স্বউচ্চ আসনে, যায় কি জীবন তব শক্ষাশূভ মনে ? নাহি কি বৈরি তোমার ৪ ছদয় নির্ভয় ৪ তব যে অংগীন জন সকলে কি কয় তৰ গুণ অকপটে? তব সন্নিধানে, ध्मश्रक यथा धात्र वात्र वर्षा भारत : অসমুধে যথা দীন জ্বোত বিপরীতে, হেন তব অন্তচর জেনো তুমি চিতে। **धरे** य दोशल श्रिक्षित हिन वाम. এই যে রাখাল যার ত্রুতলে বাস, এই যে রাখাল যার রুভি গোচারণ. अरे य दार्थान याद बना जाहदगः **এই যে রাখাল धति वश्म-यक्टि करत्र, धरे (य दार्थान**े **फुट्क क्**तिय अस्ट्रिक निक हाना यथा धनी विद्वति माधना इके नमधिक मिरे छात् कवि मन।

भिर्म मुन्नि विम अर्थ मिर्मामत्न, পরিধিয়ে পটবাস বালসে. লোচনে। (मह<sup>र</sup>ाम नुमनि विमि खूत्रमा इत्राम, यात्र माम माम मामी कछ जरम। एनहे रम नुमिंग करत ाजन ध धति. কি মাধুরী তারিবল আছ। মরি মরি। वन मिथि मशीभान किछानि তোমারে, দমধিক সুখী কেবা কছ ছে আমাবে। 'রাণালের সংখ সহ তুলনা কগনি श्रा मा आयात ख्या कहित्व जमनि कि मास्मर कर कर कर एर नुमन। দুর হ'তে রাজাপদ দেখিতে সুন্দর, লভিতে বাসনা করে মানব অন্তর। দ্য হ'তে নৃপ্পদ বারবালী অজ माधुरी मिश्रति छात्र सद्द है एक मध्य कठाम म कक मस्या त्रांग निवमित्, ভূঞিয়া তাহার সঙ্গ ইচ্ছা বলবতী হর গোতৃত্ত যবে, হয়ে রোগাকান্ত, লাভ মন বুৰো ত্ৰে ৰখন প্ৰাণাভ। তেম্ন ভূপতি পদ ভাবিশ্মনে মনে, एव इटल गें**श्नीत कर्ये आटबाइटल।** উঠি উচ্চ সিংহাসন হুণু কষ্টময়, আছে কে এমুন নর প্রতিকূলে কয়।" কিছু কণ খোহন করিয়া আলাপন, (भर्वे त्रांशात्मत्र मह इत्नां इस्टे मन।

निश्च किছू वर्ष जात्त्र, हिनम् एवर्त्त, वांथान शांशान नत्त्रं थाक् स्वीकृत्ता। এইরপে প্রকৃতির শেষ্ডা প্রীতিকর, ছেরি দিন দিন ছুল মোহন - অন্তর। নিত্য নৰ নৰ শোড়া করি বিলোকন, रुरेल माइन-मन आमारिक मर्गन। কবি মন হয় যার, পথ পর্যাটনে কি আনুষ্প হয় তাহা বলিব কেমনে। धक शरक त्याहन ममुख महिशातन, হলো উপস্থিত আমি: উৎস্থক বয়ানে करत नित्रीकन उथि य मिरक कनिंद, ना दक्ति भाक्रानद ऋरथेत अविधि। काम काम ममूज थूनिया छेननी छ, নির্থিয়া র্ডাকর মোহন বঞ্চিত হইদ আপন জ্ঞান; চিত্র পুত্রির नम करेन स्थीतः, शनक आंधितः ना निष्न ; शिन किছू कर्ग धहेक्र त्रि, উথলিল অবশেষে তারি ভার-কুপে। " কি অভুত ক্রব্য আজি হেরিল নয়ন, " इत्ना ७७ नित्व यम मार्थक कीवन। " ওয়ি মা একড়িনতী ভাণার তোমার, " পूर्व कि अभूना धरम वर्त्व माधा काद ? " यथन ह्यू अया इन तिराति डाणात, "কি আনন্দ বিভয়ণ করে যে আমারে " কহিৰ কেমনে আমি ; মাধুৰ্যা তাদ্ধারি " लग्न इति मम मश्का; खेळ्युना यादानि

" अनाम (माहम मम; इहे म्लब्स्टीन, "প্রকাশিবে সে আমন্দ কৈমনে এ দীন। "বিশংল তব ভাণার নানা রত্ময়, "কে আছে এমন নর তারি সমুদর " নির্থিবে তারি চকে । মানব জীবন " क्षरश्मी चनकात मामिनी रामन : " ফিছা যথা বারিবিছ বারি নিপতনে "मह्तारत यत यह घन ७ जुनान। ংহেন যে নর জীবন বলগো কেমনে ' ङहेरन मक्कम निभूत उ। धात्र नितीकरन ' **ভব !** श्री **देश्याम**ङी कहि (ग) ভোমাৰে " কেন কুছুহল-শিখা ভালিয়া আমারে "দেহ এত মনোকষ্ঠ ? এ মম মনন ্রকবারে ছেরি চক্ষে ভাগের চিক্রণ " প্রকৃতি সতীর, কিন্তু রুখা সে কামনা, " कमरत अधूरे मंद्र विवय यञ्जन।। " अर्वाम जाहरत अक: स्थीत वर्गन " করি পাঠ এ ভবের মান্স - নয়ন "হয় গো দক্ষ নিরীক্ষণে একবারে, " যথা যথা ধর মাভা স্বম আকারেশ " हि जनिशृ जूमि मम जाह य मशु (थ ' आहित को मश्का मम : हिस्टिह्स् स्ट्रिश " কতই নবীন চিন্তা; নয় তেঁা নয়ন " निर्देश उपका स्वयु जानि यत्न मन। ''কি আছে সন্দেহ তায় ? বিক্ষারিত জাঁধি " আছিল সামার, মন, ছিত্ন তার রাখি

" यंज्रात जनशि शास्त्र ; किन्छ की दिक्कि "সমীপছ বিহত দাগুর, বা দভিত্ " जानम नद्रान यत जाहिए हिस्ता, " कि भक्ति नज्ञन (स्टब्र ऋडेमान मरन। 'নিরনিধি ভোমা হেরি আনন্দ অপার " किंदा (य इहेन सम; अस्त आमात "কি রসে হইল পূর্ণ কছিব কেমনে ? " প্রকাশ কি করা যায় সে রস কথনে ? "কিবা স্থচিকণ তত্ মুর্ভি কি গন্তীর '' উদক অতদম্পর্শ কত যে গভীব " সক্ষম সে কোনু নর করিবারে ছিং ? " তোমা সন্দর্শনে যায জড়িমা হাদির। " জীবন-প্রস্থন যার অফ্টুট কুট্মল, "বহি ফার্জি-বায়ু তহপরি স্বচঞ্চল-" সে হৃদি কোরকে করে প্রফুল তথনি "দ্লানমুখ কিতে হয় দৰ্শনে অমনি: " একটী তোমার নাম হয় রভাকর, "হে জ্লাধি: কত রত্ন তোমার অন্তর ''নিরন্তর আছে ধরি কছিব কেমনে; " इन्ध्र विनदः किन्ठ काँनि मत्न मत्न "হয় গো শ্বন বৰে তৰ দহারতি, " হরিতে মানবধন চঞ্চল প্রকৃতি। "কত ধনীধন হাঁর তব কোষাগার, "পুর্নিত অমূল্য ধনে বর্ণে লাখ্য কার ? "হর হে অমূল্য ধন হুঃধ ন্তুছি করি; " ভান্ধ হে অৰ্বপোত তৰ ছদি'পৰি;

"ভিক্ষা হে একটা মম আছে তব স্থানে," ''नः रहत्रं अकृष्ठी धन सुन एटर कार्यः। " দে খন অতি অ**খ্ল তোহার** আকর " আছে <mark>হে জানহ নর দেহের ভিতর।</mark> '' গুদ ধন জীবনধন যতদের অভি, " না হরো সে ধন তুমি করি হে মিনতি। "কত চিরছখিনীর অঞ্চলর ধন "হরণ করিয়ানিজ উদর পুরণ 🕶 "করিয়াছ বল শুনি, হৃদয় বিদ্রে '' এবংণ ক্রম্মন যার স্থু তাভাচ করে। ''দরিকে জ্বালায় খুলি ম্ঞালের ধন, ''জাননী বিদায় দেয় তনয় আপিন: ' ছেন পুত্রবারে তুমি বল ছে কেমনে, " নাশিতে বাসনাকর বল ভুমি মনে ? "কত কামিনীর তুমি হৃদয়-বল্লভে 'করেছ ইরণ বল; কভু না দল্পবে " (হন আচরণ তব। েপ্রম-তক্বর '' বহু যতনের ধন জেনে। ছে সাগার। ''কত শক্ত ধরে তায়না ছতে অঙ্কুর, "অঙ্কুরিত যদি হয় সদা শঙ্কাভুর "পাছে মরে শক্ষাতাপে; অকুর পালনে, ' ফদিঘট কয়িপুর্ণ যতন-জীবনে ৷' সদত সিঞ্চিত্ত হয়, "সর্লতা সাহ " প্রদান করিতে হয় গরিমা কি তার। " করিলে এও যতন হয় পলবিত, " क्रुंगा, नेमा, कीठे जाम धरत आठिविछ।

ें भारती के नामित्र अहा सन उर्व सम, " ধ্রীরতা ক্বার নীর ভার অহকেন, " निकटनत अंद्राजिन ; यनि जीत्म आति, "প্রেমতক র্দ্ধি পায় নর স্মিধানে। " हिन ध्यम-जकवरत्र वर्न हि जनिध "কেমনে বিষয় কর তুষি নিরবধি। '' করিছ ন। ভাল কাজ তুমি হে সাগর, " ভাবিয়া দেখুক ওছে তোমার অন্তর। " षञ्चिम विद्वशिक विद्वा कमान, " शरहाधि इहए धक कतिहरू मुख्या। " गठन मन्भून इतन जडीव विश्वन, " তাজিয়া পূলাতে ছবে তোমার সম্পদ্য " তব তটে কত রাজ্য হলো বিনির্মিত, " করিলে ছে কত রাজ্য তুমি কুক্ষিকত। "নগর নগরী কত নির্মিত কোশলে " ধনিত হইত আহা নর কোলাছলে , " কোপা তারা বল বল কোগা মে দকল, " जृथ कि कदिह उव क्रिके अभन ! " তুমি ছে যেমন ছিলে আছছ তেমনি, " অমন্ত মতুন ভুমি আহ এ অৰনী। "হে মানব তব শিল্প রখা সিল্পু কাছে, " গঠনাকত গঠিবে এক উৰ্বি আছে। " হে মানৰ রূপা তব গ্রহ অকলার, " সহিতে পার কি এক সিদ্ধুর ক্লংকার ? " হর্মদের কাছে তব খাট্টে ভাল জোর, 🧦 ' বলিষ্ঠের কাছে তুমি इঞ যেন ছোর।''

"अधिक इंडेन (तमा वांतू मूझानांग्न," मञ्जाधिन जामधन कदिशः विनश्र। "অধিক 'হইল বেলা দেখুন চাহিয়া, " রবিকর তীক্ষ্ণ দেয় দেহ ঝলসিয়া। " फ़क्क करून किছू अनगाहि (मह, " वहक्का जनभटन कि जाएह मटमह " হবে শারীরিক পীড়া; কহি আমি তাই, "রন্ধনের আয়োজন করি সই ঠাই।" এত যদি রামধন কছিল মোছনে, bमिक **डेठिश श्रङ्ग इ**ंडा मक्षामान कहिन मधूत छारुष, " ७८८ वागधन '' হইল যে এত বেলা অনুভব 'এতকণ " रहिन किहूरे मग, आहे रा अनिधि " করেছিল সংজ্ঞাপুত্ত মোরে এ অবধি। '' অতএব শীম্ব শীম্র কর আয়োজন ''রস্কনের করি স্নান আমি ততক্ষণ।" হইলে রক্ষন শেষ, সুধীর মোহন বসিলেক মনস্থাে করিতে ভােজন। ভোজনান্তে দোঁহে পণ্যশালা অভ্যন্তরে, করিল শরন অতি প্রফুল অন্তরে। मिता जनमान करमः, आङ्ग्क दद्गन **रहेल शीक्तम** जाग, नमनत्वन। रम्हे रम निर्माषकान **रगां**ध्नि मस्त्र, জানে স্থীজন স্থু কি ভাব উদয় इत जानि मनाकार्टन। तरह कि माहन এ হেন গ্রীয় নাহি করি সন্দর্শন

>

প্ৰবৃতি বিদ্ধিত্ব শোভা ডটে জন্ধিয়; शांकिएक शांदन कि मन स्मांबरनत सिंह है চির ছিলা আকাক্ষিত মন নিয়ল্পিতে कठित पर्भन यह भगन इक्ट्र রত্বাকরে দিবাকর স্থােছন नारम भाग भाग कर उक्त कि थार वर्ष कति ममाशन काथा निकट्ड बामिनी, স্থমোহন বেশে তার তুরিতে কামিনী। মন্তক উপর যবে ছিলা দিবাকর. কার সাধ্য সভ্ করে তব খর কর ? সে ভীষণ মৃত্তি এবে প্রশান্ত কেমন? না হয়ে প্রশান্ত আর কি কর তপন ? প্রের্স প্রসাদ হবি লভিবার তরে, খাটেনা জ্বন মুরতি বুবোছ অস্তরে। তাই হেন মৃত্ভাব বুঝি হে ধারণ ? তাই হে তপন তব বেশ সুমোছন। ছিছি দিনমণি তব উপযুক্ত নয়, ममल क्रां क्रम साहर कर्द जय, ছিছি হে দিনেশ তব **উপযুক্ত** নয়, তুষিতে নিজ রমণী মনে এত ভয়। কি নিৰ্ফোধ আমি মিছা দোৰ আৰোপণ, কেন করি ভোম: প্রতি বল হে তপন। त्य नृभाश्म नृभ छात्र कार्य कन-मन, हन-क्रम-मन यथा आखि नमीत्रग्। य मञ्जीवद्यात दर्शत आश्वास नहान, थकानर्भ करम धरत विषय कन्नामः

(य मञ्जात मञ्जाहां हि इति मांख खनः দিবানিশি রছে অতি সপত্তি মদ, হেন নৃপ, হেন মন্ত্ৰী, হেন দহা জন, निक दमवीत कार्ड (मयन । তুমিও **হে ড্রিয়াম্পতি** কেন বা না হবে প্ৰশান্ত অতীৰ ধীর ? যে ভাব সন্তবে কামিনী কোমল কায় হলে সমিহিত, সে ভাব ধারণ তব নছে অবিহিত। উঠিল মোছন, তুরা প্রকৃতি দর্শনে এক কুদ্র গিরি'পরি প্রকৃत লোচনে। হেরিয়া অপুর্বশোড: মোহনের মন, व्यक्ति व्यक्ति नीत्र इक्त प्रान। 'বাৰ্থক জীবন মম' কছিল কুমার, "হেরিল নয়ন আজি হেরিবার সাব। ' অদ্ভুত সৌন্দর্যা কিবা প্রকৃতি ধরিল, "হেরিয়া বিচিত্র শোভা মান্য টলিল। " কি আশ্চর্যা! রক্ত পদ্ম এক সিদ্ধ নীরে "বিকসিত ছেরি কাঁপিছে সমীরে ধীরে। "জলধি পশ্চিমে অই শোভা চমৎক।র। " আমর কি ভ্রান্তি ছেদে ধরিল আমার। " मक्ताकान मगागंज; रकः थात्र निनी ' अक्त भाष्ति काल ? इत्र कि कामिनी "মগন প্রমোদে কড়ু পতির বিরচে? "কিখা কোথা কমলিনী প্রকুলিত রছে 'লবণামু প্রেমীধিতে ? কমলিনী কার " অতীৰ কোমল, লবণাক্ত নীর তার

"यथा (जत्मा छेकंश्य शक्त शक्त शक्ति; "किश यथा"नवनीउ डेज्यन आकृत्म। " আরত মাহিক হেরি লৈ চাফ শোজন, " (मिंबिट ) पिथिए केटल इहेर्ड मर्गन। "तुविनाम नटक छेश शकूल निनी, ' विश्वित यास्य पूर्जि याशिक यिनिनी। ''গমন করিছে সুর্যা নিজ অন্তাচলে, "ধরিয়া অপুর্ব্ধ শোড়া মন কুড়ছলে। 'প্রকৃতি পরিল কিবা বেশ মনোহর, "নিরবি জুড়ায় সাঁথি জুড়ায় অন্তর। "গগন পশ্চিম প্রান্ত কিবা শোভাময়, "मृत्रामरण रक्ति जुरल मरन ज्ञान रहा। "বহিছে সমীর মৃত্র লাগিছে পাদপে, "নতশির করি শির তুলিয়া আত্রেণ "উঁকি বুঁকি মারিতেছে মনে জান হয়, "গেল কিনা রবি অন্ত হৃদয় সভয়। "সমস্ত দিবস স্থা করজালে তার, 'দদ্ধীভূত তৰু তথু করেছে সবার। **''अंद बार गमीदग वर्ष उद्घ**ीरह, ''অবংণ জুড়ার শ্রুতি সূড়ার অন্তরে। ''বার বার শব্দ করি মুছ্ল স্থীর, "তৰু কৰে জাদেশিছে যেন প্ৰকৃতির " जारमनेन, धतिरें साहन राज धता, "কহিতেছে ৰেন পুনঃ 'আইস আমরা "'श्रहेि युमरी भाउ। करि महीर्खन, "মান্তে গেছিত হবে করি আকর্ণ।

পিলেও বীপা ধনি তারা শুনে এক মনে " प्रमधूत वर्नि मिरे वीभात्र निकर्ण · करह अ**रहात कंठ; अ वीगा बहा**त "' अदर्ग रम गर्क धर्य इंटरिक जात'। "মহীকৃছ মাকতে মিশিয়া এক মনে, "তাই আরম্ভিল গীত গাইতে যতনে। " जा भन्नि कि भन्नमश अ मधुन स्वत, "কে গুণ বুঝিবে এর বিনা স্থীবর। ' মুহুল মলয়ানিল বছে অতুক্ণ, " পরশি শরীরে হুধ। করে বরিষণ। 'অ**জ সজে সে স**মীর করে হতজান, " शुक्ष कि शदम ५८५ **बूट**कन। भेदान। "সমতা ইন্দ্রিয় মোর প্রায় বিচেতন, " गमधा देखिता इत सूथ। १ तियग । ''সমুধে বিস্তৃত সিকু স্লিল নীলিমা ' मन्दर्भात (म स्वयमा नक्षि किन-भीम: " भनग्र-मागद (वर्ग हत्ना डेब्ह्निड, ' সমস্ত শরীরে হুধা হলে। সঞ্জিত। " सूथ-मंगी मनांकारम यदव ममूनि उ, " হৃদি-সিন্ধু কেন বা না হবে উচ্ছলিত। " डेथिन मित्रू-मिन ऋषां १ छ कितर्ग, " (वनान्द्रिक खरवा करत मगन की वरन। ," मम ऋष-भनी अर्व छैनिज छेड्यान, " উष्ट्रिक ठाइ इर्ला इनि-मिब्रु-क्रम। "(पर ज्ञले (वन) शति श्रेमार्थ हे कि ग्र, ''চকু, কর্ণ, নাসা, তুকু রসনা মদীয়

"आनम मनित्न छोडे इडेन आहेन. ''সম্থা শরীর মন তাই বিচেডন। " मारेहि विश्वकूत जानि निद्रुक्त, ' আপন আপন নীড়ে এবে প্রতিকূল ं तक्रमी आगिर**ह डाइं। क्**षिमनदन ''চলিছে আপন গুছে শরীর বিকল। "রাখাল গোপাল লয়ে চলে গোষ্ঠ ছতে, <sup>'হ</sup>ঘারবে গাভীগণ**ুছুটিছে** কেমতে। " আসিছে তিমির গর্মে হতে প্রাচীদিক, " मश्रादि कि पार्टिश के कार निकीक। "ক্রমে রূদ্ধি অন্ধকার; অবতন্ত্রি গিরি, '' নারিব আঁধারে যেতে, তাই ধীরি ধীরি " नरेरा जावा जामि ; किन्न रेम्हामजी "কৰ করি পথ মম কৰ করে গতি। " চলিতে চলেন। পদ; समग्र वामना, " मन्। तरे गिति' भति करह मुख्यमा, " कति मसर्गन जामि अङ्गि । त्रमणी ; "मरकाय-डेमारिन स्वर् अयम भद्रशी " জগতে পাইব কোখা বল ওয়ে মন ? , " विश्व अत्याम डेरम (इशा मर्कक्न), " पूर्विट मरू जगत इरेट भठन ; " अञ्च मरक्षी अन रेटक् का छन ! "मम्ब क्रनक वैषः द्वःनीन उनव " स्नीन क्केट्र कि (म डेक्स्क क्षमंत्र ; "কুপৰ ত্যজিয়া কিসে স্থপৰ্থে আসিবে, " পরিহরি ছুট্টমতি স্থমতি পাইবে;

" कड़ रंडस छात वन म कार्रा ুমুহর্তের তাঁরে উল্ল উদাত কথন -'इत सा खानक मत्न , दात श्वनत ''তত্ই কুপথে ুধায় নির্ভয় সম্ভর। "তেমনি প্রকৃতিসতী নরপুত্র তরে, "স্জিলা এ বয়ন্ধরা সদয় অন্তরে "কত স্থমর দ্রোকরিয়া পুর্বিত, '' প্রমোদ প্রবাহে প্রাণ হয় উচ্চলিত " जुक्कित म गर सरा; अभि मानर, " সুধা তাজি পিয়ে বিষ একি সমন্তব। "यादेशन रा भर्थ भारत छश खनियन. " गरित्न त्म शत्भ शांत्र स्थामत्र कन, "যে পথ মতত রছে পীয়ুষ পুরিত. 'যে পথ ভ্ৰমণে মন হয় পুলকিত ' পরিহরি সেই পথ মানবের " গরল পুরিত পথে করিবে ভ্রমণ। '' যাইবে সে পথে মথা পূতিগন্ধময়, " यहित्व तम भीत्थ यथा कल विषयः। " मानवश्रकुं एनिश कामि छेट्रे आन, "কোধা পাই বল মন নরখুঞ ছান। "এহেন বিজনুছান কেন্শপরিছন্নি, ''নাকারজনক ছলে যেকে ইচ্ছা করি।🗻 "यामिनी कामिनी कटम जानि आविई छ, ' গ্ৰহুতি ধৰিল কিবা সৌন্দৰ্য্য অন্তুত। " गधनमञ्ज करम करम (जाजियंत्र, · ' এ ভবদ कल **रत्ना स्धू** उत्मामन।

(भेत नर्ग।
" घटन नाहि मृकि जात घलिए बाँगात्र, " विखानजी जात करू निजना जास्ता।' **जव**जित शीति शीति (म गिति स्माइन, আপন বাসায় ধীর করিল গমন।

## ভূতীয় সূগ্ৰ

Loveliness

Needs not the foreign aid of ornament, but is, when unadorn'd, adorn'd the most. Thoughtless of beauty she was Beauty's self.

THUMSON

বামা- মুখ - বিনিঃদৃত - বাক্য - মধুময়-य शाहेकङ्ग मत्काध ना उनि मि प्राथा करा वहक्रा। বামা - মুখ - বিনিঃসৃত মধুর नटश क जूबरम ? वटि वङ्कान **शिविक्ड्म**ं स्म ত্র আচতি না করিল, ক্ষম অপরাধ। করিতে দোষ মনে হর সাধ বলি আমি হটী কথা করছ প্রেমিক না জানে কভু প্রেমের विरम्भ यनि ना इता। विष्ट्रम-ज्यन्त मट्ड किम विश्व রক্ষিতে প্রেম-জীবন দেহ विष्म् प्रयुज्य अजि धारशंकित करद्र। , पंष्टिल खुत विकात हिमान उर्धि-ठेक धरमाग উপকার করে যথা; প্রণয় - বিকারে विष्कृत - उपि-जान त्यम व्यानाधारत

दक्ति विजीत नाष्ट्रे भार्रेक उपनि, निरम्हार के के जान श्रेक्य अमेनी। তাই হে পাঠকপৰ কুবনমোহিনী अक्त अंथि अस्त आन्ममात्रिनी। त्याहिनी - वर्षन-विनिः मुख वांकास्या পিয়ে পারছর এবে কৌতৃহল কুষা। निजारमंत्री उन्जि (इशा साहिनी-लाइन খাপন আবাসে ধনী করিল গমন। শযা। তালি মেহিনী উঠিন ছয়। করি, कार कार बाहि (मशि हिस्कि) समती। वाहिएत जानिया तिर्ध अवि-तिषि-जान त्मास्क्रिया अविद्वाह हाक महीकश-आन। জনে জনে জিজানিল মোহন বারতা, অপ্রাপ্তে নাথের তত্ত্ব ছব্বি ব্যাকুলত।। গত রক্ষনীর কথা কছি পুরজানে, आकृत इता समदी अवि गर्न गरन। महारकाना हला পড़ि भिना श्रेन मार्क, (याकियी क्षत्रा (यन वक्ष क्य वाद्या। शूर्रकार्यार्थ (कह यात्र क्**रा**वयं **उ**द्ध কেহ ভুরা করি ধার সরিহিত সরে। क्ट यात्र मार्थ्ड हृष्टि द्रक्ट आद्यानप्रदेश. কেছ না পাৰ্কন উত্ত আৰু কোন ভাবেন वडा भथा प्राष्ट्रातक शिक्तिथि दिल, भूबनाभिगव छोडा अव **यरहरिम।** कान प्राप्त कह उद्घ नार्तिन करिएठ, বাঞ্জিল বজের সম পুরবাসি - চিতে।

ं भा गांग वान माहिनी इहेन। बुक्छिंड, क्षानाहत मर्काण्य भग्न सिन्छ। গানি পাথা আনি বারি সহচরী তার, शक्रमिल वार्ति मिल वन्त्य डाहार। मन्त्रीपिछ इत्ना मः का वहन जातात्म, নয়ন আসারে মোহিনীর বক্ষ ভাসে। 'हा नास' विनिशा धनी कहाश कमन क পার্শ্বর্তী জন-হাদি করি বিদারণ। " अह आगमाथ किन काथा भारत रन,. '' তোমা বিনা অশ্বকার নেহারি সকল। 'হ্বরগগনে তুমি সম্পূর্ণ চন্দ্রমা, "মতুজ মাঝারে তব নাছিক উপম।। ্ত হদি-মাকাশ করি জীঘারে জাক্তর, '' অন্তমিত কোখ। হলে হয়ে সঞ্সার। " कि मांच शाहिया नाथ हता अमन्यः, " অন্য দেশ উজ্জ্বলিতে ত। জি এ হৃদর <sup>শী</sup> করিলে প্রস্থান বল<sub>়।</sub> তব কুমুদিনী "मध करन मरताबरत इहेता मानिनी ্বলা ভাবিলে একুবার ! তব অদর্শনে 🕈 " আছি যে এখন প্লাণে তাই ভাবি মনে। " अद्भारत दिव निष्ठ्रंत आ। । विशि निमाकः। ' কি স্তব্যে গঠিল তোৱে ? লৌহাপেকা বুলে \* किं किं कि किंद्र निवासिक किंदि '' হতে৷ না পুর্ধাবদিত শৃত চিরে বল " গুছলে কি দশ্ধ ছদি ? তাই ভাবি মনে। া দহাগার খুনাময় তোমার বিহনে।

ें उर्ह **७**९४१४, डूमि (श्रास्त्र नागित " তব প্রেমাধীন, আমি কুড়াও অন্তর " अक्वांत्र (स्था सिद्धा । अहे सम शार्म " आहित्न भंग्नन कृति; क्यान क्षारम " রহিবে বল হে নাথ, কে সৈরা ক্রিবে " দাসী ক্রব হেখা পড়ি। কেবা খাছা দিবে " ক্ষুদ্ধিত হইলে তুমি করিয়। যতন? " इत्न ज्याजूद, रम, कि मिर्ट कीवन ? " কোমল শ্যায় কান্ত করিলে শ্যন, " না হতো তব্ নয়নে নিমা আকর্ষণ। " मार्माञ्च नियाश अटन कतिश नशन " क्रिट्ड इंस्टर नाथ यामिनी यालन। 'প্প্রবাসে, বস্তি কট্ট কত সংজ্ঞাটন " প্ৰাসে আছিল যেই জানে সেই জন। " (इन रच थावामह्मण अरह (धममज्ञ, "তব হুকোমল অল কেমনে বা সয়। '' গুরে রে দশ্ধ লোচন, জোর প্রীতিকর ্প্ৰেমপূৰ্ব ক্ৰব্য যেটী ছইল অস্তৱ। "যার স্থকোমল কান্তি করি সম্বর্শন " इंडिम् श्रकूत डूरे (काथा (मरे ऊर्न ? "कमनिनी मुझ मिन् यञ्ज कविशेष " দেয়রে উপমা তোর, তার নিদর্শন, "প্ৰাশ পদ্ধোচন কহে শীতাৰ্বে<sub>দ</sub>ু ''कमनिनी नम् इरे जानिङ्ग जसद्र। "কিন্ত কোথ। তোর নাথ বল্তর আমারে, '' হবি বিক্সিত প্রাতে ছেরিয়া বাহারে।

"মম প্রাণনাথ যেরে তৌর দিনমণি, " অন্তমিতে সেই মণি ছুই রে অমরি "না হলি কেন মুদিত ় ছলে অঞ্জল, " निर्गमिट्ड बट्टे जात 'त्रम जमर्गम। " ছবি শুক্ক বলি তাই দুমিছা দোষ তোর, ''তবে কেন দিই আমি। উচিত না মোর "करे बाका ভোৱে बना, जूरे दत यथन, " শুকাবার আশে এত রস বিসর্জন "করিছ'তে। অঙ্গ হতে। অরে রে প্রবণ, "প্রবণ করিতে দেই মধুর বচন " পাবি আর কোগা বল । সেই শিক্ষর, "জাঁবণে বঞ্চিত হয়ে রবি নিরন্তর " किमान वन् ति जुडे ? इ.७ ति विधित "विवाक वाका विभिन्न मह ७ माई। इ " তোর ছারে প্রবেশিলে ছইবে নিক্ষল. "অক্স নর বাকা তোর যেমন গরন। "**ওরে বাহুলতা দয় ধূলায় লুঠি**ভ "রহিবি রে কত কাল ! যাছার আঞ্জিত ^দীন ভোরা কোথা বল সেই ভক্**ন**র ? " আতার করিয়া কুঠ যার নিরম্ভর "রহিতে ছাই অন্তরে?'দেই তক তব "ভড়াশ প্ৰনবেলা ৰছিয়া বিপ্লৰ · पिरोपेन क्तर्रः श्रेप विव्रम्म " छेड़िना थाइछ रवटन धार्वाटन अकून। " হুই লতা অসহায় পড়িয়া এখানে, " তোর হংখ দেখি কেবা না কাঁদিৰে প্রাণে

<sup>দ</sup>রে অ**স্থাতা**জ্যণ আর্থে পরিণ্ড "হইয়াই তোৱা পৰ, আৰ্থই অস্ত "गण जरेकारह रमरे बानमान जल "कनिय दक्षि वन् काश क्रम क्रम " जाश विना अ अवीर म म एथ शास, " यम जाथ जर्ममार्थ जिमा तम जर्माण। " अरमा निष्म, वन् छात्र क्षमन अ बीजि - গত নিশি তুই কেন বাড়ারে পীরিতি "भम जाँबि छाजियाद्य कविनि विनम् " হরিবার তরে কিলো মোর অবলয় 🕆 "অন্ত দিন তত্ত্ব কীণ প্রত্যুৱে পলাও " আহ্বানিলে একবার ফিরি নাছি চাও। "গত কলা দিতে শলা আমার হৃদরে. "वरमहिनि हरक यन करनोका मा इतः \* কি করিছি অপরাধ বল তোর জামি, ^ হরিতে জীবিতেশরে হলি অতাগাদী। "বটে লোবটে লো তোর বন্ধ অপরাধ করিয়াছি আমি যবে মিটাইয়া সাধ " आवकास मान मिनि कति आगित्र " করিজাম দুর ত্যেরে ছতে আ নরম। "তাই বুন্ধি তুই এলো দিতে তারি শোধ, " रिनिहिन कें। वि'गेरत कित मंदा काथ। ''রে মৰ, দশ্ব কদন্ত পুনঃুবলি ভোৱে,

" तक्ति। किनि स्टब्स्य महत्त्वे कार्यः। ' गित्राव्यमि स्वयं चर्लः मयुक्ति कार्यः।

" गराइक दरम इनि । गढ़ि (माइकारन ?

" দগ্ধ দেভে পুনঃ কেন স্থলিতে আদিলি?' " वियाम विरय महरत श्रुणि स्थिन किमिलि।" जार्क्म कविन वह अक्रां साहिनी, অঞ্ধারে বক্ষবাস তিতিলা কামিনী। गत्नात्रमा नाशी अक अम्ली स्नीमा, शागमिश माहिनीत वह श्रादामिन।। সান্ত্রা সলিল মোহিনীর দগ্ধ দেহে निक्निटन मरनात्रस मध किन्रिशंटक বিগুণিত প্রজ্ঞানিত শোক্ততাশন, যথা দ্বীভূত শুক্তি পাইলে সিঞ্চন শীর উত্তপ্ত হইয়। হয় চূর্বে পরিণত, ' भाहिमी कन्नान करला हुई भिर मह। (माक्रिक् (वर्श मत्न इरन डेक्ट्निड, প্ৰবোধ জাঙাল কোথা থাকে বল স্থিত। হুংধ বিশুণিত করে অকালে সাত্রনা, শোকাবেগ শান্ত হয় আপনি আঁপনা। তारे मानातमा सङ्ग करेल विकल, করিতে দাস্ত্রনা মোহিনীর অঞ্চলন বহিল দ্বিঞ্চশ বেগ্রে। অঞ্চধারা শত, মোহিনী কপোল দেলে বহে অবিরত। निवम ब्राइकी धनी क्षित्र दानन, লোহিত লেচিনম্ম না সরে বচন। আহার বিহার স্থাে ইইয়া বজিত, করিল হবরী প্রায় দ্বাছ অভীত। मिन मिन् उड़ कींग डावि छावि धनी, शृतिमार्छ भागधम क्रममः (यमि।

· éb

किया सामनाजी मधा क्रवि श्रीक्र कर्दंड करम करम यात्र शैनि थन कत छरत। (माहिनी कांगनकां सामवाकी मंग, হতাশ অনুন আলে তাহাতে বিষয় . কেননা করিবে ক্ষীণা সেই স্থাচন क्तिना इरेट धनी मनिन रमन्।। পুরজন সে বদন করি সন্দর্শন, रहेन नियाम मत्य सर्कांद्रिल **मिवानिमा गत्नाद्रमा (माहिनी जनन,** রহিত ছঃৰে মগনা প্রবোধ কারণ। रेश्या नारम मरहोयम काल चुक्तिक প্রয়োগ করিল যাহা অসাধা সাধক। বিচ্ছেদ বিষম রোগা ক্রমে উপশম, ·कममें दिमुख्य धनी यञ्चलं विवसः धकना प्यांकिनी मरनात्रमा कंत्र धित, কছিল প্রাণি স্থীরে স্বিন্য করি। " (मर्थ, महे, व्याननाथ श्रीत धक मान, " তাজি মোরে শোকনীরে গেলেন প্রবাস। " अम स्वांता याहे आवनाथ शूटकां छाटन, '' করিতে শীতদ সধি সম্ভাণিত প্রাণে। " সধার কর রেপিড ছেরি তক্বর, " জুড়াবে নয়ন সই ছুড়াবেঁ অস্তর। "যত পুষ্পতক আছে সধার বিহনে, " শুক-প্রাণ নিঃসন্দেহ ব্যতীত সিঞ্চন। "অতি আদরের ধন তাহারা নাথের, " मिलल निक्षन विना (बीट्य निमार्थक

" मतित्व कीवत्य जाताः वित जारे मरे, "অভঃপ্রোদ্যানে চল দও ছই র**ই** " **1** वज रिन (मार्ड अर्थिन श्रूरणीकारन, উন্তান নেহাকে দোঁহে উৎস্থক বয়ানে। দ্বীভূত দেহ আর সম্ভপ্ত জীবন. সম্ভোষিতে পুল্পোজ্ঞান হয় গো যেমন কি জবা আছে ভুবনে বল ছেন মন। উথলিলে শেংকসিফু হয় নিবারণ। माहिनी-मानतम किन्तु इति विश्रतील, নেহারি উন্তান গনী শেংকে বিমোহিত ! माइन-मरकाउ-कथा ुडिठ मनुकारमा, पाकृत क्यित किन ; ज्ञाक्तीत जारम হকোমল বক্ষ তার; গদ গদ ভাষে আপন প্রাণ স্থীরে ও রূপে স্ভাষে। "আহা মরি মরি সই নাথের বিহনে " শোভাত্রই এ উন্থান দেশরো লোচনে। "यथा शृहसार्भी यनि मह शूत्रकन, 'গৃহদার ৰুদ্ধ করি কোথাও গমন " করে ওলে। প্রাণসই মাস হুই তরে, " হয়ে প্রজ্ঞাগত হেরে বাুটী অভান্তরে " कउरे आह्या अया। यथा पृद्धामन ' " আছিল না কিছু মাত্ৰ তথায় স্থামূল "युन्दत्र विक्रग ज्ग ; क्लांश अक्ट्नें, " জন্মিয়া বনজু তক কট দেয় মনে। "शृष्ट मृत्यूथीन चल, शृष्ट मंधा यक, "পরিচ্ন পরিক্ত হয় তে

" पानकनाइछ जात नतनकछक; " महरू शृरक कार्षिन धीवा मन् मह। " ৰ্নশৃত বাচী কৰে শোডাত্ৰই কতি, " নাৰপুত এ উদ্যান আমার তেমতি। " জনপুত্ৰ স্থাটী হেরি যে ভাব উদয়, " म जार थात्रश नहे कहत्र अ क्रमग्र '' হেরিয়া এ পুচ্পোদ্যান। ছদর বিদরে, " হেরি **শোভাষয়** তক শুক্ক জনাদরে। " नृर्वामन वधावजी भंत्रगी छेशद्व, " জৰিয়া ননজ-তৰু নয়ন কাডৱে। " যে পথ থাকিত সই কড় পরিষার, " শোভাহীন এবেদেধ ভাহার আকার। "জ্মিয়া বনজ্জ-তৰু চাৰকা উপরে, " চাৰু কিসলয় কীট কাটে হুৰ্যান্তরে। "প্ৰাণনাথ বৰ্তমানে ফলে এ উন্থান, "চিত্রকর ছবি সম ছইত লো জান। "মম এপ্রেমময় আর ভূতা রামধন, " করিত এ উদ্ধানের কতই যতন। " (मर्थ (मर्थ) मक्रमि, मन्त्री माधवीत, " সহকার শাখাজ্য করেছে সমীর। "করি বিলোক্ষ সই মাধবীর 🛋, " মনে হেন ভাৰ মোর আসিল সহসা " বেন প্রাণকান্ত হংখে হইয়া কাতরা, " ध्नात्र सुधिज जारह कनि इः १४ छुत्र। 🎄 " गंज मधूगांत्म यत्व माधवी व्यन्त्रं \* " कदिल नव असून, कछरे छेरनव

" একাশ<sup>'</sup> করিল নাখ; মম কর ধরি " कड़ित्मन (अमग्रा :-- " (मथ (म) स्वस्ति " गांधवी श्रम्म कड श्रम्भ श्रमवर्तन, " 'নাতিনী জামাই তব প্ৰথত জীবনে " 'क्तिटल्ड मधूभान माधनी कनरम, "'অই দেখ বিধুমুখী স্থীত উভয়ে। " 'কর অন্থরোধ থিয়ে তোমায় স্থাই, "'শুনাক সদীত এক নাতিনী জামাই'। ''এমন সময় অলি তাজিয়ে৷ প্ৰস্থ পশিল অপর পুলেপ করি গুন গুন। 'প্রাণেশ কহিল দই ছাদিয়া তথন, " 'নাতিনী জামাই গাঁত কর লো অবণ '। " এত বলি মম গলা ধরি প্রেমময় " कहिलान भूकी कथा श्रकूत कन्य। " 'সহকার সহ মাধবীর পরিণয় " 'দিলাম যবে লো প্রিয়ে আমরা উভয় " কৈত আনন্দের দিন আছিল সে দিন্ "'মাধৰী প্ৰথমে যেন কত ইচ্ছাহীন "'বেন্ডিতে নাথের অজ; সংযোগ ছবার " 'कतिनिञ्च स्थाता हिंगु रह, अनि श्नक्राज " 'মাধৰী পড়িল লাজে হয়ে নতশিরা, "'প্রেমস্থরে অবশেষে বাঁধিছ সুধীরা। " 'मिन मिन रहित शेरत मांधवी जाशिन, " 'জাপটি ধরেছে অন্ধ, ভুজন্ব যেমনি " 'শাখা জাপটিয়া থাকে খুলে দাধ্য কার, " 'माधवी छाटकट ब्रव अन महकात ।

" 'कृमि उ अक मिन अ विधुर्वमिन, " 'লাছকা আছিলে অতি মাধৰী যেমনি। " 'মাধবীর মত আরো কত স্থলোচনা, " 'লাজুকা প্রথমে প্রিয়ে রছেনা বলনা। " পতি অন্ধ পরশনে পার গজা কত, "'বড় **হলে কোথা তা**র লক্ষা রহে তত। "'প্রথম মিলন কালে নারী ভয়ে জড়, " 'কোখা রহে দেই ভয় নারী হলে বড়। "'নিম্ব সম যেই দ্রব্য সপ্রথমে জান। " 'विमिटन योदनदम स्थाद मगान।' "এত বলি প্রেমময় চুধিনা অধর, "ব্রুণ হইলে সই হুদি জরজর। " স্থাপূর্ণ কথা ভার মানস গগনে, " इरेटन छेमग्र मम कति गटन मटन " এখনি এ मश्र थान उाकित्मा कीरत्न, '' খ্নাময় এ সংসার স্থার বিহনে। " অই যে লতাটি সই সমুখে তোমার, "পরিমলপূর্ণ পূষ্পপ্রস্থা, গন্ধ ভার ''कूछूम ममन्न ममीद्रंग मक्षतिर्ग " जात्माम करत उमानि. श्रान डेडाशितन " তথনি শীতদ হয় দইলে আছাণ, " आनमनात्रिनी करत आनम क्षमान। " मानजी छेशांत नाम कितना थांग नरे, " নেহারে উহারে আদি চিত্তিছি কতই। " সম্পূর্ণ স্থাংশু শোডে শরতে একদা, "कूछ्म छ्द्रिण मानजीद श्रीजिश्रीना

" अश्विदिष्टे जीय मिथि ; जामि (ध्येममग्र, " क्षाँट्र भनागिनि कति आनम कपर " বসিদাম গিয়া অই সরোবর তটে, " दाँ हिव यानम् आर्ण तरव कमिश्रे , "মম জীবিতেশ কথা জিনিয়। সংখারে, "নৈ সৌভাগ্য কথা কি লে। পারি ভুলিবারে। " कहित्वन नार्थ भारत, 'मिथरला स्मिति, '' 'কিবা শোভাময় আজিকার বিভাবরী। " 'मञ्जूर्व भंदन भंगी भाक्तिह गंगरन, " 'নয়ন জীবন তৃপ্ত শোভা নিরীক্ষণে। '' 'যতবার হেরি প্রিয়ে পুর্ব চন্দ্রমারে, ' 'স্বধারাশি এ শরীরে বর্ষে ততবারে। " এরপের উপমান জগতে বিরল " 'ধঁয়ান্থিত দৌন্দর্যোর উপমার স্থল " 'অইরে অম্বরমণি; আছে এ ডুবনে " 'একটা সাম্প্রী **স্থু** যাহারে নয়নে " 'হেরি সমস্থ বোধ হয় লে৷ অস্তরে, "'(সম কি অধিক হুখ হুরসিক নুরে " '(मथुक विष्ठाति भटन); वन वतानत्न " 'বল দেখি কোন জুরা সে বা এ ভূবনে।' " আমি কহিলাম নাথ বলত জগতে, " কোন দ্ৰব্য আহে হেন উপমেয় হতে % भातित्व ऋषारण मह तिथि ना नक्षतन्। "কহিলেন নাথ ছালি অমিয় বচনে " 'मिथित यमि ला पूमि छला आत्मिक्ति, " 'म मिण्यातानि চক्क कित्रि गृहह धृति

" 'कटब रमधरण मर्थन, शांचरत रमसिएड,

" 'बरे स्मानमन बाबि क्वामां ब्विस हिट्ड।'

"চিবুক ধারণ করি নাথ বামেডরে,

" কহিলেন হানি হানি সহাস্ত অধ্যে।

" ইহাপেকা রমণীর সোভাগ্য গোরৰ,

" কি আছে জগতে সঁথি, প্ৰভূত বিভৰ

' তুলনা হয় না জেনো ইহার নিকটে,

" कहित्डिह महे जामि देश धकशरहै।

"'কিবা শেশভাষয় আজিকার বিভাষরী।'

" कहिलन नांध श्रेनः, ' ध्यकृष्ठि चुमती

"'কি শোভা ধারণ প্রেয়ে করেছে বল না,

" 'গগন প্রাঙ্গণ কচি দেখন। দেখনা।

"'मज्ज्ञन मित्रमन नीनिया रहत.

" 'হ্যাংশু শোভিছে তায় জিনিয়া কাঞ্চন।

" কেমুদী স্থজ-বাস করি পরিধান,

" প্রেকৃতি সাঞ্জিদ কিবা জুড়ার পরাণ।

" 'अममत्म उक्षक म वाग किंद्रानं,

" 'अभीम् आनम स्त्र निहिष नत्रान।

'' 'মালতী গ্রন্থনে পড়ি কৌমুদীর রাশি,

" 'উজ্বাদিছে এ উদ্ভান প্রতিভা প্রকাশি।

"'মাসতী কুইন মোকা করিগে চয়ন,

" 'हल ब्लिट्स मनानरम कतिय धारुम

"'স্চিকণ মালা তার এই ঘাটে বলি,

" 'त्रक्रकी करत्रदंह मिता चाक्ति भून भनी।'

" তুলিভূ আঁচল ভারি মানতীয় সুল,

' দৌরতে প্রযোগ তত্ত্ব জীবন আহুল

" गाँथिनां म ठिक्तिता माना हुरे जटन, "कड़िशन नार्थ श्रीन विका उहता। "'ছের ছৈর ইন্মুধি ছার কি ছব্দর, " 'কোৰা এ সাজিবে ভাল ছার মনোছন। ''কৰৱী ভূষণ যোগ্য তৰ লো স্থন্দৰি, " 'কর লো অম সার্থক কেশপাশে পরি।' "এত বলি নাথ মম কুন্তল বেঠিয়া " मानजीत माना स्माद्य निना श्रेतांकेश। "কছিলেৰ প্ৰভু হাসি 'দেখ চন্দ্ৰাননি ' আছা মরি মরি মালা সাজিল কেমনি। " 'िकूत यक्षन छव यन - धरा - काँ फ, '' 'मानजीत मात्न जाटर बहादन क्षमाम। "'कदिङ्क रा ७७. जम इहेन मकत ''নির্থিয়া হলোম্ম নর্ন শীতল<sup>ু</sup> " প্রকাশিয়া অভুরাগ করিল। চুম্বন, " कपि किंट्य छेट्ठ महे हहेटन न्यात्रन। কহিতে হঃখের কথা শৌকের দাগর উপলিয়া উঠিন রে কম্পিত অধর। नियोग श्वम (क्या मक्ष्याम क्रिन, শোকের সাগর তাই উথলি উঠিল। উথলিয়া শোকসিদ্ধ নারিল নয়নে, मत्नातमा व जक्रम श्रृंहान जीवतन। मत्नात्रमा भन्नि शहन त्याहिनीन कन, কহিল সজল সাঁধি হঃধিত অস্তর। ं क्लिन मरनाइआ-कथा **छनि आ**नगर, "रेक्टा इत मत्न मत्न इर्डे जनप्रहै।

60

" जब इःच महन रहन कंछ इःच नरे, "কহিবারে সেই ছঃখ মুধে পারি কই ট " तमनीत किया आहि धार्मनाथ वंदे १ "मत्न इत्न उन कथा अतं अत हरे। ं '' ५ इश्रंबर जनगान स्टर जनश्रंहे, ' আসিবে লে। তৰ নাথ দিন কত বই। " সধার সংক্রান্ত কথা কহিতে লো সই, " मिता अंतर्गाम एटला त्मथ द्रमपरे। " अहे तथ अखाइतन इतन निनर्भनि, " अञ्च भाषाम नीव मिकिएव कथनि। " अथवा कि अरमाजन मिकिवादम नीत, " সে কার্য্য সাধিল তব সলিল আঁথির।" ' শুনিয়া স্থীর কথা শোকসম্বরণ করিয়া মেশৃহিনী ধনী কহিল তখন। " সধার সংক্রান্ত কথা কৃছিতে লো সই, " किছू ना आहिल मेरन आश्रीमाथ वरे। " अरमा मरे जानवारम कवि जम मान, " সনিল সিঞ্চন ভক পুনঃ পাৰে আৰু।" "এতবলি ছইজনে नरेश कनम, ं निकिर्फ, नांगिना नीत क्षत्र मदम। शानाभ उक्त जिल ब्याहिनी सम्बी, निकिट्डिट नीत ऋष थीना दिंगे कति। गत्नावया (इन काल कहिना महावि, माहिमीत मृत्य हाहि डेव्यूक ध्वकालि। " अरे मत्या उन गट्ड भागाणि वज्ञन, " मारीम (क्यरनं मर्चे नग्रननक्षमः "

त्मार्डिनी अक्रथा छन् पूनि निक नित्र, মনোরমা প্রতি চাহিলেক সাঁথি ছির। নাহিক,গোলাপী আর চম্পক বর্ণ, निवस्त उथि मानीवमात नजन। शांजि करह गरैनांत्रमा माहिनीत थांडि, ' নির্থিত্ব প্রাণস্থ আশ্চর্যা লেশ অভি। " कत्रि यदन खीन। (इंडे क्षम्निक नीत्र "তৰ গতে নির্থিত্ব বর্ণ গোলাপীর। " দে বর্ণ আর দেখি না একি হলে। স্থালা, " (मर्गिष्टिन मिर्म हरक करव इरन काना।" কৰি কয় মনোরমু নাহি তব ভয়, गानानिर पिथ ठएक अकुन रुपर। यत्व (मा (माहिनी धनी मिकिन जीदन, একটা গোলাপ পুষ্প উজ্জুল বরণ माहिनीत श्रीत-गर्छ अछिविध पड़ि, গোলাশীর বর্ণ ধরে ছিল আছা মরি। মোহিনীর বর্ণ টুকু এমান নির্মল, প্রতিকৃতি পদার্থের পড়ারে সকল। मत्नात्रमा-कथा अनि त्माहिनी सम्मती, कटर कथा शामि श्री मधी कद धरि। ' " ওলো প্রাণসই তব বর্ণ গোলাপীর, "তাই দেও দেই বৰ্তোমার স্থীর। " গণ্ডেতে গোলাপী বৰ্গ কোথা পাৰ সই, "পাণ্ডু বৰ্ণ ভাবি নাথে দেখ রস্মই।" जथिं मर्गातमा मधीत कथात्र, "না সরে ক্লনে বাক যেন মৃতাপ্রায়।

उक्तपूर्ण निर्देश मीत शरक हरें करे नरेश कनग करक वन केशावेन। त्रवनी वागंठा कर्ड, नक्त्र सन्त्र, ইন্ছাহীনা প্রবেশিন বাটীতে উভয়। जन जात जक निम बत्नातमा नर, মোহিনী আকুদা অতি পতির হঃসহ विकार यखनामतन, धामक मीविटंड, **অতীৰ উৎস্কদন কৌভূইল** চৈতে গাত্র ধৌত করিবারে করিলা মানস, যথা প্রাণপতি তার রক্তমী দিবস রহিতেন প্রায় বসি, হেদ্বিবারে শোভা, তড়াগ দলিলে প্রকৃতির মনোলোডা। প্রিয়জন প্রিয়ন্ত্রান হয় যে সকল. প্রণামনী পক্ষে তাহা যেন স্বর্গস্থল। साहिनी मानम जारे मीर्चका मर्माटन, **इता स्टब्स्स जिल्ल, मध्य वहत्य** কহিলেক প্রাণস্থি মনোর্মা প্রতি, "দেখলোদেখ সজনি আমার ছুর্গতি " নাথের বিরুদ্ধে আজি; প্রাণ উচাটন '' হইতেছে কেন এত স্থার কারণ। " नरेता चंका - जोरमण ठन इरेकरम, " (क्षममञ्ज क्षित्रशान मीर्विका मर्गत्म, " हम प्रदेखान यांदे यमि (म) अपूर्णात "মম সন্তাপিত প্ৰাণ, ৰল না আমায় " ইছা ভিন্ন এ বোগের কি আছে উপায়, " बारी हाज़ कारिनीत कि विवय मात्र।

ঁ "পতিৱৰ্তা <sup>কামিনীর</sup> পতির কারণ, " যেমূন আকুলমন হয় কি তেমন, "পতির' কভু লো সই রমণীর তরে, "ইহার কারণ, সধি বুঝেছি অন্তরে। " গৃতি দেখা কতরপে আপনার মন, " निशुक्त दार्शिएक कम मना मर्साकन। "কড়ু অধায়ন করি কড়ু বা প্রবণ, " কভু প্রিরবন্ধু সনে করি আলাপন, "কভু নানা দেশ করি সহরে জমণ, " অপুর্ব্ব প্রকৃতিশে'ডে। করি সম্বর্ণন, "কভু বা কাৰাকুন্মদ করিয়া গ্রন্থন "সক্ষম করিতে সই সময়<sup>†</sup> ছরণ। "পুষ্ষ সহ পীরিতি রমণীর কাজ, " রমণীর সৃক্ষকার্য্যে পীরিতি বিরাজ। "পীরিভি-পথ ব্যতীত রমণীর মন, " जन्न नर्भ क्षू मिरे करत न। खम्।। " হেন বে পীরিতি-পরে পড়িলে কওঁক, "দেহ-কারাগারে হ'য়ে হুদয় আটক " ছট্ফট্ করে যেন পিঞ্র-বিছন্<u>দ</u>, " প্রাণ হাঁপাইয়া উঠে বিনা পতিসন্। " তুমি লো প্রাণের সই তাইলো ভোমার, " थूनि यन मिथारेडि श्रमग्राकानाता।" ্ৰুত বলি ছই জনে গাত ধৌত তরে, हिनिना विकारन राष्ट्र मरनाश्त गरत। विमन-मनिन-भून (मरे नातावत, চল্চল করে নীর পেরে বাছ্ডর।

मिर मिनायकान खरू डार्जि सन. ধর, ধর- করিতেছে এত সে: অতপ। . অপরাত্তে এর শোডা কিবা মনোহর, क्रमदन वर्तन आपि आपि भीन नत। क्षीर्व महती तारे नामन निर्मन, **३५न मनत्राचित्न इर्देश ठक्ष**न कि जनुक अन्हों करत व्य शांत्रन. **उत्त तम्य स्थीतन क्यम्म स्म धन।** रश्म रश्मी<sup>:</sup> मनसूर्य (मन्न मखद्र), तिशक्ति त माधुरी क्लाइ जीवनं। कानिया बद्दन मीद्र इश्माखनी-(मांका, তড়াগ পড়েছে যেন ছার মনোলোডা। किश जान इम्र यन काम कामहिनी, जामरत धरत्रह धनी छलना नाबिनी। नामिनी हक्षमा अछि स्मर्था कर्ष कर्ष. इरमुख्यभी मह कुन। माजिदन द्रम्यान। इश्त्रात्वानी कात्रमादन शादत त्र्यामाधिनी. मन्त इरेट करन क्षेत्र मधिनी। वट्याः यथा अक अक्षी क्यनिनीपन, कतिरङह मृजा नीदत मभीदत हथन। मत्या मत्यो शांतिविष इत्त छे०त्कर्णन शब्द शिक्ष किया याधूती भातन क्दिएक्टि मनि मनि : मर्ग कान इस्, शबद्रांश मणि (यस शिक्षती-क्रम्म উজৰিয়া বহিয়াছে। একৈ ক্যলিবী অৰুৰা মাণিকা তার ধরি হুছাঁবিনী

कहिटला नुजा नीति कामन<sub>्</sub> भयात्र, मनुष हिक्का भया। भारक हांक छात्र। नाना क्यां ज भीन नीत्र जानत्म माजिया সম্ভরিছে ব্রি বুরি সদলে বেঞ্চিরা। नाहि खारन लोक इःथ मना द्रथ मरन, नित्रथि তাদেরি एथ क्णांत नगरन। ं मर्था घरधा वाजि'र्शस्त्र धरमारम जानिज्ञा, मत्नाद्य भक्ष करत शुक्क चुत्राहेश। গোলাকৃতি জলরেখা তাহাতে উদ্ভূত, দারি সারি ভাসি যার সৌন্দর্যা অন্তত। চারি তীরে পাড় উচ্চ অতি মনোছর, খ্যামল নবীন দুর্ব। আর্ড ফুলর। उष्ट्रशिव विष्ठत्रण कहत गांचीमन, নির্ধি উত্তপ্ত প্রাণ হয় স্থীতল। পাড় সহ গাডীদল প্রতিকৃতি জনে পড়িয়া অপুর্ব শোডা; নরনযুগলে कि जानक विख्र के एन मुन्ता एवं करते. त्म जान<del>म वर्तिवाद्य एक क्लाम नद</del>्र ? সরোধর শরণীর হই ধারে শোডে, वकून भाषभ (अभी; अनि मशुमाएड अष्ट्रां जात्र धरगद्रश्नन, **७८**८ সোরতে পুলক তত্ত কুড়ার জীবন। ইন্টকে নিৰ্মিত ঘাট অতি মনোহয়, ু হা ধারে: শ্রেডে ছটা ৰাউ তক্ষর। मन ग्रंम नमीत्रव वर्षि उद्दर्शत्त्र, কিব। স্মধুর অর সমুখিত করে।

নোঁ নোঁ শব্দ হয় জাত্ত কিবা ভ্ৰমনিত বীণায়কি ভার কাছে ইছ গো লক্ষিত। চারি ধারে উচ্চ প্রাক্ত ছাহার উপরে, माना ग्रांक कक्त किया लाखा करता. তক্ষেণী প্রতিবিদ্ন পড়িয়া সরসে, कि अंजि अंगाम हाक कि खीं जि मानाम। निर्देश क्षेत्रकाय वर्षा की निया वर्षा. गर**ीतः किया भीटल बहुमद्रश्याः** थङ्खि-चूमती यन मद्या चार्गवरन, চিমার পুৰুষ ভাৰত ৰাজ স্থিদনে. जारे পরিধিয়ে ধনী বেশ সনোহয়. मनभी चार्तीन धति धक्त जसन नित्रविद्य नछ स्टब्स (दर्ग जाशमात, त्म त्थांका मित्रवि मुख नटर मन कात १ **ठिच्छा श्रुक्य इतियाता त्यणं (यहे,** कि जाम्बं इतित्वकं नवमन महे। (इ शांकि मधनग्र मिया जयमात्म. कि अनुर्वाष्ट्रभ गतम अन्तान आगारन। नगर्वाकास्तर यात्र इत्र कर्षास्म, তার **পদে হেন ছান যেন বর্গতল**। প্ৰন-অক্তিও নগ্ৰীর রেণ্-রাশি, উদর পুরেছে ভার খাস সহ আসি। নাসারত্র হছগত্তে সম্পূর্ণ পুর্লিত, বেদ**জনে ংগরিন্**দ সম্পূর্ণ, **একি**ত। क्लिश्वि मान धूनि क्टबर्ट ब्रिक्ट, কতু প্রভু বিঠালাপে বরন লোহিত।

তার পলে হেঁন ছল কিবা জীতিকর। যদি রে ভাছার হয় কবির অকর। निया सनैध्यात **यूनि पूर्ति अप्राजन**, পরিহরি অর্বচিতা আর রিপুর্নণ। বামেতরে দিয়া গও বাঁধা বাটে বলি, হেরিতে कि প্রীতিকর প্রকৃতিনরপদী। मार्छ छ-मञ्चलां नि रिशित्म अभीवने, নিদাৰে উত্তও অঙ্গ তৃষিত জীবন; जानि हूट महत्रायदा शांन कदत्र मीत्र, শীতল করি শরীর সমীর হৃছির। मत्रभीत्र नीच शिरत मत्रीत्रे भीउन, किन करत मरकिष्टक महत्रावर्त्ते प्रमा कष्ट्र मुट्टे शिविषन वक्नधार्टन, क्छू बर्वे बर्द वरह उक्टली अत्। क्छू मारवीत धीना कतित्रा धारन, मरनेत जारनाम इके कत्रता हुवन। गाबीते अंशन, ठाटन ककू वा नव्यहे. क्छू वा इत्व जवन मोतिना जानहे। अरे वाशीउर्छ जानि साहिनी इंसनी, সহচরী সহ তার, বিলোকন করি **ंधिममन्न व्यित्रक्त, / विश्वाकृत मरम**् गरनाजमा थांछ धनी मधून बहरन करिन जान जीवि हैं- " देरना थानजरे, "रेक्श अ नजनी जीता नक्कन बरे। " अज्ञमीत्र पूर्व शांफ कत्र विद्याकन, " अरे चरन ध्यममन कतिल। इनग

" প্রাছ্ল অপরাত্র কাল বকুলের ভালে, " छेनशुंख निव्नशिष्ट भन क्षृष्टान। " অপার আমন্ত তাঁর লোডিত লোচন, " मिनमिन जार्छ घर कति गमन। " স্বভাবের শোভা হেরি গোধুলি সময়, ' जानमनीता जाञ्चन र छो तम कनग्र। " मम महिशास महे दक्ती मगग्न, ' প্রকৃতি-গুণকীর্ত্তন করি প্রেমময় ' আৰক্ষে তাঁহার আঁথি হতো বিক্ষান্তিত. ্রই সর্নীর শোভাবর্ণন অভীত " क्टिटिंग कृत्रश्री भग मिस्रान "ছতো চরিভার্থ প্রাণশুনি তাহ কাণে।" সংগর সংক্রান্ত কথা কছিতে কলিতে, ্যাত ধৌত ক্ষি দেঁছে চলিলা ৰাটাতে। (इनकार्म (महे इंत्न धुक्य ग्रमः, একটা, মানিষ সহ তার সহচর। रशभ अपहेट्य जिल्ला (महिन मूह्र) बिहिंगर्स (वृष इश्व वद्धमर्गेड। शिष्टिल (पादिनी परनादमः इन्डिंग्न, रशेषापृष्ठि श्कारवत हुट्टेल नग्नरम । নিচ্ৰিয়া মেইছনীত রূপ অভূপম. জাতি কালসিয়া গোল, যেমন বিষম नहम बन्दम हान छेड्डामा मामिनी, বিচিত্ৰ কি ৰল যদি জগৎ মোহিনী .ে মনুজা আঁথিয়ন দেয় রে মাহিয়া৵ विभि तम अमृना धरन कि अवा त्य निश्ची

विकास शिक्षिण याज्य कहित कार्य, ্য ক্পের উপমান নাছিক ভুষনে ৷ দিয়ন কুঞ্চিত কেশ কাল স্থাটিকাৰ্য, शांष्टामिका शृष्टरम्भ शंदरम् , इद्रम् । माहारन ऋनवी जानुनास क्रमशान, পিছন হইতে আছ না পায় প্ৰকাশ। पुरुतमा आपक्षित्र। यम् कामविने। मधुर्थ वत्रशङ्खाङ क्रिसि क्षेप्रसिनी। নির্থিয়া পার্শ্বতে মনে জ্ঞান হয়, काल कामधिनी शदा महिन्ती छेनश। कां हि निधि शुरक्षिमी वैधित करती, धनशार्ष केषिद्धश्रा (यस म्मार्डिक महि। रमन महम विद्व ैविक। धारवांनता লিয়া দী**মন্তের ছু**র যেন উজ্লিয়া<sup>ই</sup> হ্রথানি নীরদ্রশার্থ গোড়া চমৎকার, ন। বালসে কার আধিক্রেসি কটি ভার। হুন্দর কপালখানি মহুপ্ম লোডা, বিশু বি**শু জেদ শোভে অভি মনো**লোভা। यन भेजम्म म्हन अस्मितिक त्रज्ञ. मसर्भरम रम रमोक्द्रा क्ष्मात्र क्षम्य। স্বাহ্ম ভুক চাক দিজীয়ার শশী, नष्डाम स्टार्ट् कान म जनाय शिं। •তার তলে বালঘলে ইুগাল লোচন, अमिन इट्ट ला (य शहरण अदर्ग। চল চল ভারাম্বর পদাপর্ণে মসি, খেলিতৈছে লজ্জা তথি প্রেমানন্দে পশি।

ु क्रक् गंबिङ् जीवि जह ही ैवाब, বিচুমিত চার তার বেন কাল ক্লি, जाकर्रनी मेखि कि व्यं कहरत शहर, কেবলে কৰিব আদি ভাতুক স্থজন। া যে জঁৰো চুখক সৃষ্টি বিধাতা করিল, त्मरे ज्ञत्या देशातम् जन गठनिन, এ বিশ্ব-সৃত্তম-পাতা নাছিক সংশয়, পুৰুষ লোচন সৃষ্টি হুচি জবাময়। दमनी-हृष्य-भूथ निकष्ठेष्ट स्टन, **পু**क्ष-ष्ट्रि-लाइन शांत्र (मंद्रे फ्राल) मिहिनी हत्र यूग गठम च्यात्र, आंत्रक बतन किया अंकि मेंटनाइत। मद्राल शमाल यात हिल यात्र धनी, उर्ज भाषाकित इह स्थि हसूर्गा। माहिमी युभड़ी वनि विशाउ जुलति, त्माहिनी काहमना सङ्ग्रहाहिनी समाती। কলে হে পাঠকজন মোহিনীয় রূপ বর্রিতে ফাইসা **আ**মি করিত্ন কুরূপ। লেরদিক্ত রূপ ওতে কোন্ত চিত্রকর **চিক্তিত** করিতে ক্ষম , বল স্থীবরু ? কিছা কোন্ চিত্রকর পদ্ম বিকসিত, সক্ষাপাদৃশ্য ভার করিতে চিত্রিড ? চিত্রকরণদ্ধ প্রকৃতিরপদ্মস্থানে, 🗀 रामारिकार देशू बांज ऋषी मुनिवारन। তেমনি কৰি - যোহিমী সহদয় জুস, প্রকৃতি-মোহিনী ছানে লক্ষার ভাজনা

আধ বিক্ষিত পদা করি উত্তোলন, निष्क-कृत्व केंद्रो शांत्र<sup>°</sup> यकि जेमर्राग, याण कर्रा तम तमीनार्गा इक व्यस्तान, मञ्जनश्राम कृत्य विव्यक्ति ध्वेमान। महुतां जिनी त्यां दिनी शिक्षा त्यहेत्रश मम करत इरला छात्र भोम्पर्या विक्रभा करन (इ शाठेक जन तम अपूर्णा धन, অতীৰ বিৱল ভবে, প্ৰকৃতি মতন করি বিজানে বিসিয়া তুলি দিয়া তাব ত্রপানি গঠনিল অতি চমৎকার। (य अर्गा नवनी किया निनिनी गुङ्ग मिहे करकामन करना भेदी हैं गठन इंदेल मन्भन्न छात्र कति विरम्भिक्त. চরিতার্থ ছয় মরি নয়ন জীবন। নয়ন জীবন নাছি হবে চরিতার্থ? अगांत मश्मारत मात (महे (म भन्धे। লিখিল ছইছে ধৈষা পাঠক ভোমার, বৃত্ত্বৰ এক দ্ৰব্য নিরীক্ষণে ভার मांभूकी करहना ७७; यमि आपृहिसी তথাপিও कांख हरक हरू जानंतिनी उर मिंद्रिशास्त्र (करमा। मिंदर भाष्ट्रिक, যদিও পূর্ণেছ তব নয়ুন-ছারক, रेंग धरन । शाहि उर इस संशामत, রক্ষিতে তাই হৈ দশ স্থাংশু আদর ক্ৰাস্ত্ৰি গুণ দিয়া সৃজ্জিদা ভাহায়, जमानिना अजिशत मन्त्र्व विषाद्र।

\* जारे झाम-शब्द-जङ्ग करण परिवर्धीन. जारे विकतिक नेषा सीमर्श असाम -করে বন্ধাকালে জেনো, তাই স্থবির, কণপ্রভাকণে দেখা ক্রেডে অন্তর। ঁনাহি দোষ তাই হৈ পাঠক ভব বলি, विन जब सिंह इंटि रेथर्श योज होने। जुवनत्वाहिनी शाह उव महिधात, नवीनजा विवर्किका इस धरे जातन আমার ব্যাক্স চিতঃ তাই অপাক্ষণ दिहित स्थारश्रम्थि जामात्र नहन অন্তরালে; ভুমি ছেরিখে পুনঃ যখন, ममानद बाह्यानित तम व्यम्भा धन। আয়ো দেখ ছে পাঠক তোমার মোহিনী পাছে ই্যাৰিতা হন হেরি এ কামিনী; পাছে ইবামিতা হন এরপ বর্ণনে, ত। इस्न रफ़ विशेष श्रामिनी श्राशित। তাই বলি হে পাঠক তাজি এ মোহিনী, তোৰছে যতনে ধরি তোমার কামিনী। वन डाँद्र धित कद्र " काथात्र माहिनी नार्ग जब कार्ड जिस्त जानममात्रिन।"

## চতুর্থ সর্গ।

---

"Power at theo (Freedom) has launch'd His balts, and with his lightnings smitten theo; They could not quench the life thou has from heaven.".

Thou shoutest to the nations who return Thy shoutings, while the pule approxem flow." W. C. Bry o

কোথায় মোহন ? যদি পাঠক হজন, জিজ্ঞানা কর আমায়—কেব। জিজ্ঞান**ন** করিবে? কেবা পাঠক ? কেবা তাজি স্থা, পরিত্র দ্রব্যে করে কাব্যহার স্থমরভি জীবনহারিণী, नव मानिशाद्य यथा का नमानिशी। আন্তাণ যথনি লও আমন্দ তথনি, ব্যাপিয়া দে পরিমল রহে এ অবনী। হেন কাব্যহারগন্ধ ভ্যক্তি কোন চিত, উত্তমাদ প্রপীড়ক প্রস্ন-গ্রাথিত কাব্যহার-গভের বল প্রফুল , হইবে ৪ পিকস্বরে তাজিঁ কেবা শ্রবণ অপিৰে দিরাভীত-স্বরে বল ? সম্ভেষিতে প্রাণ, সান্তনা আছয়ে এক সদা সুধাপান করে যেই স্থাবর, সময় তিজনম পানে তার বাসনা

[84 मा

रहाटा जानि मानत्म। कांनामांत्र मम मधित म कार्या (यन जिल्हाम मग। **खत्रमा जामाद वहे—वह जार्मा-हाम,** সহার করিয়া ছুধি কুক্ষ্ম ভয়াল ममाज मिन्नुत मीरद्र मम अस्उत्री, ভগ্ন, ভাসাত্ম সভয়ে , কত শত অরি আছে সে সিমুর নীরে: ধেষ ঝটিকার, প্রবদ প্রচণ্ড বেগ বছে অনিবার। উত্তুদ্ধ তরন্ধ তাহে সতত উপিত, ক্র্যারপে, নমন্বার, নিরীক্ষণে ভীত · মন তাহে অখ্তরী ভগ্ন কভকণ রহিতে সক্ষ বল । পলকে মগন इंदेर ता उन्नी श्रीन, यात्र कर्गशंत्र, দীন আৰি জ্ঞানহীন। সে সিন্ধ আকার कति विरमाकृत धरत समि कन्य जरत , কত কৰ্ণার দক ভাষান সভয়ে নিজ নিজ এত্ত্ত্মী হন ছাক্ষাম্পদ। সে সিমু হইব পার? আমি ? কি আপদ . সমাজসিভুর পার আছে বটে মন श्र्वी-श्रुक्षात-कत्र श्रीन श्रुट्यांहन। পঁত্ছিতে তথি দক যদি কেছ হয়, বিপদাত্তে নিরাপদ লভয়ে আভায়। क्षिक केरी कुछीत ध्वकाणिया तन, ' বিশ্র্যান্ত করি তরী করে যে অচল। যাইব কেমনে তবে, চিনিব কেমনে (कान्षे स्थी-कर-भम-सान ? तजरन

মণ্ডিত অঁকার জেনে। নর ভবছিত, विषधत्र, विष त्रं श्रीमृष ' आक्राकिउ। . কুন্থম কোমল সম নিরীকাণে জ্ঞান, পরশলে সম্ভাষ্ণে পাষাণ সমাম। সম্ভাষণে কেই যেন বোধ স্থাসম আ্ফাদনে ভুজন্ম গরন বিষম। ভাঁদাইছ অমৃত্রী সমাজ দাগরে, नेशा-नक-कटत यनि यात्र देश उटन। পড়ে ग्रिजा यनि इंश छ्रशी निविधारन চরিতার্থ হবে আমি কেবা অপমানে গ কোথার মোহন ? যদি পাঠক ছজন জিজ্ঞাসা কর আমারে কর**ছ** ভাবণ। भारन कतिए वाम जनवर उठि, প্রকৃতি-শোহন-রূপ তারি ছদিপটে তথিকার মনোস্থে করিছে চিত্রিত, সপ্তাহ হইল গত কেভিছন-চিত, তথাপি নহিল তুঠ জাৰ্ম তাহার फेकीश नामना-निशा (ईति नातनात সাগরের রূপ নিৰুপম। এক দিন অপরাক্লে মোহন স্থীর করি মন লীন थक्ठि जनूस (थारम भूनिंदन माँ ज़ारम, नित्रभिष्ट मिन्नूरभो छ। छ दिमा विमादत । निर्मग्न निर्माषकाम धीय वक म्य লড়িছে না তৰপত্ৰ বজ্ঞণা অংশব। नित्रीकर्ण उक-दांकि मत्न कान इत्र, নিশুর র্ছিছে ,তাঁরা পেরে মহা ভর।

প্ৰন বহৈ বেষন শিকারী ছাপদ, प्रमोष्ट्रा मित्रशिक्षा प्रभा खीउन्हा। প্রকৃতি - হম্মরী - মুখ ্ করি নির্মাকণ, জান হয় আছে ধনী উদ্ৰেশে মগন। যেন কোন মহা যোর বিপদ আগত, धक्त म्थानि जारे विषशं अभछ। রঙ কুছেলিকা খেরি অধিল ভুবন, আচ্ছাদিরা আছা মরি সোণার তপন। করি বিলোকন রবি ছেন জ্ঞান হয়, गगन आकर्ण यन श्रीता द्रक्रमञ् धृति অভান্তরে পড়ি, আছা মরি মরি ভৰ ভাৰিষ্ট্ৰ ভাৰি অংশুদালী ধরি रगन ८३ मिनन मूथ, विषद क्रमण, त मूर्यानि मनाकाटम इरेटन छेमग्र। উত্তর পশ্চিমে ছোর কালিমা বরণ घनांवली (इन क्रांटन मिना महासन। क्रव मुम्बरिय घरन एवन क्यांच इस, ধন বলি কিন্তু উহা খনাৰদী নয়। भवन कदि धाइन कानिया दहन, মুযোগ প্রার্থিচে সেই পড়িবে কথন তার্ছীর শিকারোপত্তি ভীক তক দল: দাঁড়ায়ে শক্তি তারা বলির ছাগল। নিণ্ট লম্পট বড় করি নিরীকণ প্রকৃতি সভীর রূপ, ছইয়া মগন काम कृष्णे एएवं मुख्यान मञ्जामक, অম্বেষণ করিতেছে কাল অভিমত

হরিবারে প্রকৃতির চাক বিমশতা, বিষয় বদনখানি ধলি স্থাপতা. বিষাদে রহিছে তাই, যেমন কামিনী পতিব্ৰতা, পতিব্ৰতা, পতি প্ৰণায়িনী, লম্পটের পরশনে রছে শক্ষাত্র, আতক্ষে বিহ্বলা ধনী বরণ পাওুর। माइन मांजारा उठि इता गुन-मन, প্রকৃতি মলিন আছু করি নিরীকণ िखांत मर्गन शेतः कृष्म घनावनी আচ্ছাদিল বাযুকোণ. অচল আৰলী দুর হতে শোভে যথা, বায়ু লুকায়িত তারি পার্শে ব্যাস যথা রছে গুলার্ড। शीवि शीवि भागरक्ष कविद्रां भवन र्घात्रनारम अकवारत अमानि लच्छन পড়িল পাদপমাথে। ভীক তকদল করি নত-শির যেন ভরেতে বিহ্বল धर्तिष्ट প्रवन शाम जीवानत उद्य হর্দান্ত হঃখিত কোথা হয় রে অন্তরে দীনছঃখ ভাবি মনে; হেরি পরছঃখ পাষ্ড-পাষাণ-প্রাণ পায় মহান্ত্র। म्यात सम्दा काथा काक्ना जेनन, উদ্যুক্ত যখন সেই পথিক সভয় ু নাশিতে দণ্ড প্রহারে স্থবিজ্ঞাপুথে, शिथिक धितितन शिक्त मञ्जा मत्नात्रतथ সাধিতে বিরত কোখা? হলে নতশির, जमनि ভोलित थीना हितित मनीत।

তজ্ঞপ শাৰীর শির আরভ জাঁদিতে করিল প্ৰম, মড়মড়ি চারি ভিড়ে পড़िছে भागभेश स्ट्रा उधारिक, रत्य हिन्नमृत ब्हर्ना धृतिनार कर। উড়ি গেল কাঁক শাৰা শোভার আকর, সমস্ত শরীর কাফ কাঁপে খুর ধর। পর্ণ নিপত্তন ছলে তক্ষল যত, বিসর্জন করে অঞ চক্ষে অবিরত। প্রস্থন ভূষণ ত্যক্তে কোন তক্ষর, কোন তা পরিভাট কল মনোহর: वाबुहर म अरमम वाबुभूत्य शिक्, ব**ন্থ**া<sup>র্ড</sup> **উড়ি পড়ি যার গড়াগ**ড়ি। जारत दा विष्ट्रभक्ता, मिश्वि मर्मा उव, কাঁদিয়া উঠে যে প্রাণ, রঞ্জিতে এ ভব তোরা যে শোভা আকর, পক সুচিকণ नित्रीकर्ण मां खुड़ात काशाद नत्रम ? 🌶 প্রকৃতি সতীর ভোর। তুষিবারে প্রাণ, (वर् वामाकत्र (यदत, अनि जीत गान নিছিবে মোছিত কেবাণ মান্যনিক্র, সংস্থার স্থালায় যবে ,দেহ জরজর তোর ছমোছন यत्र कतित्रा अवन, জুড়ায় সন্তপ্ত প্রাণ ওরে পাথিগণ। आहां मति गति अत्य अत्य ति विक्षा, वृक्षीख श्वनकरत इस्त श्रृष्ट्रक त्रहिष्ट् भूमात পाँज इश्व कृष्टि कारत ! किन्द्र (कांग्रल धांग कैं।एन एवं क्रूकोट्ड

वर्ति उ छीतम्ब इःथ वर्ति व कम्प्य ? आंश्रिनीत शुंहि (मृत्र अ मम वर्गाम। ছুটিছে বারিদকুল গগন প্রাঞ্জণে জাঁধারিয়া এ সংসার জান হয় মনে জলদ তুরদে শত করি আরোহণ, পবন ধাইছে রভে নাশিতে ভুবন। नीतम निर्दाय मिनि शवन एकात, ৰুদ্ধ করে আচতিপথ শুনে সাধ্য কার। পড়িছে অশনি বাণ করি বোরনাদ, উত্ত उक्त जार्ड विषय ध्याम। জ্লিছে শাধীর শির করি ধপ্ ধপ, লাগিছে গিরির গার র**তি সঁক্**টি । পড়িছে পর্ণকুটার শব্দ ধুশ্<sup>ত</sup>্তি, । काँ मिर्ह महिल निश कदि वाश्वाश्। **जाबित्र भागभ कून गंक यज मिंद्र**े গৰ্জিছে জলদকুল শব্দ গড় গড়ি। বহিছে ভুমুল ঝড় শব্দ গেঁমুগোঁ। সোঁইগোঁ, লাগিছে বাহু কোটুন্সে শব্দ ভোঁ ভোঁ ভোঁ ভোঁ। উঠিছে কলোলফুল गत्रकि गजीत्र, ভাঙ্গিছে পুলিমে, করি আবণ বধির। মিশিয়া এ সৰ শব্কি নাক উদ্ভিত, : সে শব্দের দিতে শব্দ সম সাধাতীত। • बाँगिज बाँगिक। पार्थ इतना मधूर्यिज, **মোহন হুধীন** শুরেশিলা চিন্তাৰিত निक**ष्टेश** शितिश्रहा अमहिक सम, माँ ज़ादत भितिभक्त दे मिथन स्माहन

এই ভয়হয় বড়, কিন্তু শহাসূত্ৰ, रगारन मानम कष्ट्र महिनादा सुन्। काठ-मीशाधात्तः मीश-मिश्रात पद्म, ख क्रुवान (क् श्रीक्र श्रीक्रन मन। विरात वाहित कड़ मूर्खि छन्नहत, **इक्षम कि इ**श मीथ उम अजासत। स्थीत एक माणे न मील-मिशा मन, महक्षम कतिबादि छ्छाम भगन অক্ষম সম্পূর্ণ জেনো, কেনবা সন্থির · इट्टेंट साइन-मन शिक्षक - स्थीत। सन्धि जीरंग पूर्ति कति वित्नाकन, करह क्या भैन गरन श्रुधीत स्माहन। " अरक त्रकारा कर ध्यमी स्व नमन, . " अरे य पाहिन उठ गंडीर नर्गन। " अहे य जिमात्र मिथ गत इतन जान, " তোমার ছদরে জোধ নাহি পার স্থান। " गांडीरा जाशन जामि हिना वीम मूर्थ, "অটন অচন ভাব ধরিছিল। স্থাে। " সে মুর্জি পরিবর্তিত কেন হলেং ছেন গ " উন্নত মতন এবে সাজিলে হে কেন! " अगांख पूर्लिविनिके नीत निक्रे नह, " " নেহারি বিশাস কেবা করে অভংপর 🖞 🖰 " जशता (इ श्रामिधि माहि मात्र जन, . " চলিতেছে এই ভাবে এ বিশাল ভব। "ভয়ম্বর দৃষ্টি কিবা ছেরি কাঁপে প্রাণ, " केंक्टि किर्ज्ञान कुन शर्क उ नमान।

" वक्षे वक्षे छेचि वक्षे शहा । " লুফি করে সিশ্বতীরে **করিছে গুহার** ৷ "সহল সহজ ছেন উর্থি ভরত্ব, " ভান্ধিছে ভীষ্ণ গর্জি বেলার উপর। " উঃ। উঃ। কি ভীষণ শব্দ তাহে সমুশিত " এ শব্দ সাদৃশ্য দিতে নর স্বাধাতীত। " एत्राह (य जन कृत्न कह्नान-उजन "এ ভাব বুঝিতে দক্ষ হয়ু সেই জন।" निगीधनी नगांगंड, करम उत्मातांनि, বিস্তারিল নিজ রাজা গান্তীর্য প্রকাশি। একে অন্ধকার নিশি তাছে ঘনাবলী আবরিল পুণীস্থিত পদার্থ সকলি; मान मान कान शंभा यन उत्भादानि পুরিল নিজ উদরে ত্রিসংসার আসি। তাহাতে তুমুল ঝড় বহিছে সহনে, मुष्टलब भारतः जात्र हकि वत्रवर्ग বহিছে সলিগ্লোত; একাকী মোছন विजया गिति-गेश्वदत मझामूना मन। हिश्य क्रह-विवर्किंठ आहिन म हन, रमाहन-मानम उत्र किरहरू इंकन হইবে, পাচ্কৰৰ্গ! ভূত-প্ৰেত-জন্ন, विष्ठिक क्षियारत स्माइन - समग्र অক্ষম সম্পূৰ্ণ জেনো; জানালোক যথা সমুজ্জ্বল করি খন, বিজীবিকা তথা কি করিতে পারে বল ? মোহন হুধীর, বিজনে প্রমুখী সঙ্গে প্রকৃতির।

প্রকৃতি সতীর রূপ নিরীকণ করি, হুৰ্দান্ত পৰন ভরত্বর ভাব ধরি করিল বছল চেফ্টা ছরিতে সভীর সতীয় ভূষণ, হলে জীবনে অছির। यटन इताणज किंकु करिन मर्गन, পতিত্ৰতঃ যুবতীর সতীর ধংসন অতীৰ হুরহ কার্যা, তাই ক্রোধভরে, প্রকৃতির চাক শোভা নিল ছুট ছ'রে। লও ভণ্ড করি দিল শোভা অতুপম, मन्धर्मात मनाकार्म यञ्जन। विश्मा लम्भाटित <mark>मृदमा</mark>ङ्गति इटल क्ष**ञ्**लिङ. দিখিদিক জ্ঞানশূন্য হয় মৃচ্চিত। कांन कामिनीत कांट्ड इरेटन निष्क्रित অপর রমণী কাছে বাসনা বাঞিত **প্রকাশিতে দজাখু**না। প্রকৃতি স্তীব **সঙ্গ-সহবাদ-লিপা** নিছাতে অস্থির हरेला भरन: निगीधनी मणागंड হেরি, হেনকালে দম্মা যন্ত্রণা-বিগত **ब्रेन** भागम जातः, जागाम अधीव रहेत्रा इकास अवर्गरंग हस्तीत পরশি নে কোমনাজ হ'ল অচেতন একে বোরা নিশীবিনী তাহে প্রভ্রম। দোঁছাকার ভীমবৃত্তি কে করে বর্ণন ? ' <u> जिल्लाम् ज्यामश्चीन 'इहेल इस्ता।</u> म्भारतीय उरुमन विश्व म्भामहीय, **अकृति त्रमगी यूथ इरेल मनिना** .

करम ভিরোহিত খন, करम ভারাদল विश्वित अरक अरक ; भगमा अन ক্রমে হুলো অুশোভিত, অর্ক্ন চন্দ্রোদর হলো প্রাচীদিকে আহা, কিবা শোডাময়! ত্যোরাশি তিরোছিত, কৌমুদী বিমল, সাবির্ভ এভুবনে: স্থাবরি সকল उक, नजा खग्नकातः; कान इरन। मरन বিশ্বপাতা থিছাছদি ছংখসদাৰ্শনে প্রকৃতির কালিম। বসন দূর করি, **उ**खनाम मडी-चर्क यर् करह धति হ্রথে পরাইলা; কুন্তলে কাঞ্চনকুল তকতারা নাম (যাহাছেরি মনাকুল) यज्ञत चालिना, ननाहे नाजामधान -রত্বদিধি তারাকারে, যে জ্যোতি উজ্জ্বলে গগন প্রাঙ্গণ কিবা, হথে সাজাইল।। अना अन धरमार जुरत्न डेकारेना। य यामार जाउन अक्रां बमरी প্ৰনের প্রশ্নে ত্যজিয়া অমনি দুর করি দিয়াছিল; জানকী যেমন রবিশের পরশবে বতেক ভূষণ मर्गाएकि मानाइः १४ कृष्म नित्काशिन। হেরি নৰ রূপ ছবি মোছন ছোসিল মুপার আনন্দে, তার হলো চিন্তা দূর, নির্বার পতন শব্দ অতীব দলুর, শুনি আচতি জ্ড়াইল; প্রকৃতি স্বন্ধরী, थित थूल मार्निक, रान, जारा मति।

नित्र्श कद्रग छत्र तम मैधूद धनि क्रिएं नागिन गंडी, यमिं का स्ती निक्षं इः स्थ मधीकृठां, समन अन्नी আপনি যন্ত্রণা সহি করে স্থত-মণি লইয়া তোৰে তাহারে। মোহন-জাখিতে নিম্রা উপস্থিত হলে। দেখিতে দেখিতে। একটা উপলখণে রাখি নিজ শির শয়ন করিল হুখে মোহন সুধীর। नां विश्व किलाए की बदा अर्थिक मात ज्ञाश शंक छुठी अमनि मुन्ति। স্থাতি উদ্দেশ-নিশি কোথা বল হয় গ म तकनी अक्षरमधी मरमात्राका नश জোরে অধিকার করি; সুধীর মোহন যেমনি মুদিল জাঁখি অমনি অপন নেহারিল ভয়ক্ষর—মুরতি ভীষণ নির্থিল এক, তার মুদিত লোচন। অঙ্গ যেন ভালতফসম দীৰ্ঘাকার, मलक धका ७ जान। पाछि कमाराह। भिरत्राभिति संघ्यान मीम अधाजात, बछेत्रत्क त्मार्छ त्यन निक्छ माधाद। গ্ৰাকৰ সম ভাগ্ন প্ৰাভিন্ন গঠন, ननाष्ठे विभाग छात्र क्षीत्रग-मर्नन। नांत्रिकां है। इस इत्र श्रीत्रभव নাদারত্র হটা তার কামাত গহার। চকু ছটা গোলাকার যেমন তপন, क्रमेट इंडा मणि पृतिहा मधन।

দত্তভা খেতিমুলা সম জ্ঞান হয়, নিরীক্ষণে রক্ত শুষ্ক, কম্পিত হৃদয় ! , रख इंडों सांछे। त्यांचे। इक्रद कमनी, ন।ড়ি ভুঁড়ি তুলে তার বদনে কেবলি। (भर्छ भाषे। मीर्शकांत नायुख्ता भान, পদ ছটা ভক্তপ্রায় অতীব ভয়াল : ভীগণ দশ্যে রাখি ভীগণ দশ্য কডমডি শকে করি সম্ভাগি মেছন रुधिन नीत्रमनारमः " अरत (र शास्त्र, কাজি নির্ধিব তোর সাহ্স কেমন। চির **অবহেলা ভূই** করি**ন** অংশগ্র, ভালিন দশন এক চাপ্লাড প্রছারে वाकि द्या निर्काध, छात्रे । माग्रतमनिरन ডুবাইব ভারে আছে: মাথা এক কিলে প্রেশ করিবে তোর উদর ভিতরে अभि मातिर मुखि मखरा छे भट्टा " এত বলি ভীষণ-শারীরী ধরি মৃষ্টি, ধাইল মোহন প্রতি করি মহাকৃষ্টি। निक्छे विशेष प्रथि (याइन ऋधीत, रोधित्मक পরিকর, পলক আঁথির न। लड़िएंड, कहि स्वादमर्श महाविम,-" ওরে ভীমকায় তোর ক্রোধ জনমিল কি কারণ ? নিরখিলি কিবা অপরাধ মোর বল্? তাই তোর ছইয়াছে য়াধ मम मत्न वाक कता ; क्तिम्नित्त मत्न, তোর ভীম অন্ধ ভয় দেখাবে মোহনে।

करमबन्न जीमगम (मधि वर्षे छीत, কভু না ভোহার সমে বিস্থাদ মেবৈ मखन दम् ति पूछे; किया खीमकांग, मिथ তোর ছবাশর কৈন রে আমার করিবে শক্ষিত বল ? দেশ্ তৈলপায়ী यमि वृह्द-काम इम धुनियामी ফুদ্র কাচকীট কাছে, যায় গুড়ি গুড়ি যেমন রে মলিয়াচ যবে খেরি ছুরি लाय यात्र किकिनाद्य: वलि आमि जारे, তোর ভীমঅল দেখি কড় না ডরাই।" এত বলি মোহন ধাইল তার প্রতি, লয়ে ধর অসি যেন সচকিত-মতি। মোহনে অতাগ দেখি দে ভীষণকায়. চারি পা পিছন হাটি সম্ভাষিত ভাষ। "প্রচুর প্রশংসা তোর, করি রে মোছন, অতুল সাহস তরে, শোল দিয়া মন लाद इंडी कथा विल, इंडी स सामाव, অবিহিত চিত্তে শোন মম মহিমার वाकारमी:-वन्द्रांखादाका करि जामि, अभीम विख्वशूर्ण तक्ष्मि-यांगी। **এই যে विभाग** द्रांखा, वन, छेशनन निकृष गरमातक्षम, जाँकि जाकर्मन कर्त्र विमालन कहि, भक्ति आंगांत्र, ध विभान चक्रज्ञि मम अधिकात। वक्रवामिश्य-हिफ-निश्वामत्नाभिति. করি আরোহণ আমি নিজ রাজা করি

निकणेरक निकाराम, (अरना दह भारन, অধিকার कि প্রকারে कরি তব मस 🍌 তে কারণে মম আসা: তোহার সাহস, कति नितीक्तश । यम अनुस दित्रम् হইণাছে দাতিশয়, করি ভয় মনে. তৰ সম সহত্ৰটা জ্বে বীর জ্বে यनि (त कडु अस्तर्भ, भम तक्तां छ। द , চাজিয়া প্লাতে হবে কি মন্দেহ ভার। বিজ্ঞানে খেয়েছি ভৌৱে একাকী মোখন शाकि (इ निकास छोट्ड विश्व कीरन।" বলি তেন ভীনকায় বক্তমুট্ট ধরি, अरमः) ज्यानत प्रमः मात्र मात्र कति। শক্তি ভ্ৰায় ছেলে পেমিন ভূ নয়. দে ছাফের কথা শুনি ক্রুর **ম**তিশয় इरहे, भावन दली धाःल उर्शन, গছজি শ্বন যেন ভেক-ছারা ফলি। করিল প্রছার পরে পর অসি করে, বিদল প্রহার যথা ছায়ার উপরে। করিল আখাত মেই, কোথা ভীম অঙ্ক, कीम जल जलमूं असम जनक। প্রহার করিল অসি যেমন মোছন, নিক্ৰা পলাইল তাজি মোহনলোচন। কোথা দেই ভীমকার যুক্ত আড়ম্বর, ঘোহনের মাথা এক শিলার উপর। शिठेक महमग्र! (कवा जीमकात्र. জানিবারে কুতৃহল মন্ত্রণা তোমায়

मिट्डिइ कड्डे दुवि ; अन निक्रा मन, जीवन-भंदीदी अर्थ हम काम अनः। जानका देदाँव नाग इ शाठक जन, শত শত মান্তের ক্ষেত্র কারণ। मानत्वत यक कके अहे इके मूल অন্ধকারে নিজ শব্দে আতক্ষে ব্যাস্থল। **जानका**त्र वनीकृष्ठ करत्र कष्ठ नरत्र. ছারা দেখি মনে মনে ভুত জ্ঞান করে। কেছ লা শহায় ভনি বিদেশ গমন मत्न करत्र ठिक यान कृष्टिल अभन। কেছ আশিশার করে হইর। পতন শমন ভবন ভাবে পোত-আরোহণ! हेकारिक डेम्रकि-१४४ कट कम हर, কে তাছা বৰ্ণিতে পারে বল সুধীচয়। 'वागिटका उम्हिनका 'स्थामाथा कथा, মর্মজান হয় কার শকা রহে যথা: माइमी मामरगण अक दांत्र महत्र. লক্ষ বার মরে জেনো যত ভীক নরে। आमद्रारे अ कर्षेत्र भूनीपूठ (इपू, আশন্ধাই স্বরু ভাঙে ভরতির সেডু। जामहारे मार्नेटवत मत्र नमान, जानहां की ब्राह्म प्रकृत भरन करित आन। **উठ উठ रक्क**न ४५ दिमा-विमि. दान दान जानदाद निरहारम्हण करि। **कें**ठ वर्णका कहा (मज-उंकीशन, हारि मिथ उर मना शुनिका (नाहन।

হরে शह या महात मना श्रमानक, কাহারে বা করে। আমি মনোত্রংথ যত। কত দেশে কত জাতি এখাৰ্বা ভঞ্জিছে জয়কেতু যশ-ভবে সমীরে উভিছে। निक् अल म्यूड्यून - ज्यानद्वि रहत्। উঠি জग्रहान मन। প্রতিধনি করে। হেখাল মোহন যেই মেলিল লোচন নির্থিল কিয়দারে মর একজন मध्यादिनोमील कर्त्व वासिएक समुर्थ. পরিল গিড়িগছবর সে দীপ-মহথে। अर्फ जनर्मना छान और अमिनी, जीयन अंग्रिका करन नामहा (येनिया) াংগে ভরম্বর কথা ইঠিয়া সভারে মোহনে জাথাত কবি কেলিল সহরে। निमाज्य मीथ-गाला करि निदीकत. जीवन-नतीदी गावा जादिन त्याहन। মোছন ভিত্তিল মনে ব্ৰি ভীমকায়, মায়া ধরি আলোকতার আসিতে উথায়। क्मश्कात्रधूना दश कि किनात मन তাঁর হ্লে হেন ভাব রহে কডকণ? পরক্ষণে চিভিলেক মোহন স্থীর, পाইয়া সুযোগ मञ्जा अ निर्मि गञ्जीत, হ্রিয়া কাহার ধন আসিছে গ্রহতে, ় লুকাতে **লুগি**ত রত্ন **সভ**য় অ**ন্তরে।** জালো অতাসর ক্রমে, মোছন তথন কাঁধি পরিকর করে করিল

নিজ যতি, নির্ভন্ন অন্তরে সচকিতে সে আলোক উপস্থিত দেখিতে। नटर छेरा जीयकात्र, म्हा छेरा नह, নির্থিয়া পুর্জনে উভরে উভয়, राला উल्लामिङ यन, भार्रक अधन, জিজাসিতে পার উহা হয় কোন জন। ভূতা রামধন এই প্রভূপরায়ণ, নিজ প্রভু: অম্বেষিছে সে নিশি ভীষণ। ৰাত্যাসমুপিত ভূচা করি বিলোকন, নিজ প্রভুজনা হয়ে আকুলিত মন कतिम बद्ध (५को शक्ति आमिएउ, नांदि मिन महाबाड़ म आना भूदिएछ। হক্ষের রহৎ শাখা ভাঞ্পিড়ি করে, ভাদিল তাহার বাজ বাধিলা অন্তরে। कारक कारक अञागित इहेमा वामाय. নিজ প্রভুজনা যেন হিলা মৃতপ্রায়। গভীর রজনীকালে সে বা্ডাঃ পামিল, अकुपदारंग कृष्ठा अमनि डेटिम! अ(भिक् सहेश्रा कर्त छान्नि उक छ्रा. কটে সুটে প্তহিল পোর ছংশে মগ্ন। ভূতা হেরি নিজ প্রভু, প্রভু ভূতো ছেরি, **डेथनिया उर्तिन**्द स्थागारत्रि সুগনীর সে দোঁছার; সে নিশি গাড়ীর, याशन कतिम मीट्स किं किंद करणार्थिकथरन माना, क्रांप निमा (भव. ভাষণন মেত্ৰনের দুর হলো ক্লেশ।

হে পাঠক शक्तमंत्र कर विरमाकन नारी अक कतिरवक कृति आकर्दशः প্ৰন্যপ্ৰে ছিলা রজনী গভিনী, अमन क्रिन कना नग्रनश्किती। **ननतार्ग स्त्रक्षित्र वर्हे किमन**त्र, নবরাগযুক্ত আধ ফুল কুবলর। নংরাশে হুরঞ্জিত নবদুর্মাচয়, यक्षांज नगाग्रम सन्दर्शियहा। हकन योवना नाही भून नवहारग, নবরাগ বিরাজিত নবধানা আগে। नवडांगमत्र किन्छ । नाही (यमन, নয়নে ত নিরীকণ না করি তেমন। नाम এর উহাসতী সহদয় জন, ন্থে এছা দেই উষা নিত্য বিলোকন कदङ याङाहत किन्तु, यनि छ (म धनी) নবর্বাগমর ছের দেখছ যথনি। (कारना देश) (मदे उँया जभा (य नाहीह, व्यवन गणिकावीर्या गर्छ बक्रमीक। उत्भागग्र<sup>क्र</sup>निगीथनी जाहर श्र**ं**कन, মিলনে কম্পিত ধরা ত্রন্ত জীবগণ। নির্মাল গগন পরে চাঁক হুশোভন, निमाटि छेमिछ छेषः नग्ननत्वन। খল দেখি সহদয় এ উষা কেমন ৷ এ হেন মনেশহারিণী রমণীরতন नवतार्ग भूर्न खरव म्हार्थक कथन? छमग्र इरेटव छेबामजी कज्कन,

माहि करत कान कक वन कारशक्ता। करत श्रक्तिक कीरन एम श्रेजीकन। जाती कवि धानीनिक् अता छेशानजी, আলোকে উজ্জ্ব ধরা জীবে ফুর মতি। কিবা কমনীয় কান্তি কছি কছিছুর, লজায় না বাহিলাঘ সেই সে চতুর বঙ্গুরাজী কর হতে থাকে লুকারিত, পাছে উষাসভী রূপে হয় গে। नाक्रिड। করি থিলোকন জীবে উষা আগমন इहेन उथनि जाता श्रामिक भगन। माधी'পढ़ পाधीगंग পनि इष्यम. উযাসতী আগমন করিছে খেষেণ। জাহ: কি মধুর অর অবণরঞ্জন, अवर्ग मा करत जुल वन कात मन ! वाजाइकि छात्र कदि यामिनी याभन-भिन भारे:'भारत मधु दर्निष्ट असन। क्लान विरुक्तम वीम मार्थात छेशात. চকু দিয়া পুক্ত ওচ্ছ পরিকলে করে। द्रकिवद्रवर्ष हिमा निक श्रृक्षभन, নিযুক্ত বিযুক্ত ভরে সে হাটির জল অংখ ধরি পু**দ্**ও-ছ রবির কিরণে, শুকাইছে পুজ্ঞুলি আফুলিত মনে! प्रकृत निकृष दन था उक्षन दरन, ছিন্নভিন্ন ছইয়া গো লোচনযুহালে. হবাক্ত হাণারিমিত দিতেছে যন্ত্রণা: করি কলরৰ পাখী করিছে মন্ত্রণা

শাখার পানিয়া বেন ভগ্নবাদ তরে, করিবে নিশাণ পুনঃ মে নীড় কি করে। कर्म दिनगीन अिहीमितक ममुमिन, নর-সূথ-সিক্ল-নীর উথলি উঠিল। शाउक्षन शहाकरण मनःशम यात्र, ছিলা আকুঞ্চিত হয়ে প্রভাকর সার मश्रकात महीर्य पन पिना करें। देश নরসমূহের হলে। বিক্রুরিড হিয়া। জনরবে জনস্থান হখল প্রতি, নিলয় লইয়া সূবে হলে বাবেলিত। পুংগীজন ছংখনন ভগ্ন গুছোপরি, ন্রেয়ে দেখিছে তার গৃহথ্নিমরি। একং নি যার সাবে প্রভান্ন বলে, উৎপটেত হয়ে পড়ি রহে ভূমিচলে। में जातार गाहि ४० (एटलभूमि जार জমনীর গ্লা ধরি কবে ছাছাকার: নোন স্থানে কোন জন ভগ্নগৃহ তার উত্নাক্ত কবিতে গৃহ পুনঃ সংস্কার। বন্ত্ৰার তবে কেছ কাটে শাখী, সারি সারি রহে পড়ি নাছি পথ রাখি। कननी नैर्पाष्ट कांशा पुकद कु उत्तर, जारमिन विनर्त्री (म राग रम यामिनी शरः। লৈরে ছানি কর কাৰু কাঁদিছে জননী, তরীমান্নে বঞ্চিত হইয়া স্থতমণি। ঁ বামেতরে কপোল রাখিয়া কোন ধনী, মতীৰ চিন্তিত চিত্ৰ সক্তৰা ভৱণী

মগন থকার নীরে হইরাছে বলি,
নাহি জন্য কথা মুখে ভাবিছে কেবলি।
মোহন ও রামধন আনি উপত্তি,
হইল বাসায় লোঁছে মন চমকিত।
বাসা-গৃহ ,উৎপাটিত আছে ধরাতল,
গৃহোপরি পড়িরাছে পাদপ সকল।
কিছুদিন দে প্রদেশ করিরা ভ্রমণ,
অন্ত দেশ ভ্রমিবারে উৎস্কুক মোহন।

## পঞ্ম সর্গা

"I e gust of joy, the balm of wo, .The soul o' life, the heaven below, ls rapture giving goman."

সোম্যমূর্ত্তি নর কোখা? যাহার নয়নে, পড়িছিল মনোরমা মোহিনী ছুজনে। হে পাঠক সন্থদয় ভবদীয় মন কোমল কম্বল সম, নাজানি কেমন করি তব সরিধানে সে কথা কহিব-কেমনে বা ভার দশা দিখিয়া বর্নিব। প্রকৃতি বিচিত্র শোভা গোধুলি সময়, नित्रीकंग उद्ध इत्य डेश्यूक-क्रमय গমন করিতেছিল তটে সরসীর, (महे सोयामुर्खि नद धकून महीद। সভাবের শোভা দেখা দূরে গেল তার, মোহিনী দামিনী হেরি সংসার জাঁধার। মোহিনী সেক্ষি উবি যে ছক্ষর নয়ে नरेग्रा किलिन अर्थः व्यक्कांत्र स्ट्रा खिमिछ नयमार्ग भूनाका मध्याप्त, অন্তর বিশীন্তার মোহিনী চিন্তায়। ्रवहक्षण मरकायूना शिष्ट्रिया भेषाया. আছিল সেজন জেনো যেন মুতপ্ৰায় ৷ शरत कान **ह**रेन करह कथा मन मरन बाह्न

ं (काथा जामि । कि जानम। हिया क जानिन, , "द्रान् नदाभटम गादत दमभटन विश्वतः। ' আহা কি অপুর্বরূপ<sup>ী</sup>কি কান্ডি, মধুর, '' नेम्पर्याय कि (मीम्पर्या किम्प्रांनि पृत्र। "বরণ চম্পক পুষ্পা বরণ জিবিরা " आष्ट्रांकि माधूर्या मित्र महनारमा प्रतिक्रा । ''বরণ উজ্জ্বল গৌর, স্থাণ্ড কজ্ঞান, "জিনিয়া বরণ শোডে শিরোকছদল। " काम हिक्शिता हुन गंडेब बंबर्ग, " जनिकारी लिएक एम (वर्ज भवामत्म। "কি চাৰা যুগল ভুৰা কাল চিকণিয়া, " শোভাস্পদ হরে রহে শুভি পরশিরা। " কি সুমার সাঁধি চুটী তার নীচে পোডে, " ভৰ আৰেণণ মিছা সে তুলনা লোভে। " চাউनिष्ठी कि ऋषत, हारित यथन, " मम जरक इरमो (यन अक्षा विविधा। " वह तमनीत पृष्टि . मिनिजाहि जामि, , पर नगान र " अमन्त्री (ङा कारू माहि इस सनि-गामी। ें "क्विंगों हिक्ने मनि करत्र छन छन, ं " रेक्ट्रा बन जना दरेति तम जाना गुगन। " जांचि इंडी चिडमिझ मनि म दिल्लान, ं त्म उद्गेरकार्यक्रि शिक्ष मार्ग गंउरगाम। " जुड़ाक जयद्रशामि छ्नेक विविका, "জনুগ শোভিছে সহ ইক্ষর নাসিক।।

"কণ সক্ষানি মনে বেন জান ছয়, "অধ্য-বিশ্বিক। কোডে অধ্যান ক্ষয়,

ি" পশিতেছৈ যেন তায় হচাক বিহল 🥫 🕆 "জয়ুগ বিশুত পাখা নাদা ভার অন। " নাসিকাথাভাগ চঞ্ছ নাসারন্ত্র জাঁথি, " তাই নাসা নির্ধিয়া মনে গণি পাথী। ' একান্ত ৰাসনা মনে হয়ে বায়ুচর, " সুখে ভূঞ্জি গিয়া তার বিশ্বিকা অধর। ' किशा इरत मभीत्र भिनि मभीतर्ग, " সার্থক করি জীবন সে মুখছুম্বনে। "কিম্বা অর্থকার কাছে করিয়া গমন, " इरेट्रा ञानत्म अत जल-जाखदर्ग। " অরে রে রতন ছার! কি কপাল তোর: " আছিল রে হদরে শুয়ে হরে সুৰে ভোর। ' ওরে রে কাঞ্চি চিকণ কি প্রম্যেদ তোর, " দেখি হুখ ভোর হুদি ছুলে উঠে মোর। " अरत रत मृश्रंत श्रंषी कश् कर् चरत्र, "বোষণা করিছ সুধ প্রকৃত্ন জন্তরে? '' কণ্ঠহার, কাঞ্চি, আর নৃপুর ভূষণু, " সমধিক স্থী তোৱা বল্ কোন জন?" कर्श्य मर्ग कति कहिट्ह उथन, " এ প্ৰশ্ন জিজাসা কুর ৰল কি কারণ 🖡 খদরের রাজা হরে জাঁছি ছদি'পরি, कामिनी कमनकिन कमनीत कति।" কাঞ্কির "এত নয় করা ক্ষাহার, रित (क्थ गय किशका किया **हमें क**ाहा।" সুপুর মিঠাল বাজি কহিছে তথ্য ''কে শোনেরে তৌর মুচ গব্বিত বছৰ্ 💡

र्श्तरम क्री करण स्थी कान करत, वर्ष्ट्रे कर्श्यात काश्वि जतनिक नाता। त्य कामिनी अम्भार्कः नाष्ट्रि (मक् च्रानः) বিষকুত্ত প্রমুখ জ্লি, পাছা আম।" धरत रत नृशूत रखांत कथा ताथि भिरत, তোরি সহচর কর থাকি পদে যিরে। িকি কহিতে কিবা কহি হইতু পাগল. करव: (ब्र (मश्विव श्वाः भन जोरत वन। **এट्टिन तम्बीत्रक मश्टर्गारंग कीचन.** कीवन बनिया गिन विस्तारण भद्रन। वैंकि यमि अक मिन मरस्राणि हेरात. **फुक्षिर स्मीत स्थ जमा**त मश्मारत।" নিজা নাহি ছলো তার চিক্তিয়া কামিনী, इंडे करें भरगाशिक भारा निभिधिनी। निजा लिखांत उत्त मुनित्न नत्रन, মোছিনীর শুভিকৃতি করে নিরীকণ। थना (त अनम ভোরে नंज धनावान, তোর তরে এ ভূবনে যত পরমান। घउ तम अनिकेशाउ इत्र अ प्रतान, कविकारमं ভाति जात गनि मान मान । তোর क्षताम यादि करतरह धीरात, जाबाब अरबाम किरत क्ष्रू जारह जान कंड कुनकाविमीक कह नर्वमान, কত ভূবকের গলে দেই শেষকাঁস। कुछ 'श्रक्रांबरद कर्त वाष्ट्रभ 'नवाज़-कड़ हुक छन करते नाकि लात बान ।

পাপ পিশাচের যে রে এত প্রাক্তম, ছুই তাব মুদ হাধু নাহি তার জম। कि गानी हि छानी तम इडेक ना त्य छन, তোর করে কভু কার নাহিক মোচন। किया अ सम्मत मत । काशा वा निवाम ? জানিবার তরে স্থী অবশ্র প্রয়াস হইয়াছে তব মনে? তব কুভুছল তৃপ্ত করা মম বাঞ্চা জ্বানছ কেবল। वाम अद भ्वाश्त नामछी জीवन, গণনীয় বাক্তি ইনি অর্থ জ্গণন। চিন্তাপুর পলিআম নিরীক্ষণ তরে, त्रहिरहन वाम कति रम भन्नी छिउँदाः। এমন সময় কাল হইল মে ছিনী সুথ-সরোবর তার শুকালে। ভামিনী। পরদিন প্রভাষেতে করি গাজোখান, জীবন আপন সঞ্চী করিল আহ্বান। বসন্ত নামেতে তার প্রিয় নহ্চর, আহ্বানিবা মাত্র এলো প্রভুর গোচর। কহিল জীবন ভার "শুন হে বসন্ত, " গত সন্ধাকাল হ'তে মম প্রাণ অন্ত। " কহিতে পার ক্লি সধা কোন্সসে কাদিনী, " नित्रथिष्ठ मदत्रायदत्र जिन् मोनाविमी। " जांकात जनमाधूती कर्ति नित्रीकन, ः " वाँठिए बानमा नाहे विहरन विनन। " উरात गरवार्गीयति कत गरेक्टेन " রাধিব তবেতো এই তাপিত জীবন

" नजूर। निकृत मध्य कतिव भीरमः, "নাছিক দশেহ তার শুন হে বছন।" रम्ख थलूत कथा छनि भिर्दिने, कीवत्न प्रमुवहत्नं कहिए नागिन। " ঠেকিলাম খোর দায় বারু মহালয়, " নারিত্ব পুরিতে বাঞ্চা বুঝি মহোদয়। " वहम वर्जन-वशु मण मश्यवेन, " করিয়া দিয়াছি" তব করছ স্মরণ। " (य कामिनी कथा এবে कहिছ आमात्र, "তার সঙ্গ সংঘটন অতি বড় দায়। "পতিৰতা সতী সেই পতিপ্ৰায়ণা · अकाल के बाहारियी त्मरे स्टामाहना। "পতিজান পতিধানি পতি সে জীবনঃ "প্রতি ভিন্ন পর নর না করে দর্শন। "পতি গাতি, পতি মুক্তি, পতিই ভূপতি '' मन्ति द्वारकांत्र मन्त्र करत्र मिरे मि श्वे छी। " अठिकथा नाहि यथा उथा नाहि इह, " প্তিকথা শুনি धनी श्रेष्ट्रह समग्र। \* "পত্তিকথা হয় যথা অবংগ অন্থির, " পৃতিভিন্ন পরকথা, প্রবণে বধির।" প্তি পতি গুনঃ পুনঃ করিয়া অবণ, ্জীৰন ৰদভে কছে সজুৰ বচন। " পত্তি পতি করি যে ছে হইলে পাগল, " পুতিত্ৰতা সভী কেৰা আছে ভূমওল? " নারীকাতি পাতিত্রতা গুণে বিভূষিত, " अवटन अभिदत्र शांति कारमा यरगाहिछ।

" गिरु वर्जि गंगि जोटड **अमन य**ाकस्म, " নাত্রীর অন্তর সে যেঁ জালে না নিশ্চয়। " সত্মী বৈদি করে ভান রমণীমগুল, " मूर्व होत्रा-स्रथा मना व्यख्टत गतन। " य यूवजी निव পতি छ निवास वड़, <sup>গু</sup>তাহার হৃদয় জেনো শঠতায় দড়। " নারীর অন্তর যদি হতো দেখাবার, " হৃদর-দর্পণে তার শত বঁধুধার " দেখাতাম প্রতিকৃতি জীনছু নিশ্চর, " मोडा छ १ चूं ना कि (इ. बङ्कि केंप्रू इत्र। "ভূমিধণ্ড দেখি নবতৃণ্-আক্ছাদিত, " গাডীদৰ ধায় যথা মন প্রফুলিত " जुक्किवादत म ज्यानाः, तमनीम छन, "পুৰুষ নির্ধি হয় তেমনি চঞ্চন। " সে যুৰতী পতিব্ৰতা কিম্বা পর্বতা, " জিজাসিনে ওছে স্থা শুন্হে বার্তা। " म तमशी काशात कामिनी मादत नन, " অসতী কি সভী সে বে স্থম্প ই সক্ষ " वादित इरेटव शटन, जानक ज़िल्हन, " पर्यत जमाश कार्य किया महस्त्र।" নিপুণ গায়কে দিয়া তাল বাদ্যক্ষ यात्र यथा एकान त्व वभी-नइहर्त • धनी-बाका शिह्रगांभी किंदा (बार्बा कर्म) अञ्चिति योजनी काष्ट्र करह शिष्ट् कंगा। **उमिन नम्स अफ़्-वारका निवा नाव**, कहित अष्ट, कब्रेटन कडाचित्रा जोता

कहिছ बाबूदमा बादा किहू मिंहा नह. ্ এ বিষয়ে দৃঢ় মোর আহতে প্রভার। ুঁ " ভবে দে কহিছ তার পতিবতা নাুরী ा वृक्षियात संग वृक्षि स्टेटन आमाति। " अरे जारम मम नम्रु जारह अकलम, "সে কামিৰী-গুণকথা তাহার সদন " ল্রাবণ করিয়া কহি পতিব্রতা তার, " আমি কৰ পৃতিব্ৰতা এমন : আমায় " নিৰ্কোধ ন। ভাব মনে বাৰু মহাশর, " मोब छन्यूमा कि त्म यक्ति कर्क् रहा। "মোহন নামেতে এক সুৰক জ্জন, "তাছার রমণী এই ইন্থনিভানন। ''হলধর বাড়ুর্বোর হয় পুতাবধু " खारत कृष्ठ बारत वांका वांका मधु। "উত্তম সন্ধৃতিপর হয় এই জ্বন, "ধাৰ্মিক স্থ্ৰিক অতি প্ৰিয়দরশ্ম। ''একটা সম্ভান সবে মোছন তাহার, ্ স্থীল বিশ্বান বলি সর্বতি প্রচায়। " क्रमरजब अजि (षय कतिवा श्रीकां न, 🛴 " विरम्भं खेषण जत्त्र गिन्नोहरू व्यवनि।" त्माहन विरम्धि आहि कित्रिम अवन, जीवन-जीवन हरना धारमारम बमन। वमरक किहम भटन बाका स्वधून,

ুমুখমি**তি বড় ভার** হরু°রে ভতুরা - ' मार्च त्रभी धरे एत स्टिनाइन्से है

। प्रत्यावक सामी वरहे श्राद्याद मसना।

" (माइरम्बर निर सम आहरू शतिहत्र, " वृद्धिजीनी वर्षे मिह स्वाहित इत्र। "কিন্তু হার পরিহরে এইন রমণী, " প্রাণ ধরি প্রবাদেতে আছৈ দে কৈমনি। " लंबी भड़ा मिबि दूबि इस्त्रह राडून, " তা**बिरंड** महित्म भारत मि धन अडून। " किया दुबि यय ऋर्जा छारगा ताहे जन, " ত্য**জিস্না বিয়াহে হেন্ র**মণী-রতন। "তাহার অবর্ত্তমানে পূর্ব মনোরখ " করিব নিশ্চয় আমি দেখ ছেন পথ। " ना इंदें जात करें। बाइन-कामिनी,-" जेटर्वत जमाश कार्य कि जाँटह सिनिनी।" কৰি কর অর্থে হয় সকলি তোমার, দামর্থ্য না হর অর্থ ধর্মু-অবতার যথার্থ-সতীর বিতে সতীত্রক্ষণ, পতীর সতীত্ত হরে কৈ 📆 🕳 এমন ? ্প্লন্তক ,উপর্বিত ভুক্তিকী মণি জীবন থাকিতে তার কে আহি ধর্ণী रतिएक नक्तम वन १ किरना दे रक्तिन, হরিতে হরহ অতি সাবিত্রী রমণী। कीरन-रहन अनि रनेखक्रमात्र, সভাবি কহিন তার ৰাক্য অধাধার। · "পতিবতা ষতী যদি <sup>"</sup>হয় এই নারী, "তবেতো তাছালে নম্ট করিবারে নারি। " সতীর সভীও বৃদ্ধি হরা বার হরে;

" मजीव मजीक यनि इता यात्र वटनः

" कगमीन-महिंबाटन इटव कि नहींब,

" यमनत्थ समुद्र मिछोचेका गायः,

" প্রহার ক্রিটেব ক্ষি নিরয় মাঝারে,

" সতীরে করিতে জ্রম্টা না কছ আমারে।"

राजा-बाट्ड बाकाइटन मिन्ना छेड़ारेमा,

कीवन वंगरस करण उरव मकाविशा।

"তোমায় সুবুদ্ধিমান বলি ছিল জ্ঞান,

"শিশুদ্য কথা শুনি এবে তবছান।

"কে কছিল ভৰ ছানে নিমন্ত্ৰ-সম্ভোগে

'· সতীর <mark>সতীত্ত্বারী জীবন</mark>বিয়োগে।

'' জ্ঞান হয় পুরাণেতে করেছ অবণ.

" वृद्धिखरु कत्रिवादि कि जाए अमन ?

'' পুরাণপ্রসন্ধ-কালে প্রতায় যে করে,

" तुबिছ। त्व जिथ नम हिंदू (मरे धरत।

" जल्दाक् की वीरमंत्र कुनावात उरत,

" পুরাণলেশকু ফাঁদ এদেশ ভিতরে

"পাতিয়াছে জেনে মনে, কুজবুদ্ধি পাখী

" পড়ে গিয়া হেন ফাঁদে আছা মনে রাখি।

" बरेटन अटमर ४२म काथा जाता तत ?

" দেহৰংসে আত্মান্থিতি শিশুবুদ্ধি কয়।

"ৰড় ৰড় চিস্তাশীন সুবিষ্ণু পণ্ডিত,

" ঈশ্বক্তি বিষয়ে স্সন্দিশ্বচিত।

" याचात्र आहरः। नृष्ट् नेचरतः विचान,

" যাহার বিশাস আহে অগস্থলে বাস:

" তাহারা সভত বিশ্ব ঈশ্ব-চিন্তার,

" ঐহিক হুখের তরে যুত্ন দাছি পায়।

" বড় কাৰ্যা অনুষ্ঠান হেন লোক কাছে, া আশা করা সম আর ধূর্যতা কি আছে? " অবনীমণ্ডল ছিত যদি সর্ব নর: '' ইশ্বধেয়ানে লিগু করিত জন্তর " কোখা পাইতাম ভবে সব জনস্থান, "মজার সংসার হতে। অরণা সমান I " অধিক বসন্ত আর কি কব তোমারে 🦠 " अग्रनीम शहकाम कथा अ यापाद " শিশুসম কথা জ্ঞান হয় জেনো মনে, " केश्वत थाकितन कर्के कच्च ध चूर्यान 'নছিত সূজন শুন, জনক কথন ·· পুলেরে পীড়িতে এড কৌশর্ল স্থাপন " कतिएउ भारत ए मधा १ एए मस्याम् " (म कि (इ कथन मक अननी-अनश-'' স্থিত পুত্রবারে নিতে ? ঘেই দয়াময়, " তার ছেন কা্যা কছু সম্ভব না হয়। " দয়াময় নাহি পারে অন্ধ সৃভিবারে, " मश्रामश क्रन कि ए शक् करत कारत ? "অতএৰ কহি শুন বচন স্থার, " त्रेश्रदत विश्वाम करत् जन्म वृक्षि मात्र। " जीवत्न यमिन जीत्व अरह दुक्तिशीन, " मकात जरमारत मका नूठे म किन। " (य कार्या माधितत छ्थ सन्दर्भ छन्त्र, " (म कार्या कदर मथा निर्द्धा-समग्र। " य कार्या माथिटम स्थ तम कत्रदम भीभे? " এমন যে কয় তার সহিত আলাপ " 🦤

जीवत्वत कथा अनि वमसक्षीत्र, অপ্ৰতিভ হলে কছে বচৰ সুধার। " আৰু ক্ৰেন শুনি বাবু তব অন্যানত, "कगनीरमं मरशासम कत्रह मङ्ड। " পুরাণপ্রসঙ্গ হলে উঠে ভাব-রস, " সে প্রসঙ্গে আজি কেন এমত বিরস। "কত উক্তি অহুরাগ প্রকাশ পুরুষে, " সে কার্যো বিয়াগ আজি শোভা নাহি পায। জীবন তথন কছে মৃত্ন মূল হাসি, ন্টা মির-রেখা তার প্রকাশিতে আসি। "শুন্তে ৰগন্ত কৃছি সুসার বচন. ' বোক। ভূলাবার কাঁদ ঈশ্বরে পূজন। " त्रेषरत यनि मा भूकि यउ मूर्धमन, " মোর অপ্যশ পৃষি পৃরিবে ভূতল। " तकिएक मश्मारत कर्व मूर्यमल मरश, <sup>প</sup>তাই হে বসুত্ত রহি সভায়ে সভারে। ''করিবে তাহারা ভর ঈশবে নিতাস্ত, " করিবে অভজি ষোরে ভাবি বৃদ্ধিভাগু। " प्रिटिक कारमज धन शृक्षि (६ नेचरब, " नेवरत काविन। क्ष्रू अ मम 'अहरत। " नेपटत ककर छत्र. मरूरः भानद " मजानू हि पाइ। अम मिष कदि मब " मानगरामना ऋष मा जन्न मेष्टत, " नेपरबद जारा कुर्ध नहिन जासरत। " ब्रुमिंठ कब्रिया जीवि यटन विम् शाहन, " ভাবি হায়ু রম্ণীর হচাক বরানে।

'कडायां के केंद्रि चरव ध्यानि वेचरत, " বাসারে **প্রণা**ম করি জাঁনিছ অন্তরে,। ' বাখাজাতি পুৰুষের ঈশার সমান, '' ধর্ম অর্থ, কাম, মোক্ষ, লক্তি নারী ছান। ''या किছू ज्थमाम्धी जाह् अकूनत्न, " (मिंग तम तमभी-तक अनक अवरा । " বসন্ত হে ভূমি অতি বিশ্বাসী আমার, ''বন্ধুভাব অনে। জ্ঞান নাছি মদ আর। " গৃঢ় কথা তাই হে তোমায় বলি আমি, '' इश्र न। अन्द कथा (यन जनागांभी। "এরমণী সঙ্গ যাতে ছয় সমিলন, "উপায় ভাব ৰসন্ত তাহার এখন।" अंदर्भ अभव कथ्। दमस निन्धिः, -জীবনে কছে তথন বদন দশ্চি। "ওগো বারু মহোদয় আপনি পণ্ডিত. " তর্ক কর। তব দৰে না হয় উচিত। ' कारलक्ष वहन नाज कडि अधात्रन, " गार्थक करत्र हु बादू जाशन कीवन। " যা কছে পণ্ডিড জ্বনে মুখের হা নীতি, " মুৰ্ষে অন্তৰ্ভণ করে পণ্ডিত সুরীতি। " जाभनात कथ बाबू ताबि बिट्टाभिति, । " उन मरक्ष ठर्न कति किन्। दुक्ति धति ! "না থাকিলে মম পুর্বে পরকালভর, 🚉 भोगामिनी समनात्री सत्त सक्तमत्र " मिजाम मिनन कति कठ स्य क्मरन '' কহিব এখন তাহা নাহি আংগেমনে।

" মা হবার হইরাছে চারা নাহি তার, " ज्ञानका मिर्जन धर्टन , इरेन आभारता " যে আজা করিবে বাবু করিব সম্পন্ন, " পরকাল ভারে মন মানস আচ্ছর "কখন নহিবে আর কহিন্তু নিশ্চয়, " মানস করিব সিলি নিউয় হাদয়।" এত বলি প্রভুষ্বানে লইয়া বিদায়, विमिन वमस संभा मिलन छेशाता। অপরায় সমাগত ছেরিয়া বসন্ত উঠিল ত্বরিত মন যুক্তি করি অন্ত। नाशिजिमी वाम अविविद्य हरन खुदा, একটা বাদক সচ্ছে ভাবি ধরাসরা। वानक बमार करह किছू मृत शिक्ष्री, " অই নাপিতিনী বাটা দেখুন চাহিয়া।" এত ৰলি ৰসন্তৱে প্ৰাস্থান করিল, নাপিতিনী ভবনে বসন্ত উত্তরিল। "নাপিতিনী মাসি" বলি করিল আহবংন, श्रुनिन गुरैंदर दात नागिवाहयान। বাহিরিল নারী এক বয়স আন্দাজ তিরিশের ন্যুন নছে গঙ্গে নানা সাজ। যৌবন-প্রস্থান তার হর্মে বিক্সিত, নবরাগ ধনে সে গো যদিও বঞ্চিত তথাপিও মাধুর্যোর কিছু আছে ওঁড়া, ত্রমা হর্ম দে যথ। ছইলেও বুড়া बारक अधिकात करि किছू श्रुटमांखन, হেরিয়া বাহারে ভাব কতই নৃতন



উঠে वर्न मनै किटिंग ; वश्र किटिंग कि नव उद्योदनामञ्ज इत्र (देति . अ त्रमणी। " भाकामाका वर्ग हेक छेड्डान शामन, म मोम्मर्ग काष्ट काथा भाउत डेड्यून ? वननमध्म डेवि कर्ब छम छम. পুর্ব দৌন্দর্যোর এবে পরিচয় স্থল। অপান্ধের ভাব তাব হায় কি স্থলর, ৰণীভূত করে যাহা যুৰক অন্তর। ्षककारन मरनाष्ट्र इंगे शरमाभव, তুলি শির গরিমায় র'তে। নিরন্তর। সভাব বন্ধ কুলান এবে গেছে তার, मी जागा स्थारण जल इत्याहं यादाता তাই ভারা নতলিরে হ'য়ে মিয়মাণ, निज अन वारम एकि वाधिशाहि मान। श्रहन दमनी वक वमछ-मनुद्रथ, দাঁড়াল ভলিমা করি হাদি হাদি মুখে। দাঁড়াল শরীর তার হেন ভক্তি করি, मर्गाटकत मेन यान लहेटक हित्र ; क्लिकिवध्रत स्त्रि वमछ क्रमात्र, मञ्जावि कहिन जात नहन स्थात। " ওগো নাপিতিনী মাসী ক্ষ তব সনে, " আছে গুপ্ত কথা কোন কহিব গোপনে। "" অতএব চল বসি তব দরজায়, " গুপ্ত কথা কহী নয় বসিয়া রাস্তায়।" শুনিয়া বসস্তবাক্য নাপিতিনী কয়, " जनाथिनी बारम जाकि डारमज छमत्र।



" जनाविनी नामिजिनी महन करा, " প্রিতের সঙ্গে কঁবা রাখালের যঞ্চ। " यात्र मुक्त संबि चांकि छेठियाहि धारि. " নিভা তার মুখ আমি দেখিব প্রভাতে। " कि कथा जारह भी बाद उप स्थान गरन, " চৌকি আনি দিই বৈস, কছন গোপনে '' এ পথে কদাচ লোক যাতায়াত করে, '' কহুন কি কথা আছে নিঃশন্ধ অন্তরে। '' এত বলি নাপিতিনী বাটী-অভান্তরে, চলিল চৌক্লি আনিতে দহাক্ষ সংরে। ক্ষেরিকবধুর কেন, ছে পাঠক জন, वनारक बनरस बादा ना मतिल यन, जवश्र तुरम्ह छार्त माम्ह माने, (तरम म समक जान हित्स नर्भ-शहे। मंगवासं वाणिडिनी अरविगंता घरत, কার সনে কছি কথা যেন মুহুন্সরে বাহির করিল চৌকি বাঁধিল শিক্ষ গৃহদ্বারে, মুখে তার হাসি খল খল। महिक्ट बार्शिंडिनी जानि होकि निम, विमन्ना वमस लाइ श्राटन मक्षाविम। " ওগো মাসি ভন শুন জিনাসি ভোমায়, '' ( পরকর্ণে গুল্ক কথা নাছি কেন যায় ) " মোহন ভৰনে তৰ আছে ৰাতায়াত ? 🦈 " हिन कि स्माइन-मात्री कई स्मा श्रेष्टा । ' কেমন স্বস্থাৰ ডার বিৰয়িয়া " उर्गा गांत्रि वन वन चमानि क्रांनर्। "

কছে সে কেন্দ্ৰিকবধ্ খুচকিয়া ছোদি, **बृह् बृह् बश्च वारकः वभरख मखा**वि। " ७ त्या "वाव मत्यामग्र- त्यांचन-खनत्न, '' সদা করি যাতায়াত জানি পুরজনে। " গোহন-রমণী সহ আছে পরিচয়, ''কি গুল তাহার কব ওগো মহাশ্র। " যেগুণে দক্ষের গুছে 🕍 তিনিন্দাতরে, '' তাজিল সভী গো দেহ নিভিন্ন অন্তরে, " যে গুণে জানকী নিজ প্ৰতিভক্তি তৰে; প্পতিসভে বনবাসে গেলা হর্যান্তরে: ' যে গ্রেণ লক্ষীর এত ভাবে সমাদর, া যেই গুলে সরস্বতী পুডেল সর্ক নর . াসে সর্ব্ধের গুণ তাহে রহে উভ্নিয়া, া দে গুণ বর্ষিৰ আমি কেমন করিয়া। " (य श्वरण इमगी कांडि मानददद्र शीत्र), · मिरे छा। विভृतिका अरेगा स्थीता, " (य १६० तमगी इ.स. नत-कर्श्यात, .. "সেই গুণে সমুজ্জ্বল অন্তর ইছার। " বাগানে পুৰুষ জাতি যন্ত নারী-গুন, ে"বসি কেই যদি তায় করে দক্ষ গুণ, "তবুও ভাছাত গ্ৰাছয় বৰ্ন, " আদি নাপিতিনী তাহ† ব**দি**ব কেমন। " कूनवाना ज़ीशी नाती कथा बूट्य उर, ' मतीय निरुत्त अनि आति कियां कर। " नानिजिनी-कथा अनि वमस् राम। ज्ञाम-द्रविद्याक सूर्य (यममे)

370

क दबना वम्दन वर्षक् बटके। प्रान मुक्त, শিশু-জাস্য হয় যথা পেলে তার তুক। চালাকি ঢাকন দিয়া বদনে তাহার, কথা জবশৈষে ৰস্ভ কুমার। " কহিছ তুমি যা তাহা পারে সত্য হ'তে, " পড়েছি বিণাকে বিড় কছিব কিমতে। " আমাদের এক বাবু হেরি সে কামিনী. " পাগলের প্রায় ভাবি দিবস মামিনী। " यनि ना ज्यूहोत मत्न हत्र मचिनन, " নিশ্চয় ব্রিটান বারু ,আপন জীবন। · " অতএৰ ওগো মাসি ইছার উপায়, " করিতে হউবে তব কহিছি ভোমায়।" छिन नाशिजिनी-वर्षे मिन कार्त शक, বসন্তে সম্ভাষি কছে তাছার পশ্চাৎ। " ওগো বাবু মহাশয় আর বোলো নাই, " আমি সে কেমন মেয়ে জানেন গোর্মাই। ্" বয়স হলে। যে এত বলুক্ দেলি কেছ, ু" আমার চরিত্তে কাৰু আছেগো সন্দেহ। " অনাধিনী নাপিতিনী থাকি একাকিনী, " छमत भूति भाषि मिनम यामिनी। " धानतीत (धामुख्यं मम कर्ष नग्र, " আপুনি বলিয়া তাই রকা মহালয়।" কৰি কর ভাৰ ভাল খোল দেখি দোর, হাতে সাল বলে চোর "নহি আমি চোর।" वंगल दुविद्या मर्ग होका- मूहाख्वा, मिन नाशिजिनी-कृत्व मर्कामायहरा।

(इति (होशार्क मूर नांशिति नी मन. राला अवीज्ञ ननी ज्ञात (यमनं। না হইলে কেন জব নাপিতিনী-মন, গলাতে মানব মন কি আছে এমন! স্থীমন দ্রব করে পূর্ণ স্থাকর, ञ्चभीयन ज्ञव करत भूछ मशुर्वा , किन दोशाधक-पूर्व विशेष एवस. कि अवा शाह छुवान मिठील अमन ? যে পামরে কোন জব্য জব নাছি করে, मुक्ता क्षू क्षू क्राइ आहता मन क्रता किरम मठा मिथा। करत ? मिथा। मडामम ? किट्रम धर्म जाधद्वग ! जाधम ध्रम ! এ প্রশ্ন উত্তর দিতে চরহ ত নিয়, দোবছর-রজত চন্দ্রমা প্রীতিময়। कर्णा न-वमन कतिशा नित्रीक्रण, নাপিতিমী শির নত নাসরে বচন। চাতুরীবসনে ঢাকি তাছাব বৃদন, বনতে মুচকি ছাসি কছিছে তথন। "कि वनिव अर्गा वांबु उव महिशारन, " अक कन धनी कर्के शाहेरहन थारन। " প্রাণ দিয়া উপ্রুগার করিবারে হয়, "মোর অপ্যশে বল তবে কিব। ভর। "যাহাতে তাঁহ্বার হয় পূর্ণ মনোরথ, "করিব উপায় হেম করিত শপথ।" ঁবসস্ত তথন কছে "শুন ওগো মাসি, 🦩 " হলে। তৃপ্ত প্রাণ শুনি বচন হিত্তাশী। क्षेत्र " মোছন-ভবনে তব এখনি গমন <sup>#</sup>ं कतिराज इंदरिव ७८१४ **समस**्रहमा। "চলিত এখন আমি আপম বাসায়-" সন্ধাকালে আমি আসি ডাকিবো তোমাঃ "यनि कृषि कार्या निक शाद कदिवादन, " क्रूरे मंख ठोका वांत्र मिटबंगं क्यागारत । " এতেক কহি বসন্ত করিল গমন, इता छेडाडेन खाँउ नाशिकिशी-मन। **अक्रिक अर्थामाञ जमामित्य छत्र**, আকুল করিল অতি তাছার ছদয়। কছে কথা নাপিতিনী নিজ মন-সানে, " विवय विभारक आधि (हेकिन अकर्त। " পতিত্রতা সতী অতি মোহন-রমণী. "কৃষিৰ এসৰ কথা না জ্বানি কেন্দ্ৰ। " জথবা আশন্তা কিবা দিয়া প্রক্ষোভন, "ছরিতে তাঁছার মন করিব যতন "যদি কার্যাসিদ্ধি হয় সভিব রতন, "ना इडेरन कार्यामिकि छन्न किया भन ? "টাকা দশ ফলে! লাভ আমার এখন, " बिर्द कि थे है।को इ'रम विकल घउन।" गांड भाँ । जावि नाभिक्ति भिना घटन পরিবিদ ধৌতবাস অতীব সত্রে। দাঁডভরা কালমিনি গাৰ্ভরা পান, जनक हुर्गुष् करत (रुब्रि कार्ड थान। চলিল गांविमी गैख ( नाशिजिमी माम ) মুদ্ধ কাতে আতে ভার অবিরাধ।

(रामहे। होनिया जाध पंत्रिया मर्गाम, দৰ্শকে কটাক্ষবাৰ হানিয়া স্থৰে: ধুষ্টতান, পরাকাষ্ঠা করিয়া প্রকাশ. /চলিল দামিনী, তরা মোহন-জাবাদ। (इ १/४० मझन्त्र अवह वहन. খেমিটার স্থবিশাস না কর কথন। যোগট বলিলা খারে কর সম্বোদন, যোমান তো নহে সে যে চাতুরী ঢাকন। चनश्य अज्ञाख्य द्रमनी-नर्मनः मत्म कति (जारमें) चैट श्रव-गम्म। ঘোষটা তো নাছ সে যে ইস্বাজাবাস, ভটত হাল ঢাকিতে ঘের, যোরা বাস ! উপভিত নাপিতিনী মোহন-ভবন, " क्रीया भी। वस्त्र भारत " भारत मश्चायन। (माहिनी कुक्त ही (इथा विनिष्ठा विकास) নিযুক্তা আছিল। রামায়ণ অধায়নে। दामाग्राण मिटे जाश्म शिक्ता कामिनी, यशांग्र जार्गाक वान जनक-निमनी (विकिञ) द्राक्षमीभएन मनिमदमन्। वाजी गारक भृगी राज ब्राचन वामना। जानकी-इ:थ-काक्रिशी कति व्यथात्रन, মোহিনী-অন্তর যোর বিগাদে মগন। नवनीछ मम मब बाद्यांत् (कामल, তার হাদে পরহংখ যেন রে অন্ন। क्यानिनी शक्त इत्र कर्छक त्यमन, পরছঃধ 'কোমলার অন্তরে তেমন।

পড़िতে পড়িতে हेकू जल नीत छात्म, সীতাহঃখ সহ নিজ বিষাদ প্রকাশে। " छर्गा मा कानकि नजी दमगौमध्रल " রমণীর শিরোমণি তুমি ধরাতলে। " उव द्वःथ मान निक इश्रथंत्र कृतना, "করিলে পলায় হংথ ইন্থনিভাননা। " यागीत विष्णान-यांग कमग्र-मायाद्य, " পুনঃ শক্তপুরে বাস পারাবার পারে: **্মধ্যে মধ্যে চেডিদের কথার মন্ত্রণা**্ । মধ্যে মধ্যে দশাক্ষেত্র কাম-উদ্দীপন।; "কতই যে ধৈৰ্যাগুণ আছিল তোমান, "তার কিছু জতুত্তর হয়না আমারি " मक्तारमित्र जक जाश्म क्रव रेश्या (गरू, " यस द्वाम इत्य मृत जाहि कि मत्म ह। " अमन ममद्र माणिनीत वाकाखतं, প্তছিল মোহিনীর প্রবণ কুছর। সুণ্ডোপিত গাজিসম উঠিল মোহিনী, मिथिन मधुवंशीत माँकारत मामिनी। मामिनीरत पृष्ठ यारका कति मक्षायन, কহিল মোহিনী ধরী প্রকৃত্নিত মন। " धामा ना शिक्तिनी वर्षे गामा कि इकन, " वह मिन मिष्य मोहे वन कि काइन।" मामिनी उथन कर्ड डेरच्चक धाकामि, "নারি গো দেখি।ত ক্লেশ যারে ভালবাসি। " ये जन्मि कर्डामानू गाइहन अवारम, " आंगितम अ वारमं मम हरक कार्या आंत्म।

"এ হেন থেবিন তক প্রকৃত্ত কমল, " यि रिया - । श्रष्ट्र - मधु करत हेम मल। " এ ছঃঞ্ কৃহিব কারে.তাহে নাই অ্লি. " হতাশ তপন মৃধু শুষ্ছে কেবলি। " कत (कांध कि कंतिव यमि वनि जामि, া অতি অর্নিক জন হন তব যামী। " ছিট। ফোটা রম বোধ থাকিলে তাঁছার, " এমন নারী তাজিতে ইচ্ছা হয় তাঁর ?" প্তিনিক। निज कर्न क्रिया अवग, মোহিনী তখন কৰে সন্তাপ্ত মন! " अर्गान नाणि जिनि निका ना कह नारथह, ' সকলি জানিবে মম অদ্ঞের ফেব। 'মম থেম্মর ওবো দরার সাগর, ' নাহি কর নিনা তাঁর না জানি অন্তর। াসহিতে সকল কট পারি এ ভূবনে, " নাথের নিদ্যা শুনিতে না পারি অবণে। ' দামিনীর মুখে আর ফাূরে নাহি বাক্ (माहिनी छाषिश निन नाशिजिनी काक। वह करके पूर्ध जात कथा वाहितिन, स्माहिनीदत अरे ऋरण भटत मञ्जासिन। " वागी साद्रु नेर्जमनि जाहिन यथन, " তাঁর নিন্দা শুনি কর্ণে স্থানিত অবগ। " वर्षादतक हूरमा गंज इरेशाह काम, " এবে নিন্দা শুনি তাম হা পোড়া কপাল 🤃 " জন্মে কি ক্লোধ অস্তবে 🏲 ক্লেশ দিনকত, ্ " কোৰা নহে দেই ক্লেশ পেলে, মনোমত

"রসিক পুৰুষে বল, ছুধ্ বিগুণিত " इंग्रे जना माल (क्षेत्र इतन मश्यक्ति)। "অপর পুরুষ সহ প্রেম যে নারীর " নাছি, ওগো, জেনো তার বিফল শরীর। " সেঞ্চন প্রেমের খার কড়ু নাহি খারে. " প্রেয় কি অমুদা ধন নাছি জ্ঞান তারে ৷ " আরো দেখ তৰ ছংখ নাছি যে ভাবিল, " তার সনে প্রেমালাপ কিবল হইল। '' मामिनीह कथा छनि साहिनी स्मही, কাঁপিতে লাগিলা কোদে ধর ধর ধরি। किराउ याहेशा कथा कथा माहि यहाद, তর্জন করিয়া কছে ক্ষৌরিকবধূরে। " ওলো ছুটা ভ্ৰমাত ভোরলো এমন, " কছু নাহি জানিতাম জানিত্ন এখন। " মিষ্ট কথা কহি ভুষ্ট করিতে অন্তর, "মুখে মধু ছলাছল অন্তর ভিতর। '' দূর হ লে৷ বাদী হ'তে ভাল যদি চাও, 'খভারে কছিব যদি ক্লেক দীড়াও।" প্ৰলাৰাত পথ নাহি পাচ নাগিতিনী, দূরে গেল বাৰ্জাল ভক্তাতে মেছিনী। উপস্থিত একবারে আফি বিজ যরে, দেখির বসভে বসি **রাভার উ**পরে। मिमिनी वमरस पिनि क्यार्थ पुरन थान, কৰে কথা কাদি কাদি তার সমিধান। " ওগো বাবু ভৰ ভৱে কভ ছুঃৰী নই, " मि इश्व कहिएक मूर्य कथा महा करे।

' পরের ইফ্ট গাধিতে স্থামিট প্রধার, " হলো ভাল দেখ বাৰু পৃষ্ঠেতে আমার। " কি কহিব নারী জাতি দেখাবার নীয়, ''নতুৰা বসন খুলি বাৰু মহাশয় " मिश्राचाम शृंकेरमरण श्रहारतत हिन्न, ে হইয়াছে ভয় হাড় মাংস ছিল ভিল। ' আমি জানি সতীলক্ষী মে হন-রমণী, ' ভার সমা পতিব্রতা কে আছে অবনী গ " वृक्षिमञी (म शुवजी कथ) वृत्क श्रीतः, " প্রলোভনে ভুনে দে কি বলোগো আমারে।" বলি বৃস্থাতে আবরি आहिल नाशिजिमी कहिए कमन्। विनश्ति ७ समिति लोगांव कानाह, ভুলাতে বসম্ভে কর কত্তই উপায়। াহি লবে টাকা ফিরে সে শঙ্কা লো নাই. কেন কর জঞ্পাত বলি আমি তাই। मामिनीद करा अमि वमलकुमाद, পড়িল নৈরাশ-হ্রদে কথা নাহি আর। धीति धीति छेপश्चि जाशन वामात्र, কছিল নিজ প্রভুরে কথা সমুদার। जीवनं अ गरः कथा कृतिश् वियारिक मानिक जात इहेन मधन। পাগলের প্রায় চাহি বসন্তের পানে, কহিতে লাগিল কথা জ্লান বয়ানে। " अटह मथा और सिथा शाहेब (कमत्न, " করহ উপার হেন বাঁচি না জীবনে।

" त्म श्वाबी थान जाड़ि नरेबरह आमाब, " প্রাণ্ছাড়া হইয়াছে মম দেছাগার। " शूनं। दिस इरेगा द्वा इत कुछ जिना, " জीत्त्र-कि जीवनधूना मदत्र कडू भीन।" বসত তথন কছে "বাবু মহাশয়, " সে ভার জ্যার রহ নিশ্তির হাদর। " मिनारेश जारं नुक भी म जामि नित। " কোন্ সতী দে যুবতী নয়নে দেখিব।" **टर शांठक. उमरखद्र क्**मग्न-गंगरन, পাপ রূপ চিন্তা-রান্ত ভরাল একণে সমুদিত আসিবারে সতীত্ব-তপন; **डेजन य** साहिनीत मानग-गगन চির মরি রহিয়াছে; মুখচন্দ্র তার, সতীত্ব তপন কাছে আস্পদ লঙ্কার। तमणी-वनन मह है। द्रमद कुनन। इत है यमानि श्रुधि उत्र कि वनना সতীজ-রতন সহ উপমা রবির, अमानित छेन्यां हित्व स्टमांच अतित्र १ े পাতিব্ৰভা निममिश य कृति शंगाम, কেৰা চাহে তার পানে লপট লোচনে ? राष्ट्रिक मोस्सर्ग पूर्व इन्हीं आनम, অভিরেক ক্ষমায় সভীয় রভন मणूर्र पूर्विञ े स्वर्भाः यथा नियक्त, भंद्र-त्रय-जीक्न-कटत (मध्य कान् नद? यशार्ष उपनि के हाटक मजीव शा.म ? (मर**्मधीकूछ करत सनरम विश्**रास)

.

नगत्र-क्रमश्राकारमे (मिकि शांभ श्रोह, দিনম্পি সঙ্গোচিয়া শত রশ্মি-বাছ कांपिए कांपिए पिला बड़ाकरत साथ, ধরিয়া রজিমা; বর্ণ পৌরে মনস্তাপ। দিবস বিয়স মুখে করিল প্রস্থান. বায়ুচর পলাইল নিজ নিজ স্থান। গগন তারকারণ মেলিল লোচন, নির্থিতে বসন্তের পাণার্ড মন। ममीत्रन किছूकन उज्जाखाद तरह, বসস্ত মন্ন জ্ঞাত হয়ে পরে বছে: ছঃখ ভার মমাচার কছে তৰুগণে, · ঝর ঝর শব্দে তক নিযুক্ত জন্দনে। (मनिन जांदांता जादे महत्वाहान, খদ্যোত নয়নরূপ করিয়া ধারণ। তিমিয় গম্ভীর ভাব করিয়া শারণ, সাহায্য করিতে এলো বসন্ত মনন। বসন্ত-বাসনা যে ছে কিবা ভয়কর, ত্রবণ করিলে **হ**টি কাঁপিবে অন্তর। ना जानि कमरम जामि कदिव वर्गन, শরীর শিহরে উঠে কম্পিত জীবন। कतिवादत जुलारेना कश्यानाञ्चती, প্রার্থনা করি পাঠফ তব কর ধরি कनकान ; शूत्र द्वांश्चा महा ध्वकानिता, এ অবধি দেখা শুনা বল আখাসিয়া, হয় না হে শেষ বেন; ধৈর্য তোমার निः (निविত कत्रिशाष्ट्र (म्थमी जामात्र।

यामिनी अमरातियी तकारण निजा मित्रा, रिश्वार्थात भूत द्विं सन रेथवा नित्र।

## ्र ५५ ) वृष्ट्रमा

"The cloud-cappe? towers, the gorgeous palaces
The colemn totaples, the great globe itself,
Wea, all which it inherit shall dissolve."
The Tempest

প্রার্টকাল, গ্রান্মণ্ডল क्षिनी (धति अहे जिन्ह्स করিল জাধারময়: হেমন্ত উদয় যেন বর্গছলে, কুছেলিকাময় \$ 7 M गगन आक्रम इपि कामिक्रमी क्राट्स, জলদকুল কুয়াসা স্বরূপে মোদের (मत्यतः अञीग्रमान, अर्गमत्त्राच्या, दिक्तिक क्यमिनी स्थार से आकाद, इत्ना द्वित ७६ जारे प्रथा नाहि यात्र, নক্ত কমল কলি <u>অন্তর্হিত তায় ৷</u> कामिश्रमी नेशिष्ठिश निन्नी भिष्ठारिश রোধিল রবিয় পথ দাঁড়াইয়া जारभ বুঝি তাই দিতে দোঁহে বিরহ-মাতনা ঈর্বান্বিত। কামিন্তীর, এমনি কামনা। तक्रमी अधीम अमिन आधात, বর্ষার বরিষণ বড়াই कात शरक ? मक्डिमलाब यहे छन, রমণী-রউন পুরঃ মনের মতনঃ यिन बूटि काटमा जात लाहामा लानात, এ হুতের সম হুধ কোপার ধ্রায়!

বান্ ৰাম্ র্টি হয় আবণ জুড়ায়, তৰণ যৌৰনা নাত্ৰী পোডে কাছে তায় अफ़ अफ़ फारक त्यच कारन खफ़ कारन, বার বারে জল ফুলশার হানে। তড় তড় তড়ে তোয় তকর পাতায়. কড়মড় কড়ে বাজ দশতী রসায়। সুমার দাম্পত্য-স্থ অসার সংসারে. **উ**थ्टल व्यव्यक्तित्व त्थ्य-भावानात्व ? नकरीमल मण्यजीत मिर्छ वर्षाकान, महिर्द्भव वर्षाकांन कि वन खशान। পর্ণের কুটীরখানি তাহে ছিত্র শত, টুপ টুপ পড়ে নীর তংহে জবিরত। বসন ভিতিয়া যায় বরিষণ জেলে, নিজা নাছি হয় যরি আর্জ ভূমিতলে। ভিন্দার্থে বাহির হ'য়া বড়ই হুকর, ঝম্ ঝম্ রুটি হর কল ছার হর। कर्माय भूतिंड श्रेष कांत्र माधा छल, 'বাহিরিলে ভিতেজ অল বর্ষার জনে। वह करके अक मुक्ति विन जिक्का करहे, उनन जिलिका मिक जिलाका के, घूर है, কুংকারিতে ফুংকারিতে চাক্ষ নীর ক্ষরে, अर्क मिक अप्र ज़ाक खूटिना छन्दत। मलाब जरमात अहे सूथ-वृक्ष्य-मत्र, अक हत्क रबह्म दानि ज्ञा जारा वहा। **এक शार्श्व विश्वकत्र व्याह्य हम्मन,** जन भार्य विका गर्य बात्र त जीवन।

अर्के शार्थ नैकन-कोनंत्न छक मन, जना भार्य विमुध्यत कें। मात्र की वन्। অগাত বরষাকাল ধরাপুর্ণ জলে, (य शार्थ कितां अ जांचि नीत हेन घटन ! স্রধুনী পূর্ণকার আেত ধরতর, रेगतिक वत्रंग मीत भारत प्रानिकत। क्यांत विद्वा कार्तः इकेट मिन , বায়ু বহে বেগৰান তরী ছুটে দীন। তরণী বিশেষ এক ছুটে পাল ভরে, माँ कि कात्रिकन विशे माति दाल धरत। ভিতরে হুইটা নর, তার এক জন, वारमज्दर निया गछ ऋडेनार्भ मन। नश्न जाहरी जीत्र जाट्ड मध्नधन, উত্তরে কোম্পাসস্থচী থাকে রে যেমন। क्रमत्कन्न मन किषा थांकरन त्यमन, यत्य मात्र। अञ किलि विस्मर्भ भगन। কি দেখিছে তরীস্থিত সচিত্তিত নর क्रिमिर्स ? नाहि यन नहीं (इ जा छ द । প্রকৃতি-মুদ্দরী শোডা আত্মিনীতটে : কার চাক শোস্তা হেন কছ অকপটে? কোথাও পাদপ্রধ্রণী নদীতটে শোভে. य माधुती मृतीकृष्ठ करत मनस्कार्छ। কদৰ কুমুম কোখা রছে বিক্সিত. যাহার সৌন্দর্য ছেরি মন প্রকৃত্তিত। স্থচাক দৌরভ তার কাড়িয়া প্রন, পৃথীসতী আঁত করে আদরে অপণ।

**इक्काल क्रल जान तार मानटवत,** थूक्न शरक कर के छि क्**य**रमर উপরে বসিতে আছে ছথু যত্নান, म आश्रीत अनिभित्य आह्य मिल्यान। কেতকী কুমুম কোধা আছে বিকসিত, স্থ-মুর্ভি চারিদিক করি আমেদিত। কেতকী কুমুমসাই বারব্যাক্তার, **ज**ञीन (म डेशरबांगी डेशमः मिबातः। কেত্রী কুমুম শক্ত, বারাজনা বর, পृथ्वी आमामिजकारी हिटन जनिः नदः। পড़िল हुँ शांत कारन हुँ र कांठा भन्न, জীবন ভুঞ্জিতে গিয়া স্বজীবন ক্ষা। কামিনীকুত্ব কোৰা শোৱে ভৰ্ময় याकात जाजारन कनिमानि मृत क्या। कामिनीकुच्चम जरू, विधवा जरूनी, जननाग मन लिटिश अहे राष, श्रुण। কামিনীপাদণ নাছি হতে কুস্মিত, इरे हाति मिन मध्या तिम्मी निक्छ। **उपनि वक्षत्रभी योवन गमः**क्र. प्रदे निन छट्य कार्षि शक्तित्र सम्दर्भ পরে পাউন্নত্যুগর বিশুক্ষী বদন, যৌৰন অঙ্কুর শুক্ষ বৰ্জিত শোভন। কোন ভক্ষরে বসি বিছল্পগঞ্জ मधुन्दरः शीनकरतः श्रक्तिकः भेन। कान उक्दबन-शत काह्रवीत कन. शहनि कि वनिरंडिए करि कन केन।

कि विनिष्ट हैं यनि दर्भिष्ठिक मञ्चलक्ष জিজাসা কর আমারে শুন সমুদর। : "ওঙ্কে" তক্বর তুবি নাছও ছঃখিত, "যদি ছে দপ্ৰ তৰ এবে, কলুষিত। " লতিকা-দল্লিতা-থীব। করিয়া গ্রহণ, <sup>ট</sup> পড়িয়াছ নত হয়ে দেখিতে আদন ' जाकरी:जीरम तथ राजुन पर्भाग. " কেমনে দেখিৰে স্পট জোমার শোভনে! " আহ্ৰক্ বসন্ত, পুনঃ কুহুম-ভূষণে " स्टामां जिल इंटाः भूध विभन जीवान '' ( जिमात्र मर्लन हांक) (मर्था द्र व्यर्गात, '' বাড়'ইয়া অনুরাগ বাড়ায়ে আনেখনে।'' ध्यमक्षक यथा कहि मधूत वहन, সর্গ শভাবাপর মান্বে বঞ্জ করি মনায়ালে নিজ কার্যামিজি করে, তেম্বি জাছবীজন সেই ভক্ৰৱে (गतन अखद्र यात्र) कहि मिठा कथा, मध्म विर्मुण उद्ध क्षिम्। मर्ख्या। महत्र मबंती काथा नीतम-निर्दाटन, পাঁৰি-কুর প্ৰছ ধুরি ব্রিতরে সন্তোবে। ज नबर जबूरेच , क्षांचा मित्र मखत्रन, मिश्रिश छ। स्वत इर्ग मुहुके जीवन। মূতন জীবন পোয়ে কোৰা ভেকগ**ন**, छेटेकः चटत तर्भ कटन श्रामात्म नग्न। ভাগीतवी जीत्र कांबा खरू नानिमत, **चिज्र की जिक्ने ब्र**ड़ीय अन्त्र।

তহুপরি পাড় "উচ্ছ পুর্ব দুর্বাদলে, উচ্চ ভরুপুঞ্ল পরে পূর্মিত খ্রামণে। উচ্চতর ভবদল শোডে তারি পাঁরে, তাল নারিকেল শির শোডে সর্কোপরে। ক্রম-উচ্চ কাষ্ঠাসন অভীব স্থার, শোভিত থাকয়ে যথা নগরাভান্তর; বক্তা প্রবৰ্ণ জনা সুসন্ত্য প্রদেশে, জনপ্রেণী শোডে যথা স্থানাভিত বেশে। প্রকৃতি হুন্দরী যেন তেমনি আসন. गठनिम प्राकीमान 'मिश्र' उक्गा। তচুপরি নানা জন্ধ বসি ছর্মন, क्षांक्रवीत कमकल भिठान यहन প্রবণ করিছে সবে একাথা ছইয়া, श्रवधूनी-श्रवकृष्ठा अत्म भन मिशा। " ওছে বিহল্প, কীট্ৰ, পড়ল নিচয়, ' " ভ্ৰমিয়াছি বছদেশ হতে হিমালয়। ., " দেখিয়াছি বছ জন্ত-মতাৰ, আচার, " मानदेवत्र मंड किस नट्ट दीं कि काता। " निश्ह, बाड, मर्ग आणि हिश्ख खर्डगा। " ভয়হর বটে এবা এই সে ভবন। "মানৰ মতন কিছ টির কেছ নয়, " কোৰা লাগে সিংছ বাজে ? পার পরাজর। " बाजि मर्थ जानि जल बना बटि वन, "मानत्वत्र वर्छ यम मौदि जूमधम। 🚬 " बितृकि काश्तंत जन्ना मिनादन मारत, " जन भरत किया कथा भागत जाउारत

" विभारम (कॅनिट्ड क्रेंड मड्ड यंडन) ' मर्ग्यक दुक्तिभान इटल टनरे छन्। " मगिंधक वार्थ छे शास्त्र यि करते, " দ্ব্বা উছলিয়া উঠি ধরে না অন্তরে। " ঈর্ণা পরবশ ছয়ে তাছার ধংসন, ' একাথ মানদে করে সদা অথেষণ। " অপরের কাছে তার সলা নিন্দা করে, \* বিপদ হইলে সুথ ধরে না সভাৱে : " जान, क्रापृति, मिथाकथा, धावक्षना, " শঠতা, লাম্পটা দোষ, বীভংস বামনা, " ডাকাইতি চৌর্যারতি, আর কপটতা, ' তাঁড়াৰি, ভগুৰি আর নফীমি, ধূর্বতা; ' ইহা ভিন্ন-আর আর যত ছুপ্রভি, " আছে অধিকার করি মাৰৰ প্রকৃতি। '' दद्रक विश्वामः कद वाञ्च, जुङ्गक्रमः, " না কর বিশাস নরে বর্জিত ধরম। ' সত্যাপ্ৰয় বলি কারে উপলব্ধ হয় 🕆 ' মিখ্যা ভিন্ন নাহি জানে তাহার হৃদর। " সরল **স্বভাষাপর জান** কর কারে? " তার মত বক্তমন নাঁহিক সংসারে। " नजावान् बिल रैंकेंट मिथां स जास्त ? " দয়া বে কেমন জব্য না,জানে সে নর। " किर माननीन विन मिथांत्र कामाय ? '' দগুৰণ করি দানকীনতার পায়। " অপর কামিনী কেই দাকু জ্ঞান করে ? "লম্পট ভাষার সম কোঁখা পৃথী'পরে।



"বান্ধৰ বনিদ্ধা কেছ দেখায় ভোষায় 🕆 "শত, শত দশুৰৎ বছুতায় পায় 🖯 " बानि बानि मुक्यामि (मधिक्ष काबीत ? " পুলা নিষে আছে ভার তীক্ল খুর ধার। " मरक्राण अवन कर्-सिथारन व हीऊ " অৰশা ভাৰিৰে তাকে তাৰ বিপনীত। '' भद्र अंधे कथा क्षति जब कवि मार्ताः " की बरम पानम जीरन नातिर दह कारकः। " দেখিছ কোশায় কেছ মাইতেছে নর, ' সহজ্ঞ করের তার থেকো ছে অন্তর। ं श्रमी भागत (कार्मी, इहेबा मानत. " মানবের প্রাণহিংসি অতীব উৎসব। " गाउँड वद्रशं कांकि भाग वर्ग महरू. " মানব বলিয়া ভায় জ্ঞান নাহি করে। " भागम वर्ग सङ्ग भूनः श्रीत-वर्ग सहत. "স্পর্ণিষে অঞ্চি হয় ভাবত্তে অন্তরে। "শারীরিক হার্মান হ'লে কোন স্লাভি, " **তার ভাগো কট ভোগ প্রধু** দিব। রাতি। " কাড়ি কর রাজ্ঞা তার। দাসম শৃথকে 'বাঁধিয়া তাৰাৰ পদ পড়েনা ভূতলে। " अब ष्यपदाय नारे महीद इस्रम, " অপরে শীভিত্তে কোঝা আছে ছেন ছল গ " निर्माकारम जाकांद्रेकि दमि व्हात कहा, ি পড়ি ধরা যার ম্বরা আহুছ কি সন্দেহ। "नियाम जाकाजी किन्न तारे आजि करन, " ৰীরত প্রকাশ তার ছয় পৃথী'পরে।

अंक के में

" निर्मात डांका उपनि 'नातम अक नहां ." ''দিবদ-ডাকাত নাদে' প্রকৃত্র অন্তর ' সহজ সহজ লোক এক দশু'হাজে, কার সাধ্য বাঁাসে কাছে অগ্নি অন্ত কাঁজে া একৈর সন্পত্তি হরে রাতির ডাকাত, শতের সম্পতি হরে দিন-দহ্য-হাত। " অধিক আশ্ভর্মা এর ওতে জন্তুগণ, "দিবস-ভাকাতী অতি গৌরৰ কারণ। ं मिबाइ जाकां कौर्डि खार्य कविगण, ' পাঠक छक्तन स्थी भारत स्म वर्गन। · अडअर **कल्ला**नं मान्दर विश्वान কভুনা করহ শুন থাকিতে নিশাস।" कारू वी की बन कबि कल कल द्रव। দন্তাহিছে এই রূপে জীব জন্ত স্ব। উভ তীরে শ্রেণীবন্ধ হয়ে তক্ষণ, একম্মে সে বক্ততা করিছে আবণ। কিবা রমণীয় বেশ করিয়া ধারণা দে শোডা নিরথি মুগ্র নছে কার মন ? অনিমিবে তাই সেই তরীক্সিত নর, দেখি শুৰি ভাগি জাৰি উদাস অন্তর। অন্তর-বীণার-তারে বেন হর ভাছার, প্রকৃতি-হন্দরী কর করিল প্রহার। जर्मान वाकि छेठिम तम जसन-दीना, সেধনি ভনিতে পেলে রাজত চীহি নাৰ र जन - जलत - रीना चत्र क्ष्मपूत, মরম বুবে হংগী ইচ্ছুর। কাহার

प्रजम - जलत - बीगा - मत सम्बत्न, একগতে হে প্রাঠক অতি সঞ্জর। প্রকৃতির প্রীতিকর শোক্তা বিনোকন कति उन्नीचिक सत्र धारमारम मगन। তাহার পঞ্চল্রের স্বীয় স্থান্থ, हिला निमर्गन स्टब्स छेश्यस छेश्यरक । धक्रित अव-कार्बी (माखात पारमारक পঞ্চের ত্রবীভূত দেখি সেই লোকে তাই গণ্ডে দিয়া কর সচিত্তিত মন: अवत ना स्टान क्यू ता करत मर्गन। मामिका मा जांग थाय जुक मा भीरम, ভিহ্ন। আহাদন ভ্রম সকলি অবশ। চিত্র পুত্রলির সম তাই সেই নর, भिरुक्त-र्थमा करह विभि भर्छ मिहा कर। (स शांठिक मक्तमत्र (कवा अवे नतः) জ।নিতে উৎস্থক অতি তোমার অন্তর। এজন তব জানিত হে পাঠক জন, চলিচ্ছ ভরণী চড়ি স্থীর মোছন। शिक्तिम आमि मिरिबार्ड बाक्ना जांड, क्रि-वाम्भ-वात्न गठि देवमून वाद्यात्र। (मरे (म कारक उती पति जाताइन, शिम् अमन जाब छनिएक माक्ना বনদলে নজ্তদ আছিল আছয়, मिममा। हिंगा छारे विवस विश्व। यथा ना निरकोड़ी शकी छुनि अक सान, সরসীর জন্ম জংগে হয় ভাসমান।

তেমনি ত**পন** ভূবি জনদ-দাগরে, একবারে ভাসমান পিন্চিম প্রান্তরে। दहिहिल প्राप्तका इरेट प्रक्रिय, धनावकी यात उजारत उक्तरम इरज कीन निःरमस्टि इरिह जशदार्ह भनिविभ, জ্মনি রে দিনমণি ভাসিমা উঠিণ। সমস্ত দিবস ছিলা অধারে আক্র দিবস বদন ছিল। বিষম বিষয়। ব্যাব বদন ছেরি দিব্য স্থাতি, হ: দিয়া উঠিল যেন হয়ে শাননিল। নে দিবা সখাতামুগ কিন্তু হে পাঠক क्तवस्था भाषा । अन्य अनील-भावक শিংক্ষিকীৰ উন্ধৃতি : যেমন ছানিল. शक्ष्यात इंदेरिक छम्द अमिन श्रामिन। যদি অতিকাণ ছায়ী সে দিবস-ছানি, किया मिक्के एक्स स्थि वनमा धकालि १ গস্তুমিত রবি-কর তক্-শিরে শোড়ে, कविद्र भारम-शाथी (य मोन्मर्या न्याइ মনোলাদে বলে গিয়া <del>সুত্</del>গিরি'পরে দ্রীকৃত করিবারে আবিল অন্তরে; ফেরিবারে গ্রন্থটি<sub>ন</sub> শৈক্তা প্রীতিকর, खूजांट क्या (माठम, मस्थ ज्ञातः, দংকীত্তন করিবারে গ্রন্থতি সুষ্মা, ধরিবারে কান্ত করে হথের চন্দ্রমা। কিন্তু মার অংশ-শনী ধরে কেবুা আরে ? त्म बाक्षा विकल यथा बन्ना हत्याहर ।

्याउच**ी व्याउ**ंकर्य हिन मिन ग्रा काँगे इ**रमा** समयसे (कांत्र यम-श्रीम। জুরার সময় সিন্ধু·বাত আসরণ, করির। আছিল নদী করি আলিজন। मिट्ट कति क्रमामां सूर्य मगानम, इड्राक्त निक्क कत करिना क्थन। नारथत वित्रदश्मणी डाइ डावि कीन, मिसुत्र श्रेमार कें। मि हिम्मा प्रक्रिया সন্ধা সমাগত হলে তিমির আইল, मोकात्र माइत गाड़ि नाविक विमल। अटक (म अटमाय काल, उद्देगी छेश्व পুনঃ তাহে, পুনঃ দেই মোছন-অন্তর। বুঝি দেখ সহদয় সে অন্তর-ভাব, সে ভাৰ বৃদ্ধিতে মম বুদ্ধির অভাব। श्वित्रम शेख (इक् शामश मासाहित, কিছু পুৰ্বের রবিকর আসি জাৰি ছারে উ**ञ्चल हो**द्रक थं**७ १८७**े कान मत्न, उक्कैंचि निन किया आद्याय नजरम। এখন সে জ্যোতিঃ আর দেখা নাছি যায়, তিমির রোধিল মরি লে চ্যাক শোক্তার। लोश करमा जरूरक मन्ति त्यम जक्रान, निजा लिखांत उत्त मूमिन नहम। কোন কোন তক্ষর পর্ণ আকুঞ্ন करिया जनम फांच कतिन धाइन। निविङ् भामभा भेज मोसदी जानह. খন-পর্ব শাখা হলে। বেন পর্ময়।



े উড়িছে रिकार्ट्स गरमद डेलारम, निमीविनी आँथि (यन मानटम विकारण । मत्म मृत्म कान इत्र त्वन निमीवनी, চক্ষু মেলি নিজ রাজা করে মারাবিনী। वांनिन नारिकान मीপ उत्री'পরে, তারি প্রতিবিদ্ধ পড়ি বারির ভিতরে गानतम । व्यव्याध यम क्षे कृष्मिनी, जाहिल विमन्न यह इद्य जनाविनी। निवागन वाधि पन करव आदिशन भूजरमञ्च नमीजरहे **इ**त्रसिक सन। माँडिक **शंडन - सक नमी**ड डे**श**हर, রজনীতে কিবা হর সমূপিত করে। শুনি দেই মধুষ্কর স্থীব শোহন, দেখি বভাৰের শোভা, সহস্ট কীবন। विहासमाधिनी निका धीटब काटल लट्झ, **उत्री'পत्त यमिल्लक खेक्**ल क्षमस्य। চি**ন্তাদৰ্ক মন পকে হনিত**় যেমন मटकोषध, सक्तमज्ञ, कि आहर अमन मन-मोनि-इत छ्उरिध ७ कुरान! निजारमनी मिक्क निजा प्रियम मोहरन। यामिनी याशन केति जुनी - छेशरह, পর দিন তরী বাহি হার্ব অন্তরে চলिम । नाविकशंश (मर्डिन - जारमर्ग, চनिया उत्ती छेड़ि होड़ि बाना मिटम्। (क्वाउच्छी श्रमा (भवं धरे श्रमा काम?) कर्ग शत्त नमी (माङ) श्रूनः मृश्वयान।

**68 78** 

बेहेत्रदश मेमीबाक (बर्धन कतित्र) **চলिये नारिकश्य उन्नी वाहिला** আদি উপস্থিত তরী-সিদ্ধাপাত মানে, শত শত সিদ্ধুপোত মধায় বিয়াজে। ष्यांचा गाँव किया (भाष्ठा खेगहफ याह, गगन गदिन जारह हांशि काडे मात। ্লাগিল আসিয়া তরী রেলওরে ঘাটে, थूलि मिल त्या इटनक म्यनम क्वाटि। শত শত ভরীজেণী আরোহী পুর্মত, সর্বাঞ্চণ হয় পার থার বিষোহিত मर्गात करना मन; मन चर्कित সময় বিশেষ হয় শোভা চমৎকার। নানা জাতি নর তার বেশ নানা রপ मिथिया बाह्द छान हेटन छानकूष। কর্মসান কলিকাড়া সহতে গ্রামন कतिरह मकरम पत्रा ममयाख मन। गाजीत गर्मत भंभ, खन कमत्रत, দৌৰে পেছি দণ্ডাবাতে কি শব্দ উদ্ভৰ। *द्*रीम (हीम नक करन इहेरह छेचिछ, बिनिक्षा अगर नम् क्रि, नम विक्र मधूषिङ इत्य लात्म केंद्रेषु - क्रद्राद्र, मानत्म न्यारत श्रीमी कुमात्र जलत्त्र। তরী হতে অবতীৰ হইয়া মোহন, গাড়ী চড়ি কলিকাতা সহত দৰ্শন করিতে চলিলা ছরা মান্স উলাপে, कडर बाम्ध्या वस जीविद्यादन जारम।

जिउन क्रिक बाम लाट्ड माहि माहि, চুথে ধবলিত অল কি শেবতা তাহামি। খেতহংল-বৰ্জনি শুন্তথৰ-শোডা, इवि প্রতিনিম্ন পঞ্জি প্রস্তা মবোলোক।। ন্তম্ভ - শিরে কাক্ষকরি কতই প্রকার, যাহার সুবদা দেখি লাগে চদৎকার। এ ছেন ভবন কত কে করে গণনা, জীবন তোষিতে কড় কৌশল ছাপন।। भगावीबि भन्निभूषे माना क्रांडि नाद, नश्रम-शांदक-मना (भोटिस श्रद भरता দেখিতে দেখিতে শোভা কথীর মোহস আদি উপস্থিত ঘথা রাজার ভবন। आका मति किया बाखाश्राकितिनि-पाति, यहमा छेक्कारन भारत (माछ। शरिशाणी। রাজ্ঞতিনিটি-বাদী পার্য ছারি তার, मिथ एतीक्र काम मानगं शाधात। धक क देश्यां कांकि, मक ध्यां उत्म, नद नाम गार्थक कतिरल विमानित्स। मानव रखामता वहे, नद्र - बिरहामनि. জনদ প্ৰহণ কৰি পুৰিত্ৰ অৰ্থী করিলে ছে বুদিবলে; কোথা নাস তব ! কোথা আদি বাছবলে ভুঞ্ছি বিভয়। পঞ্বিংশ শত অফ হটদ হে গত. কি দশ। আছিল তব ? बना নর মৃত অরণা নথারে ডাব আছিল বস্তি, করিতে চিক্তিও অজ দেখাতে দুরকি



जताजिक्रामात अटक बात जीवन, সামাভ বাংনতে চড়ি হয়ে ধহুর্মর नमन कदिएक स्थान नकमन जारन, त्रागात्ने : पूजनत्मः चाक्रिटं मगटन । তব ৰামদীপ - দশা কি ছিল তথন ? পর্ণের কুটীরময় কর ছে স্থরণ। जुरनमस्त्री अद्य मध्य नगती, কি ছিল তাহার দশা দেখ দেখি অরি। অন্তুত পরিবর্তন কিছু শত শকে, मानाम माहिएन अरक् किन थक् धार । অভুত পরিবর্তন কারণাবেষণ, कत्रक् यमाणि (कक्, कत्रक् ध्वरण। प्रकास भारीत अम, निःशंक - समग्र, উন্নতি সাধন ইচ্ছা, আর ধর্মুভয়, একতা, সুতীক্ষ প্রজা, সভাপথে মন, জাতির সমৃদ্ধি কৃদ্ধি করিতে কারণ। व मकान विवक्तिं इस खरे आंडि, তার ভাগো দার ছত্ব অরাতির দাখি। जब बाठि काड़ि नर्व ब्रोका अंक हरड़. चुनिट्ड हरेट हिंदू मूर्गेष काम्रद्ध। **७८६ बज़ज़न पिथि देश्त्रांज - চ**तिछ, कारमांग्र उर हिट्ड मा इस किकिश् रेश्द्रारक्षत इत्रवृत्ति कड्ड्राजि-कम, তাহাদের স্থ@রতি তব° পক্ষে বদ। व्यानहरू छेत्रीतन कर बनवन, পরীক্ষা করিয়া দেব তব আচরণ।

আলন্থ **কো**ণ্ডেতে নিদ্ৰা যাবে কত কাল, ু অজন্ত কুপেতে ভুবে বন্ত্রণা ভয়া<u></u>ৰ महित्त, देर कंड मिन १ नदा यहजन, তোমরা বঙ্গের আশা, ভরসা, ভূষণ ৷ কিন্তু বঙ্গসতী দেখি তৰ ব্যবহার, মনোছ্ৰে ভ্ৰিয়মাণ বদন তাহার। विश्वविष्ठानाः यत् कद्र ज्यात्रम, তৰ বুদ্ধি কাছে বল কাছার গণন ? কোনু জাতি পরাজ্ঞানে রবিতে ভোমায় ? পূণী'পরে ছেম জাতি না দেখি কোখায়। ছাত্রাবছাত্রর যেন দে দামিনী খেলা, দেখিলে ঝলসে চকু, শক্ত জাঁথি মেল।। তারি পরে আলক্ষ আঁধারে খেরে মন, আৰ ফ্ল গোলাপেতে কীটের দংশন। ওতে নবা বলজন হেন সাচরণ, তব **পক্ষে অতি দু**ষ্য করহ প্র**ৰণ**। যে দেশে হইল জন্ম তার উপকার, না করিল যেই জান ধিকু জাগা তার। कांक कि कीवत्न हात्र यनि क्रिश करन, प्तरभेत किहा के क्या मानरम ना तरव। (इन देक्टा युद्धि निर्दे, थिक् त्म क्रमत्म, भा<del>षे इत्र</del> नित्रविष्म (मरे नदा्धरम। ওছে নবা বঙ্গজন হয়ে এক-চিড, माध উপকাল मत्व म्हान किथिए। मिट्यंत विशेष चात्र शहर वक्क्न, अकरात उर ठटक न। कत म्यान।

वंत्र-विमान-छेमादिन के किया अधान जानियारह अक्ठो रह कामछर्ग-कान्। थ्रमे समुविविभिष्ठे स्थानिक नर्द्र, গুটিকত জানতক ছোপিলা জানরে কাটুরার ভীক্ষার কুঠারের ভবেন अष्ट्रश्य रक्तमद्वारक्ति क्षणत विष्ट्रतः। काजानिनी दक्षमछी इक्सा मर्भात. कैं मि बांधी जिजानेन स्थी बलकदन ! क्रमम अस कि कडू इताया व कर. निक्रं हिटलंड काष्ट्र विकल कम्बन! (मध बिक्क भूषे मत्य अहर पक्रक्रम, शक्तिए व काम उर मिम्द्रम भठम। माह्य विभागात्व करह विभागात्व, লৈখিলা কি হুত্বে তৰ সাহায্য প্ৰদানে ? क्ट्र **मर्टें अक्**छिंड **अट्ड व्ह**ंबन, वक्रविना - जेमार्चित मक्रम माधन कद्रष्ट अकाशिक्टिंड, बाम द्राप छत्त, क्षंकि मर्था गंगा एक त्वामना (ए मर्य। **डेब्स्स मिनांत्र कक कामउक्गार्य.** इरेट्ड क्छ क्लिम्ब्रु दृद्धि क्रम्सा व्यक्तितात किङ्क विति मेरि राम अह, कि ऋष्ठि इंस्ट्रिय उन मानवर्ष होत পাৰ্টৰ ইহার ভাল, বুজোনা এখন, कृतिक भारित काच जाकन काकन। मैं। इंद्रिम्पाइन (इश्वामिक्क गंद्रश्र क्या, वाक्ष्मजिनिकिनामि स्मर्थ इर्वासम्।

তঞ্জিলার শৌক্তা দেশি স্থীর মোহন कदर्भ कथ: मन-मटन महिन्छि मत्र। "कि चुत्रमा इस मति कि চारू गठेन, "চক্ষের বাজাই যায় করি দরশন। " (य भार्ष किताहे जाँदि मिश्रि जवाहाक, " নয়**ন কা**ড়িয়া **লয় চাক শোভা কাক।** " ভবন-অঙ্গন-ভূমি ষের! লৌহ রেলে, " फहेरक अहती रकत दक हक्क (परन ! " সন্মুখে ছবৈয়োদ্যান চাক তক শোভ " লতা পুষ্পা রেলে বৈরি দুখ্য মনোলে।ভা। "নানা জাতি ভরপতে পড়িলে নয়ন "নগরাভাভরে যেন পদ্লীর সূজন। " উত্তর, শব্দিন, পূর্বের, প্রাস্তান স্থুকর, " সারি সারি শোভা পায় জুড়ায় অন্তর। "দক্ষিণে হর্জর গড় জরাতির জুকু " नक्र नामियादा महरूदी क्रम ' ডিন শত বৰ্ষ পূৰ্কে কি ছিল এছল। " कि मरकद छिल देश भूति उ क्रमन। "कि मरमह हिल हेशा वाख निवयित, " কালসর্প বাসন্ত্রাক্তী ভরন্ধর আড়ি। "विविद्धि एवं प्रांत दिश्वक्रियांन, " मंदे प्राम विष्ठतिष्ठः मद जगणना " (नरे कृष्म नक नक नम्र निवमित्र) " পूर्व कोलाइटल मना जानन संबंधित " कानरबार्क गैंडि अंडि विविद्यं मर्भन, " চিন্তিলে ইদর মাঝে কন্দিত জীবন।

" कांबा कान-त्वांड-उटि उटि जनप्र

" (कांथा वा नशंत्र छश्च श्रदेश्व (कवित्र में

" काथा वनक्ष की है कि क्रमक्ष,

"काथा कमकृत्म भून इंदेह कमन।

" काथा धडाधद मध स्टेट्स मणित्र,

"কোথা বা সাগর পোতে ছাউচ্চ ভূধরে।

" काथा जीनिशान बाजा? काथा वा दामान?

" এককালে যার দর্শে পৃথী কম্পমান।

" কোণা রামরাজ্য ? কোণা কুফরাজ্য বল গ

''कान ब्लाटिं नियगनं इरेन मरुन।

' কোখা রাবে এই যে মগর কলিকাতা

"কিছু **শত শক পরে? জানেন বিধাতা।** 

" এই যে नगद्रभूष लक लक नात्र.

''কোথা রবে এরাবল বর্ষ শত পরে!

"এই শত শত নর হুমোহন বেশ,

"কত্তই যতনে মরি কিরাইছে কেশ।

"करम धकनारे तैथि वानारेमा कूम.

" अज्ञाह गांच ब्रांन गांन गांद्य मनाकून।

" िमारका है मिर्दाशित अक्ती वानारम

" मश्नभम करकाशितः मृतिः (५ ७ वास

" শ্বলিত হইয়া উড়ে শৌক্তা পরিপাটি,

" कान भित्रभित्र कृषे बकतनारमरु आषि।

'' চরণাবরণ স্থান ক্তার উপরে,

" বিক্চ ধৃত্রা পুষ্পাশোন্তা আছে ধরে।

" করে তিক রৌপো বাঁধা ব্রিত সবনে,

" চলিয়া যাইছে ভাৰি শরাব ভূবনে।

" কুৰা ববৈ তোমনা হে দিনকত পরে ? ্ৰীনাৰ না ভূলিয়া কৰে সেচিন্তা অন্তরে :" स्रम हर्ष साहन शीत अहम छेपत, জোধ তব অভূচিত এরা খোলা নর। থাছিক সৌন্দর্যা তরে শশবাস্ত যারা, ৰভূ মৃদ্ধ লোক ছবি কন্তু নহে ভারা। দিল-খোলা লোক তারা হথ লুঠিবংরে, भतिशाहि खना अहे मकात मश्माहत। माता इरे अञ्चलात मानव निषम, মিটমিটে তান মোরগ ছেলে থেতে যম। পুস্তক মথন দিখি ধর্ম অবভার, कार्याकारम नामाना नरतत्र वावशह। 'আমি অভুকার মম নাম জীঈশার, आमात्र त्वथनी कारह निर्द (कान् नह।' ' আমি কবি মম কাছে কোগায় স্থান গ त्रक्रमा अभिज्ञाकत योद धवर्छन। অমিত্রাকর যোজনা বাঙ্গনা ভাষায়, হাত্যাম্পদ হয় যাত শুনি হাসি পায়। क्ट्रेमर्ट कथा श्रमा अवन कर्तात শুনি ক্ষতি ত্বনি, যায়ু কোথে ছদি ভোর। ना इरेटन व्हार्थ किन? कविष मक्छि না হইয়া মন কিনা দত্তে হলে৷ গভি!' भग तक्नात कारक माभरतत (नथा ? क्रांनिमान कौंवा कारह नवा क्रांचा (मधा।' 'বছিমের গণ্ণ গুলা শুনি ছালি পায়, বেষনি দেখার ছটা লক ভুল ভার।

ब्राट्सा यरवा अनिकडा छनि वरन कर्म्स जिज्ञीन काराज भूग उनि पृत्व धान हरे '(मामक्षेकाम मण्यहिक विकास्यके निविवाह कि शांद्र शांद्र वन , प्रशीकन। বাজালা ভাষায় এত্ব প্রায় ভাল নাই निश्जाहि इ अ'बानि आमि बारे ठारे।' मम धौरा धौर्मिं जरत स्थीखन, कतिराज नकी क्या अ मा कीवन। গুপ্ত ভাবে ছোট লাটে পত্ৰ লিখি ক'ড, সংক্ত উঠাইয়া বাৰ্লালা অন্তত **ध्यवर्क्डिज विमानिता करः ममू**ठिङ, (भनमाद्ध धूनागक बज़रे विहिछ।) সংকৃত না উঠাৰো কেন ছে পাঠক? नहें (क दिक हरन मर व्यक्तान प्रश्रुक निक अबू तहनात धर्मरमा निशिशा, গুপ্ত ভাষে সম্পাদকে দিই পাঠাইর।। নুত্ৰন লেখক দেপি ঈর্যায় কাত্য হোক্না দে বন্ধু কেন বন্ধৃত। অন্তর। महस्र क्रडल-शार्म शांकिन। जानकः रा**द्वर (मध्क श्री, क्रा**फ छेपबद्ध, হেন বন্ধু সনে কন্ধু রাধিমা আলাপ, এর পেটে এত বৃদ্ধি একি মমন্তাপ। ভাবিলাম যারে এত সরল মানব, লৈ আৰার **এন্থ লিখে ভেবে হয়** শব: । अमन रर जानि धायुनात किम्बत, দার পেটে এত হণ, ধর্মের আকর

जारू नेन क्रिंबट्ड निक आरमानिड, তারীত পুষ্ঠক মরি এও সমাদৃত। বলিছারি ও সংসার করি যোড় কর, অন্তরে নরক ছের। আননে আতর। নিতা নিতা এইরপে সুধীর মোহন, मत्नामारम कतिरमक मध्त जम्म। নগরাভাতরে বাহা ছিল দর্শনীয়, निद्रिथ कतिम जुक्ष मर्गन-इल्पिय। বড় বড় লোক বাঁরা আছিলা নগরে, माक्षार उँएमन महं कदि इशिखद वन मभारकत मना छनिन। को कृत्क। বাজিল বজের সম মোছনের বুকে। মানেক মোহন ধীর রহিয়া নগরে, व्यानारम् अभिवादत छेरञ्जं व्यवदा। य मिन विरमम यांचा कतिरवक थीत তার পূর্ব নিশি নিজা মোছন জাঁথিয় जाहिना वह जलदर, नाहि मिथा निन, চিন্তাসতী সহ নিশা হুধু জাগরিল। চিন্তাসতী সহ কৰা হুইল যে তার. **७न स्थीलन गरेन**्रकाड जारात। " ওমা বৰ্ণতি তৰ সভাপুত রীতি 🖰 " চিন্তিলে দানল পথে উঠে ঘোর ভীতি। ' সভ্যতার ছোত বহি দেশ পূর্ণ পাপে, " छेशीड़िन विबंडिक स्त्रिश बार्षि काँद्रिश " (य शास्त्र कालित करत महक्ते मध " य भारभ कें।जित्म धति है। में नीज बन :

" (य शार्भः मानव एव भर्छत्र नेमालः, " (य. भारत डेव्यंत यात्र यंडे जनकार्!।. " (मःभाभ शतका जाई अहे तम नगरक, " গর**্থর এনগর পাপজোত ভরে**। "সজ্ঞতার জ্বোতসহ হুরাজোত বহে, " श्रुवारम्दी अ नगरः वाम कति तरह। " প্ৰাদেৰি ৷ কিবা তৰ কমনীয় কান্তি, " दक्तिमा बहर्ग औथि मिथि हिटल खासि। " বুদাদী দেখিতে কিন্তু ভিতরে ফাঁপর, "ভুরা নারিকেল যথা চিত্রণ উপর। " धत्र धत भेष क्य भेषय चुक्त, " তিভন্ন ভদিমা আদ ভয় কঠবর। "कञ्च वा भन्नम एव भन्ननी छेशहर, "কতু বা শয়ন তব খানার ভিতরে। " যেন বাসি শব সম মাছি ভন্তন্ " क्रिक्ट बमरम किया मर्गम - तक्ष्य। " छेनदा यङ्ग्ड वर्ष् शाकित्ववे इत्र, " बदक एका तका ठांत हुनि क् र्छमन। " यमबादत नदेवादत पृथि भी राहिनी, " वाजानका बारत मुद्धः पूषि वा। क्-सी। " मर्बन्दां कतियाद दृपि (ग। माविनी, " রাজ্য বানাতে তুমি পটু, প্রতিনী। " (वम्ब क्यारमनी वर्षभाभ पून, " সহটো করিয়া বাস বিদিতেছে শূল। " শীধু-সদী হ্ৰাছ-রততা সর্বলান্ত, "कत्रिम नगत्रवामी कति सीवमास।

" সভাতার 'শহ্চর ুব্ভিচার " কেলি করি যরে যরে লভিছে সম্বোধ। " ব্যক্তিচাৰে নাহি দোন, যাতে জনে স্থ " म कतरम भाभ किया । म कर्च विमूच ! " ऋकायन कोयतिश्व कतित्न मर्खागः ''কভু কি হইতে পারে ধর্মের বিয়োগ। " সভ্যতার থাড়ে হেন আছে ভব্য নীতি, " বুদ্ধিজীবী জনের তো আছেই প্রতীতি। ''নমস্থার সভ্যত্তি থাম্বে শত শত। · হেন হুৰুজির পদে শত দণ্ডবণ্ডা "যে পাষ্ড কহি হেন মধুর বচন, " হরে কেনি কামিনীর সতীও ভূষণ; " তাছার দেখিলে মুখ জুলে ক্রোধে প্রাণ, " हे ऋभ इन्न जानि धनि कति सान थान। " जवना महना नाही कान द्वि नारे, " মিঠা বাকা শুনি ছুলে কাছারে ছ্বাই। "বঙ্গে ব্যক্তিচার দোষ এমনি প্রবল, " चद्र चद्र कार्या निश्चि महल वहल। "নাগরিক মানবের কুথাইতে। নাই, " সভাতার খৃছে পুরি লুঠে কি মঞ্চাই। " এর পরে রাজদানী বিচার প্রার্থনা, " বাজালি উচ্ছন্ন দিতে পুরিছে কামনা। " পিতা পুত্রে বাদ করে জাঁড়ায় জাতায়, " অভিবোগ জন্য পৰে বাজধারে ধার। ं ('इरेश' गंडम्बन्य विठात जानरत " সার হয় ভ্ৰতৰ ভিটামাটি করে।

"विष्ठांत्र धार्यमा गणि कान, क्षांत्रति, " गानवीन, गंकाकान, निवान पूर्ति " निमात केन्द्र माने कहि हाथ कार्ति, " অষ্ট্রতাপে দৰে ধনি বাদানি আতারে "মরক কুওেতে দেখি সতত পতিত, कि जारह वर्ग ता मन देशा विदिछ। ' র্থামোদে লক্ষ লক্ষ্ মুক্তা বার হয়, " युकार्या कड़िंगे मिर्ड कृष्टिंड समग्र। " श्रुकार्र्या माहाया करा वह पूरत बीक् <u> ' ज्ञतदाम थड़मध्छ मिर्विशा जर्वाक् !</u> া ধন্ত রে সভাতা তোর চরণে প্রণাম, ं जुलिइ कउंदे भीश नाहि यात्र नाम। " जरुरतन मणा जात ना बान हिसन, " नदीत निश्द डेर्ड कन्गिड कीरन। " ना द्रारों कर्यन जात अगन गर्दात्र, "ন্মতার সভাতার যাবো দেশভিরে।" त्मध (र शांठक ऋषि भाष्ट्र नजन, वाशानि विवय भाभ छशामि मर्भन ना कहिन, जोड फोम ना भारेन सान, সরল অন্তর বার শাহি শ্রুবে ভান। **उत्ह ७७ ज्रीजन (मोर्**टन ज्ञान शिल शिव्रवांग वटहे स्वयाद्य वजान र्यारकूतं गठउ इक्व वनिछ। কৰি কাছে পরিজাণে কি কর বিহিত। मर्गन चत्रभ (य एक कविसन मन, ৰাতে প্ৰতিবিদ্ব পড়ে নান্স গঠন

অপরেং, তথ মন লুকাবে কেমনে? मत्नाविक उव शिक् मानम मर्गत्न कवित्र हरिष्ट् भगा, सूकाबात नर्त्र, কৰি বুঝে তৰ ভাৰ যা ভাটুৰ ছদর ! नाहि तत्व कविक्रात अशद्यत्र गत्न, तिके मि कार्यन स्वति धन्न स्वति। ওছে ভণ্ড সুধীক্ষন তোমরা ভয়াল, जुना ७ जशस्त्र कहि नहन विकास। সংকাৰ্যা অহুষ্ঠানে দেখি কোন জনে, প্রকাশ আহলাদ হুমি তোমার আননে। অন্তরে চিত্তহ সূধু তাঁহার ধংসন, কাৰ্যা পণ্ড হবে কিসে তাহারি যতন। প্রকৃতি প্রদত্ত যদি কবিছ শক্তি দেধহ কালার তুমি, হুঃধে মগ্ন আছি। हिए मत्न श्राडिकाल डाँशांत्र डेल्ब्स, সদা ভাব কিসে ছবে তাঁর বন্ধু ভেদ। সুধীজন কাছে গিয়া তাঁর নিন্দা কর, বাসনা হইলে সিদ্ধি প্রফুল সম্ভর। ভণামি শক্তি তব এমনি প্রবল, বুৰে ভাৰ তা বল কেমনে সরল। पि रेट हिर्माना श्रम् क कमन, তার মধুছানে কিন্ত আছে হলাহল। পণ্ডিত বলিয়া সবে জানে হে ভোমায়, করি শত দণ্ডবৎ পাণ্ডিভার পার। निष्यत्र कम्छ। नाहे किছू निविवात्र, নহ কি হে হয় হলে অন্তে গ্রন্থার।

कविद्ध छेपमांच सम् " स्टब्स एटक्स" (बारन নাছিক নিস্তার তব কবি নাছি মোলে। ধন্তরে ভণামি তোর চরণে প্রণাম, না করিতে পার ছুমি নাহি হেন কাম। ওরে রে ভণামি ধৃর্ত চেছার৷ তোমার হাদুক্ত, অন্তর কিন্ত বিষেত্র আধার।

## [ 505]

## সপ্তম সর্গ।



Deanty is Na. hrow coin must not be hourded, But must be current; and the good thereof Consists in mutad and partaken bliss, Unsavoury in the enjoyment of itself."

How beautiful, if we row had not made Sorrow reste beautiful than Scanity's soif Kente

টিশির টিশির নীর পড়ে খন হ'তে, ছর শিরে ছইজন চলি যায় পুথে। वर्षाः। भन्नीयाम कर्माम भूविंड, গমনে শ্ীর ক্রেশ হয় মথোচিত। **छदर्भ कर्मभञ्जा मिल गोल नाम,** भैडिकित सिंदिक अन्त गृहस्कृत वाग। ्राह्यामी यश्याहित कति समामत्र, ৰসিতে আসৰ দিল প্ৰফুন াংগাপকথম পরে করি তিন গৃহস্বাধী পাতি কর করিল গ্রন্থ তুই শত রেণা মুদ্রা সহাত্ত অধরে, श्रुह्म ना इसं (केवा द्वीका शिटन करत ? युका छनि दौंधि दोरमः महशूरकन গৃহসামী কোথাকারে করিল গ্রাম। इरेंगे मानव मंत्रा त्नोमा पूर्त्ति नव धार्यमिन गरंग्डमारम यात्रेत ভिত्र। जर्भत्र मान्य शिंग वाष्ट्री इट्ड हिंग. একটা মন্ত্ৰা গুছে বছিল কেবলি।

পরমা রপসী নারী ছটা তারে পরে. धारवर्भ कतिन (में) हर वान-जानास्तरः। তারি মধ্যে এক নারী বসি দর্ভায়, সম্ভাবি কছিল অন্তে এরপ ভাষায়। " ওলো ওলো প্রাণসই এ আর কেমন, "না করি দর্শন যে লো কোন পুরজন। " কোথা গেল তর মাতা ভাই ভগ্নিগুলি, "বাটীর বাহির কডু নন্ বিনি ভুলি।" अनिशा शामिशा कटर जानत कामिनी, "গোরাছেন নিমন্ত্রণে বালীর গৃছিণী। " বাচীর বাহির আজি নাহি হ'য়া যায়, "নিমন্ত্ৰণ রাখা সই আজি শোভা পায় ? "निमलुर्ण यारेवारत कतिल वांत्रण, "কোনমতে নাকরিল। নিবেধ এবণ। " अरुमा महे जाम (थिन विम इहे सन, "তাস যে তোমার কাছে ছইল স্মরণ। "किहूकंग रामा महे हूछि जानि जाम।" এত বলি গেল চলি অপরের বাস। राजित राहित जानि रांधिन कवांछे, मिथ स्थी-क्रम शदत किव। इत नाहे। হে পাঠক সন্ধুন্ন বাটী-অভ্যন্তরে, প্রবেশিল কোন জন ছত্ত্র শিরোপরে। কেবা এ রমণী আর কেই বা এ নর, জানিতে উৎস্থক অতি স্বোমার অন্তর। পরিচিত ছুই জদ নিকটে তোমার, শুন প্রধী-জন দবে রভাত ইহার।

दमली (यादिनी आंत श्रुक्य केरिन, ग्रामात्रीप्रशिक्षांनग्न थहे त्र ज्वन। বাটা যার মোছন-ভবন-সলিধানে, माइत्यव श्राप्तिको नित क्रक्तिगरना যে কণ্টিনী চলি গেলা আনিবারে তাস. মনোরম। নাম তার, হয় কি বিশ্বাস (मार्किनी त मरनातमा जानिका कोगाल मिः इम्राथ प्रभी किलि (भना उलि इरल : (याञ्चिनी-प्रतिनी धरियारत अहे केंप्पा অর্থই প ডিলা এই যত প্রমাদ। বস্তুকুমার জীবনের সহচর (को भारत गाधिन अहे कार्या छहत्रह। मत्नादम् व (१४ मिश्रा है) कर छुड़े भेड़, क्रिन ज्ञाहारत स्थि अकार्या मध्य । দত্য অর্থালোক জ্বোর চরণে প্রাণাম, না কথিতে পার ভূমি নাহি ছেন কংছ। তোর লোভে কত নারী পৰিহাই লাক, জলাঞ্জলি দিয়া বাংশ করিছে : কাজ। নারীর সক্ষেধ্য দ্য সভীল-রত্ম-পরিভ্রম্ভ হয় ভোর প্রাপ্তে প্রনোভন। **গত্ত অর্থ তোরে লোভে ক্ত** ১দীজন, माधु वावकारत थानानिएकं नमर्कन। তোর উপরোধে কত বান্ধব স্বজন, আত্মীয়ত। ক্রতায় করিছে বর্জন। তোরি লোভে রে পাপির্চ নারী মনেরেয়া মথী ব্ৰহার তাজি হইল অধমা।



कीवटनक मधी देगटचात्रमा! भाकिमीत, म कि न। इस्न मुठी छाजिया धनीत कुन, भीन, नड्का, खत्र, द्वःथ कहि कारत्र, ধনা রে পিশাচ অর্থ সাবাদ ভোমারে। ह्यां औरन पिर स्यांग जागड. বাহিত্রিল গৃহহাতে প্রফুল্লই ক্ত। ব্যাধ যথা নভশ্চরে হেরি নিপতিত, জানায় মাঝারে হয় মন বিক্ষিত। পরে গুটি গুটি গিয়া ধরে বিছক্তম, বিহ্য বেচ্রি যেন সমীপুছ যম। दार्डिडिन गुरु रु'एठ मित्रार्थ कीवन, সাশকায় উড়ি গেল মোহিনীর মন। মোহিনীর মনোভাব পাঠক কলন চিন্ত মনে একবার, পার উদ্যোগন ক্রিতে সে ভাব মদি—কি ক্ছিছি আমি গ (म जात कि श्रूक्टकत इत्त हिंखगांभी? সংলক্ষ্য সাধী পরিব্রতা নারী চিন্ত গোলেশকা মনে অন্তর ভোমারি অধু সক্ষ ব্ৰিক্ত মেছিনীর মন, মোহিনীর মনোভাব হলে। কি তথন। शांठक मकन्य नयदन केकन করেছ অভু কি কোন রমণী-রতন नक्कामीना कृत्योदना विमिन्ना विकास द्राष्ट्र यद अक्किनी किया, मधीमान जनवाम विष्याधिका श्रीनिक योवतन, ना एतिशा वित्योगिनी बद-आगमत्व।

হেন্কালে সেহি ছলে পুৰুষ অপর জাদি উপ**স্থাত যদি হয় স্**ধীবর, লজ্ঞালীলা দে স্থারী কি করে তথম ? 🣑 किश्म नुकाद भनी अभूना योदन, ঠাহরিতে নাহি পারি বাস আকর্ষণ করিয়া কোমল করে করে আবরণ লজামাৰা মুৰধানি কিন্তা তত্থানি, ঢাকিতে কোমল বক্ষ মনে অভ্যানি निर्द्रातमम भूछ बर्ड ना शीव वसन, আবরিতে উভামান বাহিরে যৌবন। **6िट अरम वदासमा পृथी इरल 6ि**द, প্রবেশে তাহার মধ্যে পলক আধির না লড়িতে, শক্ষাশীলা ঢাকয়ে সরমে; ভবেত ধনীর রহে সরম ভরমে। বদি হে পাঠক হুধি রমণী এমন তব চাক করি থাক কথন দর্শন, তবে মোহিমীর ভাব পারিবে বুঝিতে, নহিলে সক্ষম নও সে ভাব চিন্তিতে। অপর পুরুষে দেখি হঠাৎ সশুখে, আৰি আশহ। আদি মোহিনীর সুধে। লজা ঢাফি লজাশীলা পলাইতে চায় অমনি জীবন<sup>'</sup>জাসি সন্মুখে দাঁড়ায়। জীবন সন্মুখে থাকি কহিছে তখন, মোহিনীরে মধুবাক্যে করি সম্ভাষণ। " आंकि कि ऋ(धेत्र मिन मम इल्लानिन ! ' সংসারের সার বস্তু সন্মুখে আপনি

" जीवन शविज इतना श्रीचल नहन, " मः भारतः मात्र बक्ष कति मदर्भन। "তোমার যৌষনরূপ চাক সরোবর ''অগাণ অতলম্পশী করে ধর ধর। '' পথিক তৃষিত আমি উৎক্ষিত প্রাণ, ' দেছ আজা বিগুমুখি করি নীর পান। " (र्घावन महमी उद इस् डेनमन, তাহ(তে প্রকৃত্ন মরি ও মুধ-কমল, ' यांक्रांत मोन्नर्था-गास काल जार्यामिंड, " ভ্ৰিত পৃথিক ভটে আসে উপস্থিত। '' আজা দেহ ইন্মুখি কৰণা প্ৰকাশি, " ভান্ধি লো পিপাসা হোর, ৫ পোড়া পিগাসী।" জীবনে দর্শন করি মে বিজ্ঞন স্থান, আশক্ষায় উড়িছিল মোহিনীর প্রাণ। ভয়ঙ্কর কথা তার শুনি এবে ধনী, পাণ্ড বর্ণ হলে। মুখ সভীর তথন। भाविनीत मुर्थानि इत्या यन हिन. अकृत कमाल कड्डि (शाल जाकिकाक। কিয়া যথা আধক্র গোলাপ প্রস্থান लाशित्म शक्क धूम नात्म (नाइ-७८५) একবার চিত্তে ধনী থাকি মৌনী হয়ে, দে চিন্তা অন্তর পুনঃ ভাবিয়া ছদয়ে পাছে इसे गांव म्मर्ग धक् निया वस, ধনীর গৌরব জঞ্চ তবেড সকল। ভাবি মনে বরাননা করে মনে ছির. क्व कथ। अत मान या देखा विधित।

কহিতে থাইনা কথা কথা নাহি ফ্ৰে लाशिल विषम धाँधा माइन-वश्दः कर कथा वड़ करहे. त्याहन स्वन्ती, ল জাবতী সাধী সতী লজ্জা পরিহরি। " ওহে ভাগ্যবন্ত মর তব কলেবর, ি নিরীকাণে জান হয় দয়ার সাগার। 'হেন দেছ মধ্য ছতে কাক্য বিষ্ময়, " अवर्ग हमिक डिटि अ सम अन्य। · এ দীনার সতীতের পরীক্ষার তরে " বুঝি এ নিষ্ঠুর ভাব পরেছ অন্তরে। ''নজুব। সম্ভব নয় এ বাক্য তোমার, " বারিধরে বিষধারা বিশ্বাস কীহার গ " कति गङ्ग विभि स्मर्थ त्रमणी क्रमरस ं शूटेल अकिंग धन (य उट्टल क्यूबार्य " नाजी कक्षे-त्याज्यात्य अहे म जूरान, " যে জন্মে নারীরে হুধী নারী বলি গণে। "দে ধনের অভিধান সতীত্বরতন, " দে ধনের কাছে কোথা কাঞ্চন-ভূষণ, " রতনে খচিত গৃহ ভূষণে ভূষিত, " চতুর্ভিতে চাকচকা চিত্ত চমকিত, ' রজনীসময় যবে শোভে দীপালোকে. " নছে প্রীতিকর তাহা কোন্ নরচোকে। "নিৰ্বাণ করছ দীপ শোভা অন্তৰ্দান, " কোথা রত্নাজি-শোভা ? স্থম। প্রস্থান। "তক্রপ রমণী-হৃদি পূর্ব গুণরাজি, " সতীত্ব-দীপ্তি বঞ্চিতে, আঁধার বিরাজি।

"ভূষণে ভূষিত গৃহ ভ্ৰষ্ট দীপালোক, "যথা অন্ধকারময় তমঃ ছেরে চোক। " নারীর অন্তর জেনে৷ তেমনি আঁখার " দতীত আলোক নাই হৃদয়ে যাহার। "থাক্না সহজ্ঞ গুণ এ গুণে বৰ্জিত, " কে করে গণনা তার ? সব অন্তর্হিত। '' শুন হে প্ৰযোজ্য এছেন রতনে, "হইলে কামনাত্ৰ পাইৰে কেমনে। " कतिशा औधात कृषि, এ अभूना धन " প্রদানিতে দক্ষ হয় বল কোন্জন। " विधिष्ण (इन धन छ: एक (घर्ष नाजी, " কুলকলঞ্চিনী জেনো অভিধান তারি। "সে ছুটা করিতে কম মকল কর্ম, "বিচার নাহিক তার ধর্ম অধরম। "এ ছফ্ট কামনা তব কর পরিছার, ' সামান্ত হুখের তরে ছেন অবিচার "না করছ কভু তুমি কহি সবিনয়, , " धर्य-धन महाधरन कति विनिषय, "ভগ্ন কপৰ্দক সহ ন। ত্যক্ত কখন, " ভগ্ন কাচে আশ। তাজি হীরক রতন।" माश्नीत राका छन् जीवन उथन, करह कथा हानि हानि विकानित मन। " শুন লো স্ক্রি, নারী ভুলাবার তরে, " পুৰুষে মিখ্যা রচন । পুত্তকাভ্যস্তরে '' করিয়াছে শত শত, বাক্য প্রলোডন " প্রােশ করেছে কত কে করে গণন।

''কিন্তু দেখ শশিমুখি ভাৰিয়া অন্তরে,

"পাতিত্রতাগুণ গণ্য কি জন্ম ভূ-পরে।

''অকার্য সাধিতে নর কর্ছ কৌশল

" इिच्चार्ह अस्मर्था क कर्ड मकन?

" চিরদাসী নারী-জনে রাখিবার তরে.

"নানা ভীতি প্রদর্শন করিয়াছে নরে।

' যে কর্মে উপজে তুগ সে কর্মে পাশ ?

"কহিতে আসারে হাসি, একি মনস্তাপ।

"পুৰুষে অপর নাবী ভজে কড শত,

" দে সময় নাছি পাপ দে যে আছবত।

" আত্মখ ভরে ব্যস্ত আঁটা গাটি পরে.

" জাতি কি অজাতি নাই সে যে আত্মতার।

" जाति । एथ एक्सीमनि कतिया यहन,

" विधि गंठनिल छात त्रमगी-इछन।

"তার সুকুমার অলে মাধুষ্য মাথিয়া.

"তার স্থকোমল করে মধু রম দিয়া।

" भीनार्यादानि-मश्युक्त श्रक्त शानत्न,

"मिनाहेश मधुत्र नृजिन। विजत

" প্রকৃতি হৃদ্দরী, রূপ দেখাবার ভরে,

'' আবরি অবওঠনে ক্রাসা - স্থাকরে,

"গৃহমধ্যে লুকংয়িত নছে 'থাকিবারে,

" সে সৌন্দর্যো কিবা ফল কছ লে। আমারে !

" अकूल अञ्च मर स्मिमर्ग जूननी,

" কিছুক্ষণ শোভা দিয়া শুন লে। ললন।।

" विश्वक इहेग्र। जुछै इत्र स्टूर्मा जन,

" কে করে আদর তার এই সে ভুবন।

" যদিন আহছ যোবন লুঠ মজা ভবে, " হ দিনাত্তে যেবিনের চিহ্ন নাহি হবে। " योजन बूक्ष मनुष ना कतिरल वाहा, " রাখিলে পেটক মধ্যে কিবং ফলোদয়। '' অর্থ আর যৌবনের না করিলে ব্যয়ী ' পাকা না গংকা তার একি লোকে কয়। ' অভএৰ চন্দ্ৰাননি কৰ্ণণ প্ৰকাশি, " জুড়াও সভত চিত্ত সন্নিকটে আসি।" এ হেন দাৰুণ বাতা শুনিয়া মোহিনী नाभिन इनग्र यन बार्ड जतकिनी। মুখে কোপ প্রকাশিয়। আশহা জনুরে, मद्यांबिन अहेत्रार्थ (महे द्वरी नाउ। · ক**হিতে**ছ রে লম্প**ট সতীত্ত**-রতনে ं ७ व मर्था भंपा नश् और स्म कुनरन। " তোমার কামিনী কেছ যদি এইরূপে " চেফী। করে ডুবাইতে ভ্রতভার কূপে। ' হোমার অন্তরে ভবে উঠে কিবা ভার'দ "ভাৰ কি বাসহ তবে অসতী ষভাব " তোমার কামিনী হৃদে ? উঠেনা তথন "তৰ আনন আকাণে মলিনতা খন **৷** " मख्ख-नियोग-क्ष नाहि वस होत्न " সুং-তৰু শান্তি-লতা অন্তর-উদ্ধানে ? " नांभिरादा म लम्भा वे वांभना-विद्वार '' नाहि मित्र मिथे।' गेत्रिक डोट्स किंडुड " ঘোর ক্রোধ-ব্রজ কণে কণে নাহি খালে? " विश्वाम भैत्रल-त्रुकि देश्धा-वैभ उत्त

" প্রতিক্ষণে নাহি করে? করিবারে কর " रिर्भा-वीम । क्ठ जीवे अमरा जैमर ''ইছা ভিন্ন কে করে গণনা দাধ্য কার? ''তোমার রমণী ভ্রম্ভা হইলে ভোমার " কিখা বুঝি ও অস্তরে নাহি হয় কোধ ! "তোর হৃদে সুধরাশি উঠে হয় বোধ! "করেছিদ্মনে তুই পাইয়া স্থোগ '' বাসনা করিবি পূর্ব ? তোর স্থপ-ভোগ ''मज्थ कतिनि जूरे अहे अनकारण? <sup>প্</sup> দ্রীকৃত কর্তোর হেন **ম**ণ্ আশে। " প্রাণের অধিক ভাবি সঞ্জারতন, " বাধিব কি এই প্রাণ বিয়ে গৈ গে ধন ৮ "ত্যক্রিব তথনি প্রাণ যবে তোর কর " পরশিবে এই অঙ্গ শৌন্রে পামর। \* কাজ কি জীবনে ছার সতীয়-বিহনে ? "রমণী-ছদয় খুঞ বিনা দেরতনে।" **মোহিনীর কথা শুনি জীবন-অন্তরে** काथ-तां**छ** ममूपिन कांशि थेत थेता। ताक यथा धानिवादत यात्र स्थाकत, সেরপে প্রসারি চলে তার যুগা কর। (र शांठक गज़नज़ करतह मर्गन श्थानिधि, ब्रोड यटव श्रमाटक जानन। ममर्थन कतिशाह हसामात मन्। মোহিনী হইল ঠিক সে রূপ বিবশা। थमाति असे ठात भरत भरत भनी, ट्रिन काल इतना चारत गंग सन सनि।

मीर्यकांत मत अक आक्रिया कवाहे, धारविन वांगी गरंश माति मानमारे। ममल भंदीद जार्थ कार्र कर कॅिनि अभन्न ७ के मस कड़मड़। রোষ ক্যায়িত চক্ষে চাছিল সে নর, माहिनीत स्थतानि, जीवरनत छत, করিল মে উৎপাদিত; দিবা-চকু যথা দিবাচরে দেয় স্থ কাত্রিচরে বাথা। বহুল ভংগিনা পরে করিল সে জন जीवत्मत भे: त्म हाहि: सुभा वित्रवन (यह शाहिनीत शक्क: गतम निक्रम (মন্ব্র-ভারতী-সতী-এচতি-বিনোদন) मिरे **की**रन जलात जाए कि मस्मर-? কঠোর বচন তার জালি দিল দেহ। মাছিনীরে অত্যেকরি চলিল দেনর, ञ्चर्थ अर्विमिन धनी व्यापन व्यवहा হে পাঠক সহাদয় কেবা এই নর, জানিতে উৎস্থক অতি তোমার অন্তর। क्मार्न अञ्च कथा अवन (भाउत হইল তাহার তুমি জামিতে ভংপর। শুন তবে ফুণীজন রভান্ত ইছার, ত্রবণে ভোমার হবে আনন্দ অপার। দামিনীর বাদী তব ছয় কি শারণ? मामिमीत कथा कि काना अहे कान। वमस मधन भाग नाशिजिनी - वारम, नाणिजियी हिमा गध हाचा छेणहातम

वमाख मामिनी-माद्रांना मिन आन्नन। मामिनीत महिशादन हकाल मकन অবণ করিয়া তার চিত্ত সচঞ্চল আছিল অতীৰ জেনো, হইতে তথন भरत मर्ग मिक्कान हिला এই জन। মাধৰ ইছার নাম মঞ্চপারী ছোর প্রেমালাপে সদা রত রক্ষরসে ভোর! भारत्य **अक्षाठी, मद्रम** • अस्त বিছাধনে আস্থাহীন সুধু সুখচর हेल्फिश स्ट्रांश मान, र्थाना मन-मात्र, মোহনে বাদিতে ভাল তুলা নাছি যার ! মোহনের পিতা শুনি এসব রুতান্ত উঠিল ক্রোধায়ি ছদে যেন রে কৃতান্ত। मरनात्रमा-बार्ण करक कतिया उर्कन, " দেখিব রে ভোরে বেটা ভুই সে কেমন। " রাজ-খারে অভিযোগ কলাই করিব, "ছদিনাত্তে আমি তোর গৌরৰ ভাঙ্গিৰ। "যার বলে হইয়াছে তোর এত বল, "দেখিৰ কত সে তার আছে ধন বল। " ভिটা-मानै अक हानि ज्ञात निव करत्र, '' একর্ম-কর্ত্তারে লবে। স্থদ জীঘরে। '' म इः थी बाजाग अनि कथा अ जक्त **ভ**য়ে অঙ্গ জড়গড়, চিত্ত সচঞ্*ল*। ভয়েতে इ'য়ে বিহবল সেই দীন নর, কহিল এ সৰু কথা জীবন - গোচর।



জীবন আশাস বহু প্রদানিল তারে, ভীকর ভীকতা ভাকা আইনে কাছারে? হে পঠিক সহাদর হয় বি অরণ ज मिन इकिंग वित विति वितियन इब हिनित हिनित संमख निवम, নির্ধিয়া প্রকৃতির মূরতি বিরস, कात ना गांनरम इत जालक छमत ? নভক্তলে খনাবদী পূণী তমোময়। निविक् नीवममत्म जाम्बद्ध शरान, টিপির টিপির নীর তাহে বরিষণ। यत्था यत्था यत्नाशितं त्थाल तोन्यिनी, भर्या भर्मा गेहिकर् चन कामिनी। মধ্যাত্ম সময় সন্মা যেন আবিভূতি, নিরীকণে হলে উঠে ভাবনা অন্তত। পিপীলিক পেয়ে পক্ষ ডানা প্রসারিয়া, शृंख भरशा मरल मरल विकास श्रितस्। ্বায়দ বায়দী বদি তৰুর উপরে, উড়িছে বিসিচ্ছে বাস্ত উদরের তরে। शक्यां अ भिशीनिका धरत करन करन পরকাণে ৰসি ডালে নিযুক্ত ভক্পে। স্থার বিহণ: পক্ষ শোডা চিকণিয়া, वित्रवर्ण खर्छ ज्ञान पूर्व नित्रवित्र। **छे**टे**ळ:ब**रत एकगान करत्र कनत्रन, मह्त मह्ती नाष्ट शाच्या छे०नव। रेक्केक निर्विछ हात्म वाति शब मित्रा वर्गात मनिष्ठ छल कर्न मूड़ारेश।

मिवम - वर्म "किह है हिंदि नाद्र, महा। नगागं रात इतन। अकवारत। একে তাर्यायय निमि जार घनमन, আক্ষম সম্পূর্ণ করিয়াছে নভস্তল। मश्रुथक देख औरिं मिथिवर्रत नात्र, নরকুল অন্ধ যেন ছইল আঁপারে। कर्ग कर्ग क्राथा प्रश्रीहरू क्रा তমঃ তায় ধরিবারে একান্ত লোলুপ। প্রসারিয়া কর ছুটে ধরিবারে তায়, यन शार्ष भीमामिनी जमनि लुकाश। ওড় গুড় ডাকে ঘন স্ফাতিমিষ্ট অতি, গগনে ছইছে যেন দেবের আরিতি। यहांक धामां देव (वज़हेर छेज़ि। পৃথী'পরে পড়িতেছে যেন বাজি পুড়ি। কিমা জ্ঞান হয় তারা হইতে গাগন খসি পড়িয়াছে তার। এই সে ভবন। नित्रिटि मान्टरत शाशिविक मन, রজনী সময় যার যোগ আগমন। বাদলার বিভাবরী বড়ই মজার, যাহাতে দাম্পতা ত্রখ উথলে অপার। বাহিরিল গর্ভ হতে নিশাচরগণ, নিজ নিজ **খীছা** তরে ভ্রমিছে কানন। হিংঅজন্ত সিংহ, ব্যাব্ল, ভল্ক ভয়াল, ধরিরা ভীষণ মুর্ভি জমে যেন কাল। পৃণীন্থিত সৃষ্ট জন্ত মধ্যে কোন্ জাতি, ধরে ভয়ঙ্কর মূর্ত্তি যবে আসি রাতি? ্র্ন্ত নাছিন কোজন কার। ইন্স নর্গ। এ প্রেশ্ব উত্তর দিয়াৰ বল কোন্ জন ? (म क्क खश्न मार्स, यल (इ (कमान অভিধান তার পাবে এই সে ভুবনে। शूहे शूहे व्यक्तकात हिन् हिन् नीत. नम्भरहेद कि सर्याम भारत स्थीत। সরল-ছদয়া নারী মঞ্জাবার তবে, পরিকর বাঁধাচারু চারু যক্তি করে। মন্তকে উঞ্চীৰশোভ। চাদরে নির্দ্মিত, সীধুর হুগদ্ধি কিবা লাম্পটা বিহিত। य-डेक थाहीद्रश्रदेश्वरक डेलक्वन, व्यापित व्येडिया गत्न निकार मिनन । পরে ফাঁদে পড়ি লাভ পাছকা গুহার, এর সম মজা কিবা ভাৰে আছে আর ? कामिनीकून - कणेक कून - कनिइनी कामिनी काथात्र गाँदैक रात्र डेचानिनी, **जिल्ड जीटनंद मधाकामज्दत धनी,** नहन-इादिनी क्रश नक्का (म क्रमनि। कीन शास मिन्न हरेह वारित সিঁদ কাটিবার তরে মান্য অছির। वह अमम्भा , वर्ष वह निवरमद्र, व्याक्तार अकवारत ना शारेरम छित। অর্ধ অধিকার হুরু অপরাধ ভার, धन्न मम ज्ञाश किया आहर जान ? কোৰায় রাতির দক্ষ্য বাহির সদলে जनकत मुर्कि धनि एकानि मन्दन,



পড়িছে धनीई गृहर गृह सूर्व जर्दन, কাটিছে বিদিছে তার নিষ্ঠুর অন্তরে। কিবা অপরাধ তার। জাননা পাঠক? ज्ञ निष्म अधिकांत्र, मा यादि मलक ! धनीत मछक ऋधूं याटन वह नग्न দক্ষ্পাবে অর্থ রাশি মজার আলয়। धक्र धक्र बद्रगंग धक्र मिर्हे गंड, কোণা হথ ছান আছে বল পৃথী মত। मश्राम गामन गम अन्त (करा आदि? আত্মহাধ তারে নালে কে বল পিতারে ? निभी भिनी इथहत निस्त पूर्वन মধো মধো ভগ্নবাটী শব্দ নিপত্ন। मर्थि मर्था मियाजीक करत कमहर, পল্ল-পদ্লি-জ্বলে ভেকের উৎসব। मर्सा मर्था विवानन जारक छेटेकः खरत्र, নানা রূপ ডাক ডাকে শানা কাকোদরে। রজনী তিমিরারতা সময় এ স্বর, উদ্বেশ করিয়া তুলে শিশুর অন্তর। শিশুর ভাক্নিলে খুম এর মাঝে মাঝে, আপনি আশহা আসি সে হুদে বিরাজে। जमनि जानि धटत अनुनीत शन।, বকে তুলে অমি তার জননী সরলা। ক্লোমল শুন ধরি মুখে দেয় মাডা, তুড়িতে শিশুর ভীতি সে ক্রব্য বিধাতা जुिन। त्रमण वर्ष, जात्य इति काल, শিশুর আশকা তুড়ে, খাজ্যের জাহাল।

् निगीयिनी इथरत निस्क पूर्वन, ेमतन मान्यगर् विज्ञात मगन। মোহন-আবাদ বাটী হে পাঠক জন, তোমার মানস চক্ষে কর দরশন। मण्डन मञ्जा करत खुनि यम्भन, আর দশজন করে বালে তরবাল। কাল মিসমিদে বর্ণ দৃশ্য ভয়ম্বর, क्रिका मानक्क बाँधा शतिकत। गाँदा लच्छ जूमि कन्ना शमबारम्भ याद्र, হুহুছার, শব্দ কার বিধৈ কর্ণবার। माननाहे, काहे काहे, ठांहे (मश्रि खन्न, থন খন, শক্ষমে, থজো থজো হয়। ভন ভন সে নিম্বন, প্রবণে যঞ্চির जन काँ त्रि, यांद्र मात्रि, यांनम जिन्द्र। बेहेत्रार्थ कुड़ि अन मञ्जा छत्रकद्र, ষেরিল মোহন বাটী কণেক ভিতর। করেতে কুড়ালি ধরি ভালিল কবাট, व्यातिमन वाणि मत्था मात्रि मानमाछ। প্রভূ-পরায়ণ ভূতা হুটী দে বাটার, রক্ষিতে প্রভুর ধন দিল ছটা শির। পরে দহাগণ গিয়া পড়িল দে হরে, যথার মোহন-পিতা ছিলা নিজাভরে। আকর্ষণ করি কেশ বাছিরে আনিল, অন্তাহাতে ছিন্ন ভিন্ন শনীর করিল। অব্রাহাতে শিরণ্ডেদ করি অতঃপর, अरविन भादिनीत ग्रह - जाजासता

চাহিল দম্বারী তার কাঁস আভরণ. হৃদ্ধী মোচন করি আপন ভূষণ निर्क्तिति क्रुनेग्रहा निक्राभन - कर्ब, পরিধিয়ে চীরবাদ ফেলিল অন্তরে সুন্দর বসন তার কাঁপি থর থর, জীজন-স্থলভ শঙ্কা শুকালে। অধর। সক্ষম হরণ করি গেল দহাগণ, তৈজসাদি না রহিল অর্থ আভরণ। यामिनी थाडा उक्तरम, डेर्जिन कन्मन মোহন - পিতারে শব করি দরশ্ন। साइन-जननी कांत्र विद्यार्ग পछित्र, সে কেন্দন শুনি চিত্ত কার হয় ছির? भाहिनीत गण्डमा जन्मशाह्य जारम, क्रमग्र विमीनं खिन (म दृश्य श्रकारमा। হে পাঠক হুধীৰর, করেছ দুর্শন মোহিনী প্রকুল আতা হলে। কিছুক্ণ। कद मन्दर्भन अरव (म मूथम छन, বিষাদ বসেছে তথি চপদা চঞ্চন। যেন চপলা চঞ্চল গ কোথা সোদামিনী लारग म मिन्नर्ग कारह। धरत ना मिनिनी উপযান मে রূপের জেনে। সুধীবর, द्यमत्री तमगीनिधि जान्न छेशत, বিষাদ বসিলে পরে পাতি সিংছাসন, ठिक यन श्र्याकरत कमक मर्भन। ঠিক যেন অলিবয় শ্বেত পদ্মোপরে र्ठिक (यम जादा ल्गाएड जाँचि-इन्नीबदा।

394

ठिक त्यन कूँ ह करन का निमा मर्नन, ঠিক যেন শিশু চক্ষে কজ্জন শোডন। कृतनत्माहिनी ज्ञभ अत्क मान्त्रीकः वियान विभित्न उथि कांत्र मन कितं? षालुनाम (वनीवक शर्फ्ट धनीत, जानत्न উঠেছে गिया मकल कथित। চম্পক - কুমুম - বর্ণ একে আননের, बक्तिमा मश्यार्ग यम वर्ग गानारभव। की उस मुध्य धन की उ अंथि देश. श्वामा अध्यक्षाता मत मत वहा मिन्धा-मागद यन इटर विकादित. কচি ভরে ভালিতেছে মানদে প্রতীত। বাৰুদ এমন কাল বাজি অভান্তরে, সেও অগ্নিভাপ পেলে কিবা শোডা ঘরে। (महिकना बित्थिएड कडरे क्रेंगिड. त्म जात्भ थाजामा त्रीनार्था वक्षिता कि जाक्या (इ शांठक उत्त (इ दनना, তাপে क्रथमती इत् क्रथमी मनना। मनिन वमन शीत मञ्जूषा भित्र, পদ্মিনী রহিছে যেন শৈবলে আবরি। মানস মোহিনী রূপ গুরুতি সতীয়, कृष्टिनिका छाकि यम गरन दश हित। क्रमती त्रभंगी जारमा विमान वियान, श्रकत्वत्र जीवि शक्त वक्षरे ध्रवाम। আমার ৰচন এই সতা কি অলীক, ছে পাঠক সম্ভাগ সম্ভাগ ঠিক।

टर शिठक अक्रमज कॅमनी याशांत्र স্বন্ধরী বলিয়া গণ্য পদ্মীকা তাহার **धकवात** कत्र जुमि, कामा ज न्त्रमंगी, বিষাদ রমণী আত্তে শোড়ায়ে কেমনি, जानिए भातित्व उत्व व्ह भाष्ठक जन, অভুতৰ সে ভাবের সম্ভব কথন ? সর্বাথ হরণ করি গেছে দয়াগণ, খাদ্য দ্রব্য কিছু নাহি ছিলা সে ভবন। श्रुक्तन काठे। हेन जित्र अनगटन, इः शानुन कठेताधि एकार्टना जानसा मत्था मत्था छेठिन तम कन्मत्न द्वान, ব্যাপ্ত করি দিল দেশ ডাকাতির ঢোল। লোকে লোকারণা হলো অন্তর বাহির, প্রতিবেশীগণ হলে। **শহ**ায় অন্থির। नाना लातक नाना कथा करह भरा घारहे. নাহি অন্ত কথা আর দেই পল্লী হাটে। এ ডাকাতী-কর্ত্তা কেবা হে পাঠক জন ? कॅाशिर्व उर क्रमग्न कतित्व अवर्।। পার তুমি করিবারে এর অহুভব ? 'মারিকেল মধ্যে বিষ কোথার সম্ভব। कीवरनत कार्या धरे स्त स्थीकन, खकार्या माथिएउ अर्थ (कोणन मुखन। নিজ ইলটিয়াল ধরি দহার আকার, সর্বনাশ করিলেক মোহন বেচার। জীবন ৰদি না এই করিত কৌশল, কেমনে কামনা সিদ্ধি হতো তার বল।

े बाजवात्त्र अख्टिया १ रेटला श्रदिनन, े পড़िड़ के आन-कारन यथा जारन मीन তবেত জীবন, তবে তাহার ১নন इरेज भूग कियान याँग स्थी खन। 🕟 षरञ्ज जीवन ४९म निज स्थ उरा ? এমন স্থাহিত কার্য্য কোথা পৃথী'পত্রে। অক্সের লইয়া শির প্রমোদ ভুক্তি, এছেন মজার কার্য্য কোথায় পাইব। पर्कात्र महेत्रा भिन्न পार्टिश वर्षद्रामि, কহিতে এ স্থ-কথা মুখে আনে হাসি। খেকের লইয়া শির তাহার রমণী. पू श्वित भेद्रमानत्क (म द्वर कमिन्। कांड़िया जरशत जमि इरव निक वाणी, কোথা পাৰো ভবে হেন স্থ পরিপাটী ? ष्यात्रश इरेट दूर्भ निक स्थ उत्त ध दिन मजान कथा काथा शृषी'भदा। जुरुकत रुदिया निका हरन निक यन, क्रित जब मकरम स्थू स्थात नगा। किंद्रा भरमांभद्रि भम द्रव आगि विन. করিবে' চরণ সেবা দশটী রপ্দী। रहेर जामि ठाकूत ज्ञा इत्र (छम्। **षद्धः म'त्य चोमि (यटम क्याद्यांकि उन्।।** वनश लोगता वन वन नवगन्, আখার এ বাকাগুলি হৈনিষ্ট কেনন। বল বল নরগণ এ কথা ভাষণে আচতি কি নাহি জুড়ায় ? সুধা ৰয়িষণে

ভাসে নাকি তব जन व वाका वर्गन ? (रामः कि एटनना अर्ज व वाका खबरंग ? তবে 😢 পাঠকুজন ' সুধীর জীবন, কেন না করিবে এই করম এমন। जीवत्न ना कह उत्व कडू मन लाक, করে থাকে ছেন কাজ যাহে জ্ঞানালোক ! . ‹ পরিপাক বিভার্ম যার হৃদে হয়, ধরি থাকে হেন বাঞ্চা তাহার হৃদয়। বুরিমান এ জগতে হয় যেই জন, এ হেন স্থকার্যা হয় ভাষারি মনন। कृतारात तुकि यात तुकिरंद रकमरन, কত কুৰোদর হৃদে ক্ষেত্র ধংসনে। জীবন দন্তার কাষ্য করিল গেংপনে, প্রকাশ্যে করি**ল ক্রো**ক ভূমি ধরে ধনে। মে:হনের পুরক্তন পার অরকষ্ট, माहिनीत्रभगांधुरा करम इतन जरे। যে মুখমগুল রূপে মেছিত নয়ন, म पूर्वानि नित्रीकर्ण कॅंग्टन्ट्र कीवन। দিন দিন তত্ত্ব কীণ বাহিরে পঞ্জর, প্রাণ ফুকরিয়া উঠে বিশুক্ষ অধর मुम्मर्गन कति, जात, वर्ग, नितीक्करन, জ্ঞান হয় পাংশুৰণ আবুরি আননে। পরশিলে যে শরীর হতো লোছোদয়. म प्रकार किंद्र किंद्र भीर की रेक्स मा শনে মনে জ্ঞান ছেন যেন রক্তরাশি, -নির্গলিছে অত্রুক্তাপ চক্ষু'পরে আসি।

শরীর শোণিতজ্ঞ হলে। সে কারণ, পাইশুবর্ণ আৰম্ভিয়া তাই সে আনন্। প্রিধান ছিল যার সুধৌত বসন, মলিৰ হুজীণ বাস পরি সে এখন। শোডিত যাহার করে কাঞ্চন বলয়. পিতল বলয় তথি আহা মরি রয়। ষে বক্ষে শোভিত চাৰু মৰ্ণ কণ্ঠহার. পঞ্জর-আবলী তথি কণ্টক শোভার। বেণী পাৰ্শে অৰ্থ-কুল শোডিত যাহার, ধুলিরাশি রাশি রাশি উপরে তাহার। চিকণ পর্যাক্ষাপরি যাহার শয়ন, ভূমিশ্যা আহা দরি তাহার এগন: চৰ্ব্যা, চুষ্যা, লেখা, পের যাখার আশন ; মোটা অর এক মৃষ্টি তাহার ভক্ষণ। এ কটের ছেতু কে রে ? সৌন্দর্য্য-রতন। त्रभी - गोम्पर्यात्रां कि कर्छत कांत्रन। ধন্য হে জীবন দিই ধন্যবাদ শত, না করিবে কেন ভূমি কার্যা অভিমত। যে মোহিনী-রাণ লোভে কর ছেন কাজ, চেয়ে দেখ একবার, পাবে কুমি লাজ। চেয়ে দেখ একবার মোহিনীর পানে. আনন্দ বিভৱে কিন্তা যন্ত্ৰণা প্ৰদানে। इस कि ना मन्ना उव हां इ अकवात. इत्र कि नाम्बर्गाछव ? कि सब जायात । मन्ना मि कमन जारा जान कि जीवन ? দয়ার যোজন অন্তে তোমার ভ্রমণ।

দরার মুখমওল পূর্ণ অংশকর, দ্যার লোচনগুণ যুগা ইন্দীবর ( সরোৰজ্ঞ ভাঁটা **হটি বা**ছ দ্বয় তার্ন্ত্র, পদ হয় হু**টা জ্লস্তত্তে**র আকার। নবনীতন্তম্ভ সম অবর্ব তার কৌমুদী সদৃশ রূপ আস্পদ শোভার। হেন হুকুমার দ্রব্যে যাহার গঠন। লৌহময় হৃদি কিছে তাহার আসন? विम गुरू थक मिन (माहिनी सुन्दरी, <u> अळा वरक मद्रमत्र, धनारत्र करदी।</u> শরীর নিতান্ত শীর্ণ দেছে নাছি বল, ছায়া **মাত্র আহে সুধু ধনীর 'কেবল।** হেন কালে অৰ্চ হলা নারী এক জন আমি উপস্থিত হলে। মোহিনী সদন। কেশ গুলি অৰ্দ্ধ পাৰু বিউনি তাহার, ্রুড়ি মাণী তরু বাঞ্চা মারিতে বাছার। **ठम्मत्मत्र (काँग्रे) इते। त्मार्ट्ड ठाक छा**रत, ইফদৈৰ পূজা চিহ্ন হরি হরি গালে। করে শোভে জপমানা স্পন্দন অধর, লড়ে মুখ লক্ষ বার পলেক ভিতর। यूर्वाकातन ठ्यूमिन हिला हुन जीत, কোটরে প্রবেশ এবে বি্যার্টে অস্থির। নাসিকার অঞ্জাগ খুতি অভাগ, ধরিতে যাইয়া চাক বাড়াইছৈ রাগ। অর্দ্ধেক দন্তের পাতি পড়িয়াছে খিসি, গণ্ডদেশ ভাবি ভাবি পড়িয়াছে বিস।

্বোধ হয় যেন মহন প্রেনির্বচ্ডরঙ্গ, थार्यम करत्रह शिक्षा तारे मध यक। (वाध इत्र '(यन महन त्रीक्षर्ग-उत्रक्र. হেন আত্ত চডা'পরে করিতেছে র<del>ছ</del>। রক্তিমা অধর ওষ্ঠ তামুল ভক্ষণে, ं हूँ हिना है जाटह कि हू शम ध्वरक शर्ग। তাই হে পাঠক স্থধি চলন স্থন্দর. দেখি থাক পাবে ভাব তোমায় সম্ভর। श्रुर्थीं वर्मन थानि जाम श्रिक्षान, পদোপরি বাস-শেষ বাম করে টান। **बन्नम 'मगन्न हिला बन्न: अज्ञाहांब,** তিরোহিত তাহা নাহি সন্ধী পেয়ে আর। मिहे मि कोइन अर्व धर्म-भाष मन, পুজাকালে পুর্বপতি শতেক অপন। এ হেন রমণী এক আসি উপস্থিত, মোহিনী सुमनी कार्छ वनन इमिछ। भाहिनीत शास हाहि मिके मखायान. पुरित् धनीप मन छन्द्रक अकर्मा " একি লো নাতিনি হেরি আহা মরি মন্ধি, " मागात श्रुविन थानि तो इ अह धति। "कूत्र भेड़मन मर याद्या वम्न, "विक्रक नेत्रिनी सम तम भूथ अथन। " नव किमनई में कशान हिक्श " किसा-इन र्म क्षारन क्राइट कर्नना " তাই সপ্ত শিরাকারে চিন্তা-হল-রেখা, " (चेंक भंजमन-मटन कींग्रेटकारी (मर्था।

" যাহার কটাক্পাতে হ্রধার করণ, " সে টুঞ্চিতে হয় একে বিষ বরিষণা! " যে সেশিগ কান্তি ছিলা কৰিত কাঞ্চন, " লৌহময় জবে। যেন ভাছার গঠন। " गोलाल गालाल बार गोलाल नहीं है. 'পুৰুষের কিবা কথা টলিত লাহীর भानग-भक्तज, अभ कति निहीकन, " সে শরীরে আহ। মরি কি আছে এখন। 'ভোমার ছঃখের কথা শুনি লো নাতিনি " তব হংখ দূর তরে আমি আকাজ্ফিনী। " কেন এত কফ সহ মদ বাকা ধর, " ভাসিতে ভ্র-সাগরে তোমার অন্তর। " মনোহর অট্টালিকা উপরে বস্তি " হইবে নাতিনি তব সুংপ্রদ অতি। " मार्ग मार्गी मन जन 'त्रविद्य हर्रा, ''শরীর ভরিয়া দিবে কাঞ্চন-ভূষণ। "পরিধান পটবাস অভীব মুন্দর, " আতর-গোলাপ-গন্ধে অন্ধ ভরভর। " চর্বা, চুষ্যা, লেখা, পের ভোজনের ঘটা, " দশ দিনে শাহিরিবে পূর্ব্ব রূপ-ছট।; " এক জান ৰড় লোক তব প্ৰতি মন, " যাহার দৌশর্য্য-রাশি ক্রু নিরীক্ষণ " आमि तूज़ी मांगी आ कि छिल हेक्। कति, " তোমার তো কথা নাই যুবতী স্বন্ধরী যুক্ত व्रकात वाका व्यवन कतिया माहिनी, তৰ্জন করিয়া কছে ঘনধনি জিনি—

" কি কহিৰ তুমি হুৱা ভজিয় ভাজন, " দিতাম নহিলে শিক্ষা তোমায় এখন। "ব্রাহ্মণের কন্যা ভুমি এই রুদ্ধশা "किहां अ कथा इत्ना (कम्म खत्रम्। " কি তুমি দেখাও বুড়ি অর্থ প্রলোভন. " কি ভূমি স্থাধের কথা করিসে বর্ণন। " যদি অর্থ রাশি পাই এ সংসার ভরা, " অधिकात मम यनि इश वस्त्रात्री, "পূণীছিত যাবতীয় যদি নর্গণ " मम जाज्जाकादी इ'एम टाउ राज्य मम मन : " उथानिए ज कीरन ना इस प्रकन, " স্থােক সদৃশ রবে সতত অটল। '' দারে দারে এক মুঠি যদি ভিক্ষা করি, " তথাপি কি পাতিত্রতাধনে পরিহরি ? " হজীণ বসন যদি পরি অক্ষোপরি, " তথাপি কি পাতিব্রতা-ধনে পরিহরি ? "यनि এ क्रीवन किह नश शरका हति, " তথাশি কি পাতিত্ৰত্য-ধনে পরিছরি? " थिकू म नाजीत श्रीत थिक् मिरे भंड, " তাজে যে সতীৰণনে হয়ে বুদ্ধিহত। 🗀 " अकृति हिन्दा यां इहेर मधुर्ग, " जिका स्पेति देई वे जान व कर्या विमूध " इंड पूर्वि अ जार्रीं, केड्डि अन कार्रा, " बूड़ा कारन द्वारथा यम किहू धर्य शीरम।" নাহি পায় সেই হুছা পথ পদাবার, লজাভাৱে জড়সভ কথা নাহি আর।

## १म नर्ग । । पारिनीस्मारमं क्या । । ১৮

युवजी तमगी अक खुंश अक निम,
जीति महावि करह हरेत मधुथीन।
" छन ला माहिनिनिनि, अक ११ कथा
" मिला पूर्वि हैं हा छनि, वनि वांका यथा—
" अकजन धनी लांक छामा नहेवारत,
" श्रीकाहेरत शालिक मह नगंधी काहारत।
" नहेग्रा छामारत यारत क्षकानिया वन,
" कित्रारह महे इसे छिलांग मकन।"
समती म कथा छनि खरा कफ़मफ़ नहेन अकी नांभी मरक मफ़ वफ़।
शनाहेन शिवानरत ११ खारत धारत धनी,
खरार विह्नमा हरत माहन-त्रमगी।

.1.

## वर्षेत्र मर्ग।

"For when to the view
Forth from its rayen frings the full chance flice
New with such force the swiftest arrow flow."
The is the stake late coll'd who pours his length,
And hark at once his venom and his strength."

Don 1000.

" অন্ধি কাব্যদেবি, তোমা করি আরাধনা বঞ্জিত ছইল দীন চাছিয়া দেশ না সৌদ্রাত্ত অমূলা স্বত্ত, লভিতে যে ধন চির আকাজ্জিত আমি: অদৃষ্ট কেমন मम वृत्रिकाद्व मादि, क्रिट मसुन সুধা, উঠি হলাহল জালায় জীবন। তৰ তব্নে কাৰাদেৰি, সহি কফ কত, कीवानत सूथ मय क्रेन विशंछ। তোমা সেবি কোখা দৈবি. হবে অর্থাদয়, खागारमार्य इःथ-श्ल दिधिर्इ कमश्र। शुक्रांन्भक विन यादा शृक्ति किन क्रिन, ভুলেও পরের মন্দ ভারি না হাদয়ে, কুৎসা-তীরে বক্ষু ভেদে সে কেন নির্ভয়ে? কেন তব তেজাকুর রোপিলা অন্তরে, ভাইতে। গো এত জ্বাদণ সহি পৃথী'পরে। ন্যায়্য কথা কছিবারে কেন গো শিখালে, धर्वजीक कति (कन किना जक्षारम।

তোমার সেবাই দেবি; অনর্থের মূল, তোয়া সেবি আর নাহি স'বো নিন্দাৰ্শ। **এ** वित्त (काथ और निरक्ति (नथमी, শর্মন শ্যা। উপরি করিত্ অমনি। বিরাম-দায়িরী নিজা আসি উপস্থিত, অপুর্ব রমণী ক্ষপ্লে দেখি চমকিত। েথিতু রমণী এক রূপ চমৎকার, চক্ষের বালাই যায় দেখি কচি যার। কবরী বন্ধন ঘেরি শোভিছে গোলাপ, मन्मर्गत य माधुदी यात्र मनलाण। চাফ কিসলয় যুক্ত পল্লৰ চিকণ, मत्था मत्था जात्ह्यांत स्टाफ थायून। नाना कूनमन निंथि (नाजिए नीमाइ, মানি হইয়াছে শেষ যাহা অচতি-অতে। শ্ৰুতি নিমে ছলিতেছে প্ৰাক্লি ছল, লড়িছে স্বাকিছে দেই দেশিখা অতুল। নাসা নিমে শোভিতেছে পুষ্পায় মত, কুদের নোলক যাছে ছলিছে **সত**ত। মল্লিকা কোরক বিনির্মিত মুক্তাবলী, উজলিয়া রহিয়াছে উচ্চ উরস্লী। कूलयञ्ज हूर्त करत, श्र्वाल बलग यात्राज (मीन्पर्या औषि मेन काड़िलग्र। কিবা জুঁই গোড়ে মল শদদেশে শোডে, भूनिक मानम हेडन त्य त्रीमक्ष ल्यारकः। নিলীমা-বরণ-বাস অতীব স্থুন্তর, बर्कारंजन अन बर्क बार्ट मरनाइन।



निजीक्त केति वर्षे वर्गान वमी, मानहम अभूक हिसे ध आह कमि। দেখিড় দেহ উপরি যেন রে তাহার, वहिट्डि नमनमी आर्त्राशासाता । ভূধর স্থউচ্চতর শোভে স্মূরি সারি, निर्वात वर्षात वीति क्षणि गरैनाहाती.... তৰুৰর নান। জাতি কিবা ভাতি তার जाँथि मत्नामानि मृत हित कि यात। তারি'পরে মধুস্বরে পক্ষী করে গান যেমনি সৌন্দর্য্য তার তেমনি রে তান। লতাগুলা নানা জাতি ফলে স্থানেতিত, সরোবর মেনোহর পবনে কম্পিত। शृङ्ग मनशानिम उक्त छेर्रात्र,." হইতেছে প্রবাহিত কিবা মধুষরে! কুসুম-সুরভি কৃাড়ি মুহু সমীরণ বহিতেছে মৃত্রু হরিয়া জীবন। নকত্র নিকর শোভে স্থাংশু সহিত, 'সুবিশ্ব কোমুদী মন করিছে মোহিত।" শ্যাত্ৰ ৰগ্ছন হট্না মম যেন. কখন নয়ন রূপ হেরেনি এ হেন। শরীর নিতাস্ত থকা তাহার, উপরে, এত শোভাময় ত্ৰা শোভিবে কি করে। বধা যেন স্থীবর মসুণ মুকুরে, जनाशारम यति थारक अञ्चलि वयुद्ध কুত্র, জায়তনযুক্ত, কিছা লগ খতে 🔭 रिन यथा शदत क्षरक मार्कटक 🛊

333

म तमनी त्रंभ एक दर्भ अमृति डेड्यून ত্রিসংসার প্রক্রিতি পড়িয়া সে ছল। -পার দেখ হে প্রঠিক ও চিন্তা অপন, नहित्न भन्नी मात्य अ मृश्व मर्गन। যা হোক পঠিক জন হেন এক নারী जामि डेश्रक्षक रामा मधूर्य अभाति। मोत्रा श्रीं उ राला मम भैगा छन, পুলকে পুর্নিত প্রাণ দেহ স্থনীতল। অনিমের চক্ষে তার দেখি রূপছটা असत खरान भात आनत्मत रहे।। जागि नावी धीति भीति जामादि महावि কহিতে লাগিল কথা মূহ মূহ হাসি;— "উঠ উঠ উঠ বাছ। হঃখ পরিহর। "নীচ বাক্যে **ভাতিপাত কভু নাহি ক**র। " कि ना कहि थात्क नीत्र श्रुख्य मानत्न, " (गर्म शास्त्र अभी-मानि नीत्र वहे जरव। '' কুকুর স্থাংশু ছেরি ডাকে উল্লেখনে, " म ज्ञा कि स्थानिधि मत्नाइःथ करत ? "কোথায় কুৰুৱ আর কোথা নিশাকর, " কোথা তুমি কোখা নীচ বিস্তর অন্তর। " তোমা প্রতি দেব ঈহা করে যেই জন, "এক রূপ জেনো তব প্রশংসা কীর্ত্তন। "নীচৰাক্য আকর্ণন করি ৰাছাধন; "না চিন্তিয় করিবেক ত্রপথ বর্জন 🔭 " যে পথ ধরিয়া আছ্ যাও সেই পথে, · " किছू পরে আর্ফোহিৰে তুমি যশোর্ধ।

"তৰ্ম ভাসিবে তুমি আনন্দ-লাপকে, 🔭 সে স্থৰ তুকনা কাছে কি ঝুৰ ভূ'পৰ্টের"? " কহিতেছ কৰ্ম যাবে; এ ক্লাভাপৰে, " यट्यां ठिउ भनः क्छे इटना में मू मटन । " চাকুরি কুকুরি বাঞ্চা করে যেই জম, " তোজোহীন দেই নর এই দে তুর্ন 📙 "অৰ্থ উপাৰ্জন পথ আছে কত শত, " তাহা তাজি চাকুরিতে তব মন রত ? " কহিতেছ 'কাবাদেৰি তব আরাধনা, " 'कथन भानतम भग जात कतिव नः। ' "मब माग काराटमरी खंदा रोहाधन, \* না করিবে বল মোরে কেন আরাধন? \* পাইতেছ কট বলি গ এ কট তোমার "রবে না কখন শুন বচন জামার। "আমার অর্কনা যেই করে আরম্ভন, " কিছুদিন ভার ক্ট ছয় বাছাধন। "তাহার কারণ যত ক্র্রারিত নর "পুঞ্জিতে দের নাঁ হয়ে ঈর্ণায় কাতর। " যার প্রতি আছে বাছা আমার নয়ন \* ভাষার উৎসাহভঙ্গ করে কোন জন ? " अक्रिक इट्स क्र मेंग क्यांत्राधनां, " इहेर निम्हन जुनै जकन कामना। \*তৰ কটা হৰে দূর আসন্দ বছল " লডিবে তব জীবন নাইি যার তুল। **\* উঠ উঠ উঠ বাছা ধরছ লেখনী,**" এত ৰাদ অগ্ৰসর

मम गतल टीमा नि भूलामग्र होत. वति, " এই शत व १ छव भूतकात ।" मित्रहरू नीजून श्लेमा चीवन जामात। मिह भूक्शमीत श्रीत ग्री हमएकाता यूइएर्डक मामह नाजी करना अञ्चल्तान, वश्ता निक्षि यम समाती हान। ্ভালিল আমার মুম ধরিত 🖓 লিখিতে আরম্ভ কাব্য করিত্র অম্থি অংগত শরংকাল গান মণ্ডল . আবরিল প্রীতিকর নীলিম। উজ্জ্বল। निर्माल नाष्डामण्यल नीलिमा वहल, পূর্ণ চকুমার যাহা চিক্ণ আসন। ভারি'পর, শশধর রজনী সময়, নক্তে নিকর চর সহিত উদয়। তাহার সুষ্মা কিবা নয়নরঞ্জন, তাহার মাধুরী আঁকা স্থু আকিঞ্চন। শরতের নিশাকাল পূর্নিমা সংযোগে, मट्येयथ नानिवादत अत् विखादतारग । শরতের স্থাস্থা শশী নিরীক্ষণে ं छेथनिया नाहि एम काराय जीवता? ं क्र्यूमिनी निख्न्नात्थ कति नितीक्तन, সরোবরে বিকসিত হসিত বদন। निश्र नम्भरे हान जान क्यान्सन, একেবারে সমুদ্ধিত সরোবরতল। जरे तथ नाती भार्ष अितियक्तन, **চুখিছে নিজ রমণী বদনমূওলে**।



ं त्य याचाटत कान्याटम् रूटत किया करत ? नक काण बावमात्म रख नात्री शहत। मानजी कोमूनी दर्भ बैदबनादका श्राम, मधी (भारत मधीन स्पेनीस जानि। শুত্ৰ বৰ্ণ কৰা কুল কুলা চতুৰ্ভিতে, आहि कि। दिन ज्ञता आँथि आनिमारि , मंतर उंजिंगरम यन शृक्षीमजी हर हो छेटिच शति सरमोन्स्या जि अस्म अस्य भूर्व क्रथ किकिनिया, यां होत माधुती (हति উट्ठ उथनिया হদয়-সরসী-নীর আৰন্দ অরূপ বরষার বারি পাতে; কবি ভাব কুশ সদ্ভাবে সভত করে টলমল টল। थांश्राक्त कवि कावा छेकीशनाञ्चल। শরতের জোতশ্বিনী নীরে থর থর, যাহার দৌন্দর্যারাশি ক্রোয় অন্তর। জाङ्गवी-জीवन (वर्श इत्र ध्रवाहिछ, মোহন সহর ছাড়ি চলিলা সুখীত। তরণী ছাড়িয়া দিল নাবিক জুয়ারে, ছুটিল তরণী বায় কে ধরে তাহারে! শরতের প্রাতঃকাল অতি মনোহর, তাহাতে মোহন পুনঃ তরণী উপর। উঠিছে শরৎ-রবি मদীতীর ছতে, ষাহার দৌব্দগ্রুল। আছে কি জগতে? হইতে পশ্চিম তট রুবি নিরীক্ণণে ক্ডার ন্রন মন চাক হলোভনে।

উদিত রবির মুর্ত্তি পার্ড গঙ্গানীরে, अधिखंख छेटठ यन नमीमीटर भीटत । পুরু, তীর, হতে পুনঃ নির্ধি পশ্চিম, मानव-कनरत, इंग्र जानन जभीम [ े সুরমা হর্ম উপরি পরকলা শোভা, নর-মন মুগ্ধ করে প্রভা মনোলোভা। কাচখণ্ডে রবিরশ্মি প্রতিবিশ্ব পড়ি, কিবা শোভাময় মূর্ত্তি আহা মরি মরি! প্রজ্ঞানিত বহিশৈখা গৃহ অভ্যন্তরে, জ্বলিতেছে বোধ হয় দর্শক অন্তরে। নিশা শেষে শরতের রুষ্টি নিপতনে, স্মিক্ত রহিছে করি চাক তক্গণে। তাহারি উপরি মরি রবি-রশিষ্ট। উত্তত করেছে আছা কিবা রূপছটা। শরৎ আনন্দে মাতি বেন তক্যাণে, আবরিত করিয়াছে কাঞ্চনভূষণে। ्रकिरकाँछ। इनिराउट उक शावमग्र, তাহারি উপরি পড়ি রবিরশাি রয়। লক্ষ লক্ষ গজমুক্তা শারদ তপন, সজ্জীভূত করি যেন শাখীর আনন। যাহার হ্রমা ুহেরি ভরু হুধীমন, যাহার হুষমা করে আঁখি আকর্ষণ। श्राक जन्मी हिन है विश्वार পড়িছে তরীর জার আর্বণ মেছিয়া। সুধীর স্থবিজ জন করে প্রাতঃ মান, गर्पा गर्पा जारह जात तमनी-वज्ञान।

मत्था भर्था मन्द्रीके बिक्क मर्भन. निविधिष्ट वमगीय जानन ल्यां छन। जनहंत्र शकी नाम। (मञ्ज महात्र), যাহার সৌন্দর্যা করে নয়ন হরণ। মুছ মুছ সমীরণ হয় প্রবাহিত, যাহার পরশে হয় শরীর মোহিত। জाङ्गवी - जीवन (शटा शृष्ट्र मधीतन, ৈছদর উৎলি উঠে উর্মির সূজন। च्चकुछ शिक्षानकून खांदक मगीउटि, व्यवनकूरता मिर्च स्थानृष्टि वरहे। এইরপ নানা শোভা মানস মোহন, মোহন নির্ধি মুদ্ধ, প্রায় বিচেতন। অসার সংসারে সার প্রকৃতিশোভন, यरुष्ट्रा यक्षण्ठान (यमन मुखन। যথন প্রকৃতিসতী ছেরি নদীতটে, মানস - মুকুরে ভার আকৃতি প্রকটে। थारश्चेत्र किटलांग जारक गानम-मन्दित्र, नमी-देशि निवानता यथा समीओदर। পরাণ নাচিয়া উঠে সে শোভা দর্শনে, জ্গতের যত জ্বাল; ভূনি রে সেক্ণে। श्रांत ता, कविश्वमत्र, . किवा मुना खब राजा ता, धक्छि मजी मर्मन, छे०मन यनि बाष्ट्रमादत्र मिछ छट्दत्र याजना १ कि मना एटा दि उर उर उ रन न।। यथा एके भिक्तकरह आँगाउ आव, কোষণ: কাষ্ঠ বিড়ান একে ছলিছান।

কবির সে দখা ঠিক শুভি ত্বফ্ট করে, মতিজ্ঞ পাপিছর। কথন কি করে। কিন্তা যথা শান্ত মুগে বন্য নরগণ, मीकात्रकद्रग তत्त्र शन्हा९ धावन। ভয়ে ভীত জন্তান্বিত কম্পিত শরীর, নিবিড় অরণ্যে ধার ছেরিণ অক্র। र्ठिक मिहेक्रभ कवि द्वये नवस्ता, নদীর ৰিজন তীরে শক্তিত হৃদীয় পলে গিয়া ছেরিবারে প্রকৃতি রমণী, मर्क्स इः ४ मृत्रीकृत्र, मर्गत्न रय धनी। ट्रिकाटन रमहे इट्टन यपि यात्र नद, নর দেখি ছেরে ছরি কবির' অন্তর। মোইনের তরী আসি হলে। উপস্থিত, শ্রপুর বাঁধা ঘাটে; মোহন হর্ষিত। শৃত্তপুর আম স্থা হয় কি মারণ? জীবনের জন্মভূমি হে পাঠক জন। শুরুপুর আম খানি অতি মনোহর, ব্ৰাহ্মণ কায়ন্থ বাস আছে স্থৰিন্তীয়। অট্রালিকা মনোহর আছে শত শত, উদ্যান প্রমোদ স্থান আছে কব কত। একক জীৰন বাবু আমের গৌরব, न। इरेटन र्कम यात्र जैंजून विख्य ? একক জীবন হতে প্রাম প্রমীমস্ত। প্ৰভূত প্ৰভাৰ মান ঐশ্বা অনস্ত। অস্ত আর একবার স্থার মোহন अरमहिना अरे औरम क्रू रनी मन।



ष्यपूर्व छेमान अर्क षाट्य की बटन इ, দেখিবারে যাহা বাঞ্চা পুনঃ মোহনের। পূৰ্বে যবে এই গ্ৰামে আইলা মোহন, निट्यामान मिथारेमा जारादा जीवन। মোহন জীবনসহ তাই পরিচয়; मिश्रिवादत त्म छेमान श्रेकूझ - क्रमग्र চলিলা भारन धीत नामि जती शक, মোহন প্রকুল কত কহিব কেমতে। বাঁধা ঘাট হতে পথ অতি মনোহর, इरे शाद्ध मियमांक कां छे कि स्मात! নানা লতা ফুলভরে ঝোলে তকবরে, यादात्र मिन्दंश त्रामि भाष्ट्र मत्नाद्दत्र। তরপরে নানা পক্ষী স্থবে করে গান, তক্ত<del>ল অর্গছল মনে হ</del>য় জান। मट्या मट्या मभीत्र वटक भाषी'शहत, স্মধুর স্বর সমুস্তিত করে। মোহন প্রবর্ণ করি শব্দ সুললিত, শরীর শীতল তার জীবন মোহিত। जानि डेर्नाइड धीत कीवन - डवरन, मत्नादत पढ़ोनिका भूग स्ताउत्। बिउन ऋतमा इम जक धव्निङ, ন্তম্ভশিরে কাক্করি জড়ি সুশোভিত। मधुर्थ अतरमानग्न अम्बिङ क्रन কত পুষ্প প্রকৃলিত সাকীর্ণ মুকুলে। দেউড়িতে দীর্থকায় সিপাই পাহারা; হুদয় শক্তি হয় নির্থি চেছারা!

माइत्नत आगमन कानाइना बाती, মোহনে বসিতে স্থান দিল। কর্মচারী। শেহনের আগমন-কারণ জিজাস। করে কর্মচারীগণ অতিমিষ্ট - ভাষা। জীবন ভবনে নাই শুনিলা মোহন, পলীপ্রাম দরশনে অনাত্র গমন। -জীবন কেমন বাস্ত প্রকৃতি দর্শনে, অবিদিত হে পাঠক আছে কোন জনে! জীবন ভবনে নাই শুনিয়া মোহন. বিষাদে মান্স তার ছইল মগন। জীবন কি সর্বনাশ করিছে তোমার, জাননা কিছু মোহন সংবাদ তাহায়: कीरत्नत अधान य हिला कर्महाती মোহনের সহ জানা আছিল তাহারি। মোহনেরে করিল সে যথেষ্ট আদর। ভোজনের আয়োজন করে অতঃপর। চর্ব্ব, চুষ্য, লেছ, পেয় ভৌজন স্থন্দর, ভোজনাত্তে ভারাক্রান্ত মন কলেবর। আ্লস্থ বশৃত ধীর করিল শয়ন, भारत्व राला भारत निका स्नाकर्वन । মোহনের নিজাভদ হলে। অপরাত্তে थमीश वामनाणिशा (मिश्व डेम्हारन। নিজ মনোগত ভাব কহে পুরজনে, পড়িল বিষম• গোলে কর্মচারীগণে। জীবন অবর্ত্তমানে উদ্যান ফটক উন্ঘাটিতে ছিল মানা শুনহ পাঠক।

ু ইহার কারণ হুধি অন্ধর<sup>°</sup> সহিত त्मर मं जेमान पनी हिना मरराखिल। कीवन स्थार्टन दिखु कति गर्भानत, एमधारेब्राहिन। भूटर्स डेम्गान सम्बत्त। সে কারণ পুরজন করিতে বারণ, जनक रहेना धरा द शांठकजन। कतिला आरमन जारे छेमान मानीरत, ফটক খুলিয়া দিতে মোহন স্থারে। হে পাঠক হুधीयत উদ্যান বর্ণনে, আমার নিতান্ত বাঞ্চ বর্লিব কেমনে। अत्मा त्गा कृष्णनारमवि वरमा **अकवा**त्र मीत्नद्र लथनी शद्र व वाङ्ग वामाइ। তুমি দৈবি নাহি হও যে কবি সহায়, **কেপোর তাহার কাবা সমাদর পার** ! श्रुमीर्घ डेम्यान मिहे विशे विशे छून, স্থ উচ্চ প্রাচীরে যেরা বরণ ধবল। की बानत अहो निका शूर्व जाता हिउ, ज्ञातमस्म मह यादा मः याक्ति। थामाम-डेमान वह भाज मताहत. यां होत मोन्पर्या (हति, शकूल व्यस्त्र । क्रोरकत इरे ভिट्ठ इंगे मीर्च खन्न, শুন্ত শিরে হুটী দিংহ বিস্তারিয়া লয়। বিয়োনিয়ালতা খেরি আছে শুরু অল, সমীরণ সহ যাহা করিতৈছে রজ। छेमान धारम कति धमंख मतनी, बाडि त्यनी भन्नगीत इशार्ष कमनि।

দিখণ্ডিত স্থাশস্ত পথ কিছু পরে, इंगे পथ अर्फाटक मम अर्फ धरतः তারি মধ্যে গোলাকতি চানকা স্থলত নব দুর্মাদলে পূর্ণ অতি প্রীতিকর। তাহারি উপরি নানা তক্তুলে নত, শোলাপ কত প্রকার তাহা কব কত। बनीर्व मार्गाकृष्ठि हानकाः मार्थः, वार्शन मोमर्का कृकि धारातम विदारक। কুকির সোন্দর্যা রাশি বর্নিবে কে আংরে ই जाहात माधुर्ग जुना जाटह कि नश्मादत ? य जन कथन कृकि कात्रह मर्गन, হুধু সেই জান জানে সেধন কেমন। শরতের শশী কতু নছে কাছে তার। সরস্থিত সরোক্হ আস্পদ লজ্জার। তাহার মাধুরী স্থাি এমনি ফুল্মর, मन्मर्गरम म्म्याम औषि करनवत। (यमन विश्वभाषत विदय जाकर्राण. জীবনের যত জালা সে তক রতনে তেমনি শুবিরা লয় হে পাঠক জ্বন, শরীর পবিত হয় দর্শনে যে ধন। ञ्मीर्व (म गोमाकृष्ठि हानका छेश्रत, কত শোভাময় তক আছে শোভাকরে। একটা একটা তফ বর্ণ কভ রপ, যেটি হেরি সেটি যেন-পুসাতক-ভূপ। वर्षाञ्चमम इंग भन्नभी सम्मद्र, এক হইয়াছে মাসি কিছু দৃর পর।

পুনকার সুপ্রসন্ত পথ আরম্ভন, यात्र शार्त्य कांमिनी कूछम इर्एणां छन। কিছু পরে প্রস্তর-নির্মিত বাঁখা ঘাট. यादा रहति धूनि म्या मानमकवाछ। गत्नाच्य मत्यायत नीतः विममन ত্র একটা আছে তায় ফুলশতদল। কুমুদ কোরক কত শোভে সরোবরে, নীর ছাড়ি শির তুলি যেন বন্ধবরে কুমুদিনী অথাসর করিতে আহ্বান, কি ৰুচি তাহারি মত্রি, ছুড়ায় পরাণ। সরসীর চতুর্ভিতে ঝাউ সারি সারি, সর-চতুর্জিতে পথ অতি মনোহারী। ৰাউত্তরপরে নানা লতা কলে নত, গুঞ্রিছে মধুকর তাহে অবিরতঃ বাউত্ত লতিকার গলাগনি করি, नदमी मुकूदत मुर्च स्माट्ट एमए पति। স্বচ্ছ সরে মীনকুল আমোদে আকুল, मल्डित्इ मरल मरल मोमर्था प्रकृत। भीन-मखद्रर्श नीत जेयम कांभिड, তৰু প্ৰতিকৃতি নীরে তাহে আলোড়িত। বোধ হয় সরঃনীয়ে গছন কানন, এর অঙ্গে উহা পড়ি অপুর্ব্ধ শোভন। সরসীর চতুর্ভিতে সুপ্রশস্ত পথ, এক পার্ষে বাউ অন্যে বর্তুল, মন্মথ। নিবিড় পাদপ-পত্ত শোড়া মনোহর, তৰতল সুণীতল খুনা রবিকর।

विमाल मा उक्डाम विमाधमभन्न, आगोब **आर्वत आंगो** पृत्रीकृष्ठ रहा। फेरेटलें।°. शांकश इंगे - मत इंगे धारत, আপনি বিহাদবদে হৃদয় আগারে नित्रीका कि यात्र विभर्ष माछन, অঙ্গ লুটাইয়া যেন করিছে রোদন। কোপায় লতামওপ লোভিছে উভানে, যার তল তৃপ্ত করে সম্ভপ্ত পরাংগে। মঞ্জ নিকুঞ্বম কোথা সুশেভিন, यासात माधुकी केंद्र , जांबि जाकर्षन। পাদপ মণ্ডপ কোথা কৌশলে নিৰ্বিত. যার তলে অর্কিট পুষ্প হুশোভিত। भामभ मण्भ धारक जारह जदकिंगे, হেরি দুবীকৃত হয় নর-চিন্তা-কটি। কত রূপ অরকিট কে করে গণন, তকর উপরে মরি তকর সূজন। কত মত ক্যাক্টাস্ শোভে স্তম্পাসে याहात गठेन (हिंदी कि तार्थ हामिता। কোথায় ভারবেনা শোভে চানকাউপরে, কে থার রঞ্জিত ভব্দ শোভে থরে থরে। (काथा ऋधु ज्ञिथ ७ भून मृद्यीमतन, যাহার শাবন শোভা অতুন ভূতলে। কোথা কোয়ালিন কুল দিক আমোদিয়া माधवी मानजी काक्षा उक आक्रामिश। काश मधुगद्धा अर्ए अरमान डेक्कान, কোথা শিরোপজি ফুল আরুলে পরাণ।

কোথা ব্ৰুমকালতা শোভে মঞুল মুরতি, পাধীনতা কুন কোৰা স্ট্ৰিণ অভি। নত। নজাবতী কোথা পরশে নজিত नाती लक्कावजी यथा नतन्त्रार्म छीछ। পলাশ বছন কোথা কোখা জেসামিন याकात क्रशतिमाल मन क्रांच मीन। চম্পক কুটজ কোথা কোথা সেকালিকা, প্রচাপদা জ্বা কোখা কোখায় মলিকা। কোখা খা নৰমলিকা কোথা ভচম্পক, কোথা বা মুথিকা জাতি কোথা। কুৰুবক। কোথা শোভে গন্ধরাজ, সেঁওতি হৃদ্র, কোথায় কুটজ শোভে জাঁথি-প্রীতিকর। কোথা ভূৰ্জপত্ৰ শোভে কোথা হরী চকী. স্থচাৰ চন্দন কোথা কোথা আমলকী। धनारेक माधनाना (काथा नाकिकी. কত্ই ব্ৰুতী তথি উদ্যান-শোভিনী। নত তৰু আছে তথি কে করে গণনা ? কে পারে উদ্যান শোভা করিতে বর্ণনা ? সেই সে উদ্যান তার সহজ্ঞ শর্ণী, পারিপাটা ঝিবা তার কছিব কেমনি। मर्था भर्था जारह दान विमर् स्मान, বিনিশ্বিত শ্বেড দিলে অতি প্রীতিকর। উৎगव উৎসেহ इंही উদ্যান শোভন. त्री**णारु एक प्रकारकी (यन डेक्की**र्ग। কোথায় গোলকধারী লতিকা নির্দ্বিত, প্রবেশিদে তার মধ্যে শরণী-বিশ্বত।

কোথায় প্রভুল কুলে 'গুঞ্রিছে অলি, (य श्रि कश्र-बानां जुनां मक्नि। কোখা সমীরণ চুদ্বি প্রকুল কুপুম विखातिया शतिमन धारमारमत धूम। কোথা তৰুসহ ক্ৰীড়া করে গন্ধবহ কিবা সুদ্দিত তান তুদে অছরহ। काथा मधिमुची करत मधुन्नद्व गान, কি তান এমন আছে তাহার সমান। কপোত কপোতী কোথা ৰসি শাৰী'পরে, क्ष्य मर्भा क्ष्य भित्र। तर्र (श्रम खरत। বায়স বায়সী কোপা জ্বোড বাঁধি বসি, বায়স বাড়ায়ে জীবা সোহাগে বায়সী। বায়সী বাড়ারে চঞ্চু অমনি আদরে, খুঁটিছে বায়সপুত্র প্রফুল্ল অন্তরে। **७**८त त विष्ठककून कानी नत्रगरण, প্রেমশিকা দে রে তোরা শিখুক যতনে। প্রেম কি অমূল্য ধন জানিস রে তোরা, প্রেমের কি ধার ধারি মানব যে মোরা। প্রবেশিরা এ উন্থান স্থীর মোহন, প্রমোদে উদ্যানশোডা করে দরশন। কভু কোন তৰুপাৰ্ছে বসি হৰ্ষমন, তকর অপূর্ম্ব শোভা করে সন্দর্শন। কভু ৰসি পুষ্প ধরি জ্রাণ লয় তার উথলিয়া উঠে জাণে স্থপ পারাবার। কভুকোন পুষ্পশোডা করি নিরীক্ষণ, আনন্দে উথলি উঠে তাছার জীবন।

কভু ৰা লতামগ্ৰণে পশি কিছুক্প, কপোলে বিভন্ত কর সচিত্তিত যন্। ভূচশাক মাৰ্ক্তি এক, পদে ভ্ৰাম্ভিক্তমে, যতে তুলি সংখাধন করে সসত্তমে। . " ওরে রে প্রস্থন বল আছি কি কুক্ষণে, " সাক্ষাৎ হইন তোর এ অভাগা সনে। '' এখনি বিবর্ণ হবে এ তোর বরণ, " कि माधा आमात्र श्रनः अमानि की वन। " जब त्थामां कांकी मधुमकि जामि नरे, " মত্রে ধরি সমাদরে তোষে সে কতই। " এ তোর উপর দিয়া ৰঞ্চাৰাত ৰছে, " সেই কষ্ট'চিত্তানন্দে তোর অঙ্গ সহে। " চাকচকাশীল ফুলে নরে] रंगभाष्ट्र, "কতই যতন তার উদ্যানাভাতরে। " যদিও সে শোজা নাই তবু শোভামর, " এক পার্শ্বে ও উষ্ঠানে তোহার উদয়। "বিস্তারিয়া তব দল হবির কিরণে, " এই যে আছিলি তুই কত স্থুপোডনে। ' "কিন্তু রে এখন তুই পড়ি পদে যোৱ, " ঐ ভ্রষ্ট হইন এবে সেই শোভা তোর। ''সরনা বন্ধবিধবা দশা ঠিক হেন, '' भन्नीत अकून कून ठिक मरे यन। ' পঞ্জিয়া প্রণয়ফানে কি ছগতি তার, " कुसकनशिनी इत्र जांकुशन नकात। " कबहित्रा यांगी-कून कबहि थिछारत, " দীনবন্ধ-মৃত্যু শেষে বাঁচার মাছারে।

" गत्रल कविश्व मणा, अर्दे शूष्ण श्रीय, ' জীবন সাগরে পড়ি ছারুছুরু খায়। " भश्चिंतृ तुषि-छाजूरी चल्क निष्टिनंत्र, " দেখি দেছতরী দক্ষ চালাইতে নয়। " জীবন - সাগার - উর্বি উঠি ভয়ঙ্কর, '' गद्म करत मिह्जती किছू मिम পর। " कर्के अभी फ़िड छुनी मुन्ना (इन र्हिक, 'क्छके यखना (मग्न भीनजा वानीक। '' মানব চাতুরী গর্বা, ধেদাইয়া তারে, " नरत्र योत्र चहचत मृष्ट संश्त शहत। "সহার ব্রয়া হীৰ সকল ওকার, " (नेशरतद महा श्रृष्टु खतमा गेन्।त) 'ধংসভূদে পড়ি প্রাণ তার হয় সন্ত, ু" ভবে জন্ম ভূঞ্বিবরে যন্ত্রণা অনন্ত। ' 'ভোমারো এ দশা ঠিক যার পুষ্প করে : " দুঃখ ভাবি এ পুস্পের বিলাপ যে করে। ं भोग मार्क मा मार्गात शरम जानानाना. '' আদিতেছে **গর্ক** করি নাশিতে জীবনে।" ভ্রমণ করি উদ্যান এরপে মোছন. कत्नवश्युक विभए भनन। जानि धीति दांधा चाटि वनिन त्याइन, চিতাননে ছেলে ধীর সরসী শোভন। मिवारलाक मृत्र कति शाश्रील इकरत, ধ্দর বরণ বাুদ পরি হবাস্তরে, \_ नामिल गगन रु गड़ शही निक, শোভিল ললাটে ভার তার। আকন্মিক।

প্রাচী পরি পাংশু রাস পশ্চিম লোহিত, নিৰ্যাল নীলিমা শোডে ভার মধ্যভিত। এক একটা করি ফুটি তারকাকুস্বম, স্বৰ্গ সরসীতে কিব। সৌন্দর্ব্যের ধূম। गांधनित शिष्ट शिष्ट बतना निनीबिनी, ताका कार्या कतिबादा अरे तम त्मिमी। শারদ হ্রধাংশু উঠে পূর্ণী উল্লাসিতে, কি ক্ৰৰা ভূষীর মন হেন আনন্দিতে? স্থামি কৌৰুদী মন মোহিতে মছীগ আবরিল অঙ্গধানি প্রকৃতি পতীর। সুচাৰ চল্লিকা লোন উ চাৰু তৰু শিরে, সে শোকা হৃত্রিয় করে মানৰ জাঁথিরে। कूभूम-वाद्मात (इति कूपूमिनी धनी, কোমল স্থবকঃশ্বল বিস্তারে অমনি। সরোবর স্থােশিভিত কুমুদিনী ফুটে, कूमूमिनी क्लीमूनीटा मिल शांति यूटि। इंट मरी दामि पिथि दामिल मानजी, ছুটিল স্থরভি তার প্রীতিপ্রদ সতি। শেফালিকা কান্তাকান্তি করি বিলোকন. আর কি রহিতে পারে হেরি সে শোভন। নেও হলো প্রফুল্লিত, হাসি মিষ্ট হাসি, সুসক্ষিত হলে। কিবা সৌন্দর্যা প্রকাশি। मलिका हिल्लका (भरत्र माधुरी विकारण, वृश्विका भारत भारत थन शासा (बंडे नेपक् हिल्काः ४०% ४०१ करतः वाइड जाइड शिरत वक्-मधु इरत।

कान कून भाग (भरत विश्व को कूनीत. হাসি ,**ঢলে ৰায়্বলে** কিম্পিত শরীর। कामिनी कुत्रम कूल किया कुत्रमिछ, বিধুর বিমল বিভা বাদে বিশোভিত। धवनिञ इत्यी शति हस्तिकः। धवन, भश्ं भभ् कतिरङ्खः बारक बानमन। य পাৰে किরাও আঁথি সব • खजमह, শরতের শাদা হৃদি খুলি যেন রয়। ह् शिठिक उर मर्सा योत मीना मन, শরতের শাদা হুধু তাহে নিপতন। भागि। मन (यहे जन धरत अ जूनन, ১ শরতের শাদা তাছে সোহাগে কাঞ্চন। আঁধার অন্তর যার সে কি ইছা বুৰে. কপি হিরণায় হার মূল্য কড়ু হুৰে; धनगरम मंखः स्वरं मि कि श्रेकृतित्र সমাদর জানে কভু পাঠক স্থীর! जरकाती. इतांचाती, खण स्थीलन, अकृतित (अमाकाङ्की क्य कि क्थन ! ধনমদে অন্ধ যেই তার হান্ত মনে, প্রকৃতির প্রেমস্থা কভু বরিষণে? উত্তপ্ত বালুকাময় মক্তৃমি'পরে, বরষার বরিষণ কভু কি হৈ করে ? शनतरका मर्क्ट्रिंग नम, যাহার সে স্থল করিতে সৈক্ত প্রকৃতি সক্ষ্ পৃথী'পরে প্রেত যারা প্রকৃতি পারিতি তারা কি কড় হে বুৰো ? বুৰো কি স্থনীতি ?

্রিত যেই প্রেতকার্যা,ধর্মগ্রস্থ তার, প্রেতপক্ষে প্রকৃতি হে কেবল জাখার ( মোহনের শাদা মনে শলতের শাদা পঞ্চাশ ব্যঞ্জন আয় কুথাতের রাদা। প্রকৃতির প্রেমনীরে ছদি-সর তার, উছলিয়া উঠি প্রেম ধরে নাছি আর। **मार्मित्र स**नि-मत्त्र जात (क्षेम-नीत. পাইৰে কেমনে স্থান পাঠক স্থীর। পঞ্চ ইন্দ্রির তার পঞ্চ পথ দিয়; প্রকৃতির থেমনীর সম্বনে বছিয়া, হৃদয় - সরসী তার দিল উচ্ছলিয়া, প্রেম-মীর স্থামাভাবে তার চক্ষু দিয়া বহিতে লাগিল স্থা, তাই বেগবান, মোহন হাধ ছুয়ারে তাই এত টান। সেই সে উছান-শেহতা অতি রমণীয়, ছে পাঠক, ভাব তুমি মনে ভবদীয়। তাহে নামা জাতি কুল সন্ধা-আগমনে বিকসিত সুহসিত স্থাৎশু কিরণে। তাহে সমীরণ চুন্তি স্থান্ধি কুস্রনে, ভরিব্লাছে পুলেপালাম পরিমল-ধূমে। তাহে সমীরণ হার কাউ ভক্-শিরে, মাতাৰ করিয়া তুলে জ্বোডা স্বস্থীরে। সম্পূৰ্ণ স্থাংশু শোডে ভাছে শন্ধতের, গ্রাপু গৰুপোড়া তাতে আছে কের। এখানি হথানি যন ব্রল বরণ, नाजीमात महिलाइ, मिन्दी कम्म ?

यन भारमारमें कान ्जीताशन हुएछे, र्श अधूमिकिशन श्रीम (यम क्ट्रि) योर्ध - मञ्जूमिकिशन ना क्रू हिंदव (कर्ने ? স্থাংশু - সরোজ - মধু পীতে ধার বেন। অলক্ষত সুরঞ্জিত সেই নডভল, बांश मित्रा मदःनीतः शक्ति अविकता। महािक्ती जावि महन क्यूकिनीगरन, वर्-मधुमकि (यन मत्रमी - कीवान। करल (इ शिक्टि अन भा डेमान-उन. হইয়াছে ঠিক যেন সুর স্বৰ্গ ছল। জগতের যত আহে দ্রব্য প্রতিকৰ, হইরাঠে সমাবেশ উদ্যানভাতর। একটা সুন্দর জবা সে স্থল বজিত, বল দেখি কোনু অব্যুপাঠক পণ্ডিত গ त्रभीत मधुमारा वेनन मछल, नाती-जान नाहि यथा मृत्र मिहे इन। एक भार्ठक, ऋषीवत्र, अटबन উन्तारन, -क्रभी (अंग्रमी-मक् किसूथ अमार्ग । রপদী মুৰতী ভাষ্যা সহচরী করি, স্পর্শ-স্থধশালী কিন্তা করে কর ধরি বেড়াইতে এ উদ্যাম কিবা প্রীতিকর, मटशा मटशा महूमाथा वामा-कश्रेचत्र, হু একটা শুন্তি তৃপ্ত অবণ-বিৰয়। म यूप जूनने कां क कि सुप कार्य मर्था मर्था जारक छोत्र कुछ्म हज्ञन, বসাইতে বেণীপার্মে, সে স্থুখ কেমন গ

मर्था भर्था चार्छ हाक करत कत छत, আলিজন ও চুম্বন, কিবা পরিসর গ উদ্যান অপূর্ক্ক শেভা করি নিরীকণ, ज्यात जानजनीत यादन मगन। প্রকৃতির প্রেমন্থা করি সুধে পান, সে অন্তর মাতোয়ার। প্রায় শৃক্ত জান। হেন কালে গৃহদার উদ্যাটিত ধনি, হলো ধীরি ধীরি এক শঙ্কা যেন গণি। পরক্ষণে রমণীর ভূষণ-সুষ্মর, क्षारेन छेगात्मत्र अवन - विवत । অগ্রসর সেই অর মোছন সরিধি, किছू ना अर्टन माइन मिर निधि। এমনি অভ্যান হয়ে বসিয়া মোহন, বাছজানপুত্ত ধীর, কে করে এবণ ? जभूकी तमनी अक शीब्र धीति जानि, দাঁড়ালে। অপুর্বারপ তাহার বিকাশি। ए शांकि ऋथीवत (म त्रमणी - क्रथ) वर्ति उत्तरा मम वर्तिय कि क्रश। আমি অতি মূচুমতি বিদ্যা বুদ্ধি নাই, সুধীরে তুবিব কিসে চিত্ত কুল্প তাই। तीनां शानि बाग सिव छेत अकवात দীনের দেখনীমুখে, শঙ্কা কিবা আর। विश्वविमानत - विमा यमिष्ट्र मा नार्र विति वित गाउँ जाउँ कि जनारे। প্রকৃতি প্রদত বুদ্ধিকণা দেহ দীনে, विश्वविद्यालय - विद्या महत्व ग्रेलिटन।

गिनि मा इंटगील अंटगील, जनामन ग्लिट्स मा बहाकतर्ग नोख मदन्त। ए शर्ठक, <del>क्</del>षिवंद्र, अ द्रमंगे क्रशं এ ভূবন মোছনিয়া এ বিশ্ব লোলুপ। এ নারী সৌন্দর্যা সহ তুলনা কাহার मिर (इ পঠिक खन, সম कई जात? ब नांतीत क्रथ किंक अ नांतीत मंत्र, তুলনা তুলিতে তার কাব্য অসমত। তবে ত পাঠক জন যে ছেরেনি তারে সে রূপের অভুত্তৰ পাবে কি প্রকারে? সেন্দর্যোর এ স্থন্দরী যুবতী ছহিতা, মঞ্জ - মৃত্তি মশ্বথ পুন: এর পিতা। म बामाज्ञ के क्षेत्रा निवकांत्र मत्न १ जित्नाख्या मह जूना अजूखि जूरता। यावजीश त्रमगीश वक्ष कृष्टि नदश. বিশ্বকর্মা তিলোভমা সুক্তে ধাতা ভয়ে। এ নারীও সেই রূপ র্যাবস্থ সার, তিলোভদা দেবী, ইনি দানবী-আকার। जित्नाखमा हात्रामाख देनि वह-नाती, দেশ হে পাঠক স্থান স্বনা তাহারি। স্বন্ধরীর বর্ণ টুকু গোউর উজ্জ্ব, आतमिनिका नाकी यथा करण वनम्म। গোলাল গোলাল ক্ষুত্ৰ কৰ্মনাৰ্ম, ভাবিলে ছদয়ে তাুরে নিজা আকর্ষণ। হন্দরীর বেণীলোভা কচির চরম, ধূম-বন্ধ \* বিনিগত ধূমপুঞ্জ সম।

<sup>\*</sup> Chimney.

যেমনি চিকণ কান নিবিড তেমনি, विनारेश (वेशीश्व लिटन श्रेत धनी। অৰ্ণ ক্লোপ্য কুল বাকে সে চিক্ৰণ চুলে, क्रिनीन् निर्द्रायनि काम दम् कृत्न। স্থার ললাটধানি যেম শক্রয়ত্ব, বিস্তার করিয়া তার চিকণিয়া তত্ন। কি চাৰু জ্যুগ তাম্ন কিবা তার টান, यादां इसमा कार्ड श्रक्रव लाग। সে চাৰু জয়ুগ সহ তুলা দিব কার, প্রতিমার সধী সম অধ্যুক্তকার। আয়ত লোচন ত্রচী দৌন্দর্যা - সাগর, তারা ছুটা মগ্নদিরি তদ অভ্যন্তর। म औथि दिल्लालाशिह शिक्षत्व शार्ठक, বুঙ্কিতরী বান্চাল ছুরায় মন্তক। সে আঁথি কটাক স্থাধি অতি ভয়ম্বর, কুণ্ডলী ভাছিয়া যেন দংশে বিষধর। কুরজিণী আঁথি সহ কুলনা কি তার ? मिर महमजा रेहा कृष्टिमका थाता কুটিলতা ধার ছোক, দেশিবর্ষের খনি হেন ক্ৰমলে ভাৱা ধৱে কে ধৰণী ? হেন ভাষা ভাষা চকু কে দেখেছে আনে? সে জাঁথি ভূপনা নাই এতির সংসারে। টিকা জিকা ভিতা বিচাৰটি ভার, এমন ছুন্দর নাসা কার আছে আর ? নাসা নিমে ক্কাডর ওঠাধর শোড়া, টক্টক করে লাল শেখভা মনোলেগভা।

তামূল ডক্ণ বিনা তামুলের রাগ, जधन पक्षन थाटा नृषी. गूर्का जाग। मधूत जशरत शति किये मिके शांजि कि माधुती जारा मित्र जारह मि धदाणि। পুৰুষের আঁথি'পরে পড়িলে সে ছাসি, চব্ চক্ চক করি খেরে তমোরাশি। त्रीमामिनी सकि यथा विकारण आधात, সে রূপদী ছাদি ছেরি তম ত্রিসংসার। इामि-त्रिश्व शिक्ष कूछि मन्न कूँममाय, धर्भ धर्भ धर्भ करत धवनजायात। কি চাৰু চিবুক খানি কিবা তার ভাতি যাহার অ্বমা হেরে আড়ে রে অর্ডি। करल (इं পाठिक छन म नाजी जानन, ইউরোপী চিত্তকর ছবির মতন। य त्रमगीनिधि - मुच नित्रधि भाष्ठक, শরীর লোমাঞ্ছয় পড়েনা পলক; (य नाजीत भूथ-इवि कति निजीकन, रेष्ट्रा कर स्मथ जारूत हरक मर्कक्ष ; এ নারীর মুখ-শোভা ভজপ মধুর, म प्रथानि नितीकर्ण नर्स इःश नृद। थीनारमण ल्यांकावत्र व्यवित्व काँहि।, ঝকু ঝক ঋকু করে ভারামণ্ডকাটা। কোমল সে ীৰকঃছল ধরি প্রেক্ত त्रिक समय केटिन निर्देशिय थन । সে সৌন্দর্যাল সহ কার দিব তুলা, কদম, দাড়িম, গিরি পদাকলি প্রদা

সহিত ছুলনা দিতে ছাড়ে নোন কবি, পচা कथा विठा बर्ला कान् प्रशी-ति ? আর দেধ ছে পাঠক কদৰ সহিত পরোধরে তুলা দেয়া অতি রিগর্হিত। কদৰ সুকুত্ৰ ভরা কেশর কণ্ডকে, নহে হুকুমার-তত্ন জানহ পাচকে। গিরি সহ পরোধরে তুলা দেয় যেই, কাওজান খুৱ সুধি ভুষি জেনো সেই। যে পারে কোমল বক্ষে চাপাইতে গিরি, দয়া ভার দেহ দিকে নাছি চার কিরি। **পদ্মকলি কুচে তুল। দেয় যেই জন**, কারে বলেঁ কুচ-শোন্তা জানে না সে জন। তবে এ কুচ-গঠন কাছার মতন্ এ কুচ-গঠন স্থাধি নাগর - মোহন। य क्ठ-लाख्त नाजी नद-निद्धामित, বে কুচ-শোভনে নারী সৌন্দর্গোর খনি। (य-कूठ-ल्गाख्टन नाजी-क्रश ख्यनाज, যে কুচ-শোভনে নারী ভুবন ভূদায়। দে কুচ মতন হুধি এ কুচ গঠন, এ কুচ মাধুৰা নর অমূলা রতন। হন্দরী বেড়িনী ঠিক, সম্ভান ব্যানীক 🔧 रति त बार्डां का जारका जारह हिंक। एन-मक् कूराणिति वरकः वर्व हात, र्म हाक क्रिंगित बेंद्रे बूकांमात्र। আবরি এহেন ক্লচ সাঁচার আবার: काल नारें (इ शांठक (म कंशांत्र जात.

মাজা তার ঠিক জেনো ইউরোপী নারী, পরিধিয়ে কোর্তা বাস অতি মনোহারী। নিতম্ব নীচে ভাষার কত মে বিশাল, অতুল গুৰুত্ব ভারে স্থগম্ভীর চাল । নিত্তে মেদিনী। ভুলা দেয় কবিজানে। ্রিক্ত তা কঠিন বলি ছেন লয় মূলে। নিতম মাধুষ্য তার কিবা স্থলনিত, कोमन कूर्यन यथा इस विकनिज। এ হেন নিত্রোপরি ফার্ণ চন্দ্রহার কাজ নাই হে পাঠক, সে কথার আর। श्मिन श्मिन करत हांक वर्ग हत, দরশনে পুৰুষের হৃদি হর হুরী। এ হেন রমণী এক ভূষণে ভূষিত, দাঁড়াল মোহন পাশে বদন হসিত। म नाती-मार्या-त्रांनि करत अनमन. বিজলী বাকিল যেন সে উদ্ধান ভল। হেথার মোহন হেরি উভান শোভন, নিজোছান পড়িমনে ব্যাকুলিত মন। निक नाती-ठाममूथ পড़ि श्निम मत्न, একবারে জানশুর অনারী চিন্তনে। সমীপত্ম বামা'পরে পড়িল লোচন, निटकामान्निक नाती अविन माइन। · হা श्रित्रमि विन भीत भरत थीता उर्देन, " अटमा थिएतं इति माट्य स्किन्धिक्वात । " वह मिन शांत्र चांकि मिथा उव मान, " কহ কথা চিল্ৰাননি কুড়াই অবৰ্টে ।"

া মোহৰের জান্তি হুনি, সেই নিত্রিনী, कटर कथा राजि साम मधुक्र आविनी। " ७ इ हिज्दांत उप कार्या जामि नहे, " হবো তব প্রাণজারা ছেন পুণ্য কই।" মোহন শুনি এ কথা অবাক হইল, निक गाती निकामान यथन जाकिन। मञ्जाश अशीत शीत वर्त " अकि आत, "করস্পর্শ করিলাম রপ্সী কাছার। " (क जार्शिव ७ डेम्प्रास तकनी ममत्र, " জानिवादि क्षृष्टम बाकित्म कमग्र। " क्या कत, ए त्रशीन, यम खांखि योत " शद-नादी-जन न्मार्ग कार्श जन (मात्र।" श्वितां। युक्ति करह शामि-विचे शामि-रामि नश ति ए स्थि नश-धरा काँमि। " কহিতেছ, জাঁখি-চোর, কাঁপে তব অঙ্গ, " কাঁপে অন্ধ তার যারে আক্রমে অনল। "তৰ অন্ধ-কম্পাশুনি আশালতা মম " मकीव इरेशा (भाषा भरत अञ्गम। " मिला छे छोट्टि (महे बाहिन निक्कीर, "তব অল-কলা ওনি হইল সঞ্জীব। '' অথবা হে মনোচোর তব্ত কম্পন, " তব্দ প্রতিকৃতি; সরে কম্পিত; যেমন। '' नवःनीत जात्नाज्ञ उक्काउक्कि " काहन बहरे स्मरन कर उक्त बाक्रि । '' তৰ তারা লোক্ত পড়ি এ বৌৰন সরে, ' योगर्व मत्रमी मय कारण अवश्रद ।

" आमार्त कंश्रेन युवा नीत्रत कंश्रेन, " তোমার ভড়াগে ওঁক ছায়ার মতন। " क्रिकांनिष्ट हिन्दिहात मम, পরিচর, " এ উন্থান ও ভবন এ দাসীরি /হয়। " জीतरनत जांत्रा जामि ; इत्र मम जान, " छनिश्रा शांकिटव मम जामी-जिस्सान।" শুনিয়া মোহন কয় "শুন গোঁ সুন্দরি, " তব কথা আকর্ণনে উঠি গে। শিহরি। " হইরা বড়র ভার্যা এ বাঞ্চা কেমন, " পরিহরি হেন ইচ্ছা নাই গো ভবন। " যে জন অপর নারী অংক দের কর " তার মত পাপিষ্ঠ কে অবনী ভিতর ? · '' যে জন নারীর করে সতীত্ত " হরণ, " তার মত হুরাচার কে আছে ভুবন 🕈 "হেন বাঞ্ছা করি দূর যাহ নিজ ঘরে, ' পুরজন পেলে টের পড়িবে ফাঁপিরে। " হেন মনোমত স্বামী থাকিতে তোমার, " অপরের সঙ্গ বাঞ্চ এ কেমন আর। " कामिनीक्टंबद कून जम्बा दलन, " कूणांश कनहिनी मां शिनी (यमन।" শুনিয়া কামিনী কর "এ আর কেমন, "তৰ মৰ পুৰুষ তো দ্বিধিনি কখন। " এ তব মেবিনকাল আঁক্তি এমন, " তব মুখে হেৰ কথা না পায় পোভন। " এ তব বয়সকাল ক্রুড় রসে ভরা, " উপরে চিকণ, বুঝি ভিতরে কোঁপরা।

4.

" সভীত কছ কাহাঁৱে ? সে জব্য কেমন ? " হবো সতী ছেন পতি কই সে ভূবন ? " পতি মম পরনারী নিয়া সদা রত, " আমোদে কাটেন কাল, আমি দ'বো কত ? "তিন মাস হলো গত দেখা নাই তার, " शिल्लाम (मधा हत्म हत्त्र नाती कात्र। " সতীনারী ভূঞিবারে ইচ্ছা থাকে যার, " আগে প্রয়োজন করে শুদ্ধ হ'য়। তার। " যা ইচ্ছা হইৰে মনে করিবেন তিনি, " किछ वाँ हि कि कित्रश अवना कामिनी ?" শুনিয়া মোহন কয় "শুন সুহাসিনি, " হতে পারি সত্য তব ছংখের কাহিনী। "জানিতাম তব পতি অতি বিজ্ঞাজন, "তব দুংখ কথা শুনি দুংখিত জীবন। "পতি মন্দ লোক যদি হয় তব জ্ঞান, "তা বলি কি ভূমি হবে তাঁহার সমান। " যুবতীর পাতিব্রত্য অন্তর - ভূষণ, " সমুজ্জল করে সেই সৌন্দর্য্য-রতন। "শুন লো সুন্দরি তাই দিই উপদেশ, " বাহে সুধ ইচ্ছ তুমি নাহি সুধ *লে*"।" রমণী-স্থলভ লুজ্ঞা ঢাকে মুখু তার इच्छत्रि धूनि देश मि मूर्य अशाहा करह म इमही थूनः 'माहरनर धिंड, "ভৰ উপদেশ কথা আক্ষয় ছে অভি। '' মম বাঞ্জা অগ্নিলিখো জেনো, চিভচোর, " উপদেশ ७ कड़। कान इंग्र स्मात्र।

" जरमा जिल्ला खानमृत्य, भर्यत काहिनी " রাথি দেও, পিপার্সায় মরে চাত্তকিনী। " তোমার মানসে यनि अमनि আছिन, "কেন ও কোমল কর কারা পর্লোল। " दोष दोष धेर्मकथा (लंल সম বাজে, ' স্বৰ্গপথে যেতে কেবা নাছি বল সাজে ? " স্বৰ্গপথে যেতে পাপ কোন থাত্বে আছে? "এ হেন লেখক-মুখ এলে মম কাছে " পোড়াইয়া দিই স্থালি আগুনের লুটি, " এসো এসো প্রাণসংখ ছলনার কুটি।" বেগতিক দেখি ধীর কছে করি ছল, '' (कमरन वामना भूति छ्ला । " প্রতিজ্ঞা আছে যে মম একটা বৎসর, " कतिव ना जीमश्मर्ग द्रावा मिनाखत। " করজোড় করি ধনি হাড় বাঞ্চা হেন, " কুকথা ও মুখে আর নাছি আদে যেন।" শুনিরা অন্দরী কছে বিষাদিত-মন "কৰে তৰ প্ৰতিজাৱ শেষ সংঘটন **গ** " মোর মাথা খাও মোরে দিব্য করি বল, " প্রতিজ্ঞা হইলে শেষ আদিবে এছন। " নতুৰ তোমায় আমি ছাড়ি নাহি দিব, " বল বনঃ তবু দেখা ক/ব ছে পাইব।" ছাড় পার দেখি ধীর কহে করি ছল, " প্রতিজ্ঞার পরে পুনঃ আসিব এক্স।" স্থানী কহিল পুনঃ " ওছে চিত্তচোর, '' কোন্ মালে পুন দেখা ছবে সাথে মোর?

" (मह यानाहात मिन निर्म तिछ कति. " बकार्ख गांनिव वाँमी जलमाना धति।" कार्विनीत क्या स्ति कहिल याहन " কাল্পনে আমার হবে প্রতিজ্ঞা পুরণ।" এ কথা প্রবণ করি ফুর্নরী তথন, विबन्न कहिन्न। कट्ट खुन्नान-वमन। " वन बाद्ध काक्करनद्र जमा निमीधिनीः " आंत्रि मिट्ट महार्थन ब्रुट्टा आंका किनी। " डेम्रांस मिक्स्टा जाटक गंबाटकात पात. " (थाना दरव मिर्ने निनि जारमरने जागात। " अन अन आगर्य, क्लान महा नाहे, " চাতকিনী সম রবো প্রত্যাশিনী ভাই।" মোছন এ কথা শুনি না দেখি উপায়, তক্ণীর বাক্যে কাজে কাজে দিলা সায়। তৰে বিষাদিত মহন নারী গোলাখন, जामान छेठिन नाहि माहन-जडत। प्रगासवा बाजी-कदा (भटन भदिजान, উদ্বাদে ধার বেগে कम्पावित धार्ग। তজ্ঞপ মোহন আসি উদ্যান বাহিরে, জীবনের বাটী তাজি চলে নদীতীরে। সেই নিশাকালে খুলি দিল ভরী তার, চলিদা ভরণী বেংগ কেবা ধরে পার ? উত্তর পশ্চিম দেশ ভাষণেক ভারে, কুড়হললিখা জলে : যোহন অন্তরে।

## নবম সগ্।

Oh then what soul was his, when on the tops
(If the high mountains, he behold the sun
Rise up and bathe the world in light".

The Excursion.

Unnatural deeds

Do preed unnatural troubles "

MACKBATH

মধুমাস সমাগত সব মধুময়, স্বৰ্গস্থল হলে। যেন ভুবনে উদয়। - (य भी (र्श्व कित्रां ७ जै। थि (श्रमकथा कत्र , প্রেমপূর্ণ প্রাণীকুল ভব প্রেমময়। শীতরাজ্যে তক্তুল হয়ে ভরাকুল উলদ জীহীন অতি, হরিত গুকুলা -পরিছরি মনোত্রংখ ছিলা বিষাদিত. বসত্তে নির্থি তার। হলে। উলাসিত। চিকণ রঞ্জিত বাস কিসলয় নাম. পরিধিল অমনি রে, কিবা গুণথাম কহিতে স্ফুক্ষ তার? করি মনে মনে, কাছে রাখিতারে দেখি ; দাই নয়মে। কোন তৰ্ মুঞ্জিত কৈছ পলবিত, কাছারো প্রকুল ফুলে বদন ছলিত। সহকার শাথীকুল আকীণ মুকুলে, मञ्जून माथवी कूल श्रून ठार इस्ता

কাননে কুতুমকুল কত কুতুফিও, কানন-শোভিনী দঙা তাহে মুঞ্রিত। विविध विष्ेषी'शास विविध बल्लही. সমীরণ ভবে উঠে সেন্দর্যা লছরী। মনে ইচ্ছা করি দশ্ধ গৃহ পরিছরি, সে সৌন্দর্যাশ ছেরি আঁখি ছির করি। মঞ্জী উপয়ি অলি গুঞ্জরিছে সুখে, मधुर्गात्न मकु जमा छगश्री यूर्थ। यलत यांकड मरश मरश मुद्र वज्र, চুৰিয়া কুমুম কুল প্রিমল ক্ষয়। পরশনে সে অনিল কি সুধ উদয়, म श्र कृषित करा विना महन्य। शांधीकृत भाशीमात्त सूर्ध करत गान. अवर्ग भीजन (मह स्थी इत आन। गगन मधन करा करम नित्रमन. विमल स्थार्ड भार्ड गर जातामन। मानरवत्र ऋथमिञ्ज स्म म्माउन मर्मान, . छेड्निज्ञ। छेर्फ स्थि मध् करत मत्। পाहेशा वमलकान कीवकलुगन, रता अकवादा मत धारमात मगन। मकरमर स्थी यमि उत्व सुविजन, সমধিক স্থী োই ना ছবে কেমন। কিন্ত হে পাঠক জন, কলিজবতার ভাবি ভাবি কবি-হৃদি হুইল আঁওার কলিঅবভার করে পড়িয়া পাঠক, শরীর ছইল কা<mark>লৈ সুরিল মন্তক।</mark>

कनित्र हिद्दानी जीकि कुछ। कृति मन्त्र छत्त्र कृतिक केविकत्र जैकिव क्यारन । गांउ हां भीचं मह वर्ष व्यावसूम, मकरम जारन शिक्ष कवि जारन पूर्व। শিরোদেশে কুল কেশ শিরোদেশি চিত্র কে তারে চিনিতে পালে কবি জন ভিন্ন। আত খানা ভূষা পড়া যেন ভোলো হাঁড়ী সক দোঁক তাও ছাটা জাৰি লয় কাড়ি। ভ্যাবোর ভ্যাবোর চোক দেখি হয় ভর वामा बूर्त्या किएमा बाग् हाहि विन इत । দস্তপাটী সৰ পচা হুৰ্গন্ধের খনি यात शत्क हूर्णि शत्र ईंटक्टर (भड़िन। राउ इंगे भामा भामा " अब मोबा " मार्ग, চাঁপ্কানের হাতা ঝুলে অছুনির আগ, লুকাতে সে কুঠে করে জেনো হে পাঠক. বসনে কি ঢাকা যায় স্থলত পাবক? যেমন চেহারা থানি অন্তর তেমনি সে অন্তর রাণীগঞ্জে করলার ধনি। কলি অবভার পিছে আছে হুটা চেলা, नित्रीह बान्दव सांद्र वंशाद्वांकि एका। **এक छम भौराश्य (मर्रे (म कनित्र,** क्रॅंट्स উट्डिं व्यक्त मह्म इस विता খুলি ৰাস দাঁড়াইলে চতুর পাঠক, জন্মে মাগুর মত সার সৈ মন্তক। ছটা চকুকোণ ভার এবঞ্চমা ধনি, कवित्र मंत्रीक कारण स्मिष स्म स्वयमि।

धर्यायम् नाहि कानः दृष्टिक प्रवेशः 😗 **रेश्टांटक गठ किंद्र जन्दर्धन यह 🗀 🔻** অপর চেলাটা স্থাধ এক চোকো দেই कटत शेंटम छितिभ अञ्चल भटत यह ।" मृक्तिमान नेदी लारे, श्राकृष्ठि धमनि, আপনার অন্তরাক্ষা চিবার আপনি। বিদ্যাপৃত্ত ভট্টাচার্যা, এমনি প্রাক্তন, গ্রদুর্থ হয়ে তার হতি অধ্যাপন। मिनियात गण्ण कति **इ**टव खुतनिक. সিংছে আক্রমিতে চার হইরা মুষিক। এঁদেরি করেতে পড়ি হে পাঠক জন, भंदीत इसेन कानि कानि श्लामन। (मट्ट नंदि मन मम डाकिन ध मिन, यन माइरनद जरक शिक्तम अरमण। নগর রাজ্মহল স্থান প্রীতিকর अक काटन हिना मिरे मखाटित एत! `অভিধান তার হজা বিখাতি ভূবন, নিশাইকা এ নগর বিচিত্ত শোভন। " ह् द्रांक्त तथ उर अहोनिका मणी, खार्याम धार्माम माधा कांत्र म खत्रमा হইতে সমাধি স্থান উসংএক বার, দেখ দেখ এক বার: তবন্ধ তোমার। ৰনিতে যে **ছ**লে ভূমি কৰ্ডা রম্পীয় ! খীরকথচিত গৃহ , অতি শোভনীয়। हित्रग्राम निश्हामत्म बात्र मित्रा विम, মণিময় বিভূষণ স্বাকিত বাললি।

শিরোদেশে চ্ঞাতপ্তত ক্ষাক্কর, পার্যচর ব্যঞ্জনিত তালর্ভ ধরি। দেই বাসগৃহ-দশা এবৈ হে কেমন <sup>?</sup> • তথি শাখী ক্রীডা করে সহ সমীরণ। নানা তৰু নানা লতা শোভিছে সে ছল, ভবনে বিবিধ জন্ত কলে কোলাহল। যে স্থলে বসিতে তুমি পাতি সিংহাসন, শগাল রহিছে তথি হয়তে। এখন। ক্মনীয় কান্তিময়ী রমণীর খরে. হয়তো সাপিনী বাস করে হর্যান্তরে। শোভিত যে ছুলে তব ছন্দ্রাতপ নিরে, হয়তো বাহুড় তথি উড়ি উড়ি ফিরে। (कानाइनमग्र श्राम हिना अक कान, জনশুক সেই স্থলী ভমিছে শৃগাল। সমাটের ভয় বাটী দে পাঠক জন, তোমার মান্দে ভূমি করছ স্মরণ। मत्म कड़ এक मिन চिखिত जास्टर, দাঁড়ায়েছ নৃপতির ভগ্নাটী'পরে। मभग्न मर्क्दती, श्रूषि भूर्व श्रूषांकव, উদিত হইয়া ঝকে প্রাসাদ উপর। ভগ্নবাটী মধ্য দিয়া নিশাক্র কর, 🕾 পও থ**ও শো**টভ যেন সংগ্রাজ ক্ষার। - उक शक मधा मिश्र मेगीतिक शिक्र অগণ্য মল্লিকা শোভে থেন বাটা'পরি। मकिन निखद्ध- (चात्र-- छ्यू मभीदर्भ, পত্তের স্থার শব্দ করে উত্তোলন।

সকলি বিশুদ্ধ দোৱ-ছত্ত্ৰ দিখাজীত, छानिए धहाँ भीन ; छिछ हमकिए। শকলি নিভন্ধ খোর—বিলির শহার, ৰহারিছে প্রকৃতির ছদি-বীণা - তার। সকলি নিভন্ন যোৱ-কেবল বাস্তুড, मर्था नर्था नर्जनरें कि कि इंड इंड। সকলি নিজন্ধ যোৱ--যেই দিকে চাও, कारनत क्वान पृष्टि मिथिशात भाउ। मिथ मिथ जावि जावि तम श्रामत जात, হবে না কি স্থাি তব সংজ্ঞার জ্ঞাব! **राव नांकि मिरे शांन धर्य धानु कान ?** হবে নাকি ভোজবাজি জান ভব স্থান ! করাল বদম কাল খুলি প্রস্থৃ তার, ধরিবে না হেন পাঠ সন্মুখে তোমার ? "মম অভিধান কাল এই ত্রিসংসার, " সকলি আমার সৃষ্টি মম অধিকার। " নাহিক আমার জন্ম নাহি কর মম, '' আমা হতে ব্ৰহ্ম জেনো আমা হতে ব্যা। " সক্ষত্ৰেষ্ঠ জীব মম পৃথী স্থিত নর, "তাহারি এ অট্টালিকা গঠন স্থার ৮০ " किन्छ भूखगण सम ध्यकृत्ति विवस, " जानि जनानाउ! वरत जानि हरे यम। " এই অট্টালিকা কার? কোৰা সেই নর? " वर्षेत्राट्ड नीन मैंग छेन्द्राकास्त्र । " किছू वित्रकांत्री नम्मित कारन भीम, " আমি হয় প্রগণ হই না প্রাচীন।

" नित्राष्ट्रि जाँगात जर्भे किहू श्र्लगटन "नाहिक कोंद्रात ४२म छन्द अवरंग। " যশরত ভার নাম নাছি যার কর, " কালে সুধী পুত্রকাছে দিওণিত হয়। " मक्का च्रकीर्खि कन्न, हरम नाहि यान, " धन शर्क इत 'धर्क करवर् जानाव। "দিতেছে এ ভয়বাদী তারি পরিচয়; " अककारन स्थाउनीई अरव शरममत्र। "অলস প্রকৃতি তাজ দেহ অমে মন, " পরিতাম প্রাণ শুন আলতা মরণ।" कारमञ्ज इडेरम भिष्ठ गितिया वर्गम. প্রকৃতি ভগিনী তার করে দখোধন। " আমার প্রকৃতি দেখ সদা বাস্ত রই " চন্দ্র, সূর্ব্য, তারা, মহী মুরে সততাই। " এক রূপে আদি আমি এক রূপে যাই, " এक क्रांट्री बहे, शास ज्यमा क्रांट्रिश शाहे। " क्विंनि भेक्षिवर्जन स्नामन्त्र छेभन्न, " জড়তা কেমন নাহি জানে এ অন্তর। "এভুবন যুদ্ধক্ষেত্ৰ সম সুভগণ " छव शूरक कीत्र इंड मंछ यरनी धमः। " সৰি কিছু দিন তবে লভ যদোদালি, '' চিরছারী যাহা লভ ক্রিছ প্রকাশি। " जाम जाम भारत कर भारत " ফুকীর্ত্তি লড়ছ সবে কি করিবে যম।" প্রকৃতি ধরিষা প্রায়ু পড়িবে এ পাঠ, थूनि फिट्र मर्मटकत अधित कनाहै।

বিমর্থ পুরিত সেই প্রীর ভিতরে वियोग कबिट्ड जान इंटे लिक कट्टना হে পাঁঠক তবে যার রম্ভড়াঙা ্মন, বিযাদ বিতরে তারে প্রমোদ রতন। **७**३ नगतीं ७ ७ त भार्मन गान, মোহনের মনোভাব কে করে প্রকাশ ? সমাটের ভগবাচী হেরিয়া মোহন, আনন্দ সাগলে তার অন্তর মগন। নিতা নৰ নৰ শোভা নিৱপি সুধীর মানস-পক্ষজ কুল পবিত্ত শরীর। এক দিন উযাকালে সুহৃদ মোহন, জাগিয়া উঠিল শুনি বিহৃত্ব কুজন। कूरू कुरू शिककून डारक भांधी शिरत, পাপিয়া ঝঙ্কারে কর্ণে সুধারাশি করে। মলয় অনিল ৰছে তৰুশাখা'পরে, गाइन भामभ यन गीउ अध्यात। ু প্রকৃতি-পরম - শোভা দেখিবার তরে, উঠিল পর্বতে ধীর প্রফুল অন্তরে। স্থিত মে মহীধর শোভা চনংকার, নিরীকণে যার শোভা আনন্দ অপার। পাদপে বেষ্টিত গিরি শোভা চিকণীয়া ধীরি ধীরি উঠে ধীর প্রফুল হইরা। रेगनगढ़ উঠে शीत इतमा मः काशीन, নির্থি প্রকৃতি-শোডা মধুর নবীন। পর্বতের পাদদেশে পার্বতীর নর পর্ণের কুটার-জেদী-শোডা কি হুন্দর।

পর্বতের পুর্বদিকে গাঁহন কানন, কত রূপ শাখী শোড়ে কৈ করে গণন ? उमान, शिशोन, जान, मान माति माति, जाम, जाम, हनकम, शानश शाहाजी। मधु मौन नमींगतम मधुत मृत्रि, খরেছে বিটগীপুঞ্ প্রীতিপ্রান্ধ অতি। গিরিশৃদ্ধ হতে শোঁডা করি 'নিরীকণ' প্রমোদ সাগরে মন কার না মগন ? সুক্ষুত্র বিশাল তক সম অঞ্জান, বিচ্ছিনতা নাহি করে নয়নে প্রদান। তারি পরে দুর্কাক্ষেত্র শ্রামল বরণ, তাহারি উপরি চরে যত গাভীগণ। বড় গাভী গিরি হতে যেন বংস মত, দীৰ্ঘকায় নরগণ যেন শিশু কত। তারি পরে নদীগর্ভ পূর্ণ বালু রাশি, भन् भन् कतिराउट मोमार्था अकानि। জাহ্নবী জীবন বেগে ভারি পরে বয়, মরাল আবলী মরি তহপরে রয়। মোহন পর্বত হতে শোভাষ্য ছান, সন্দর্শন করি মরি হইল অভান। পর্বত পশ্চিম ভাগে শোভে গিরিভেণী. জীবন র্থাই তার যে 'কডু দেখেনি। গহন কাৰন শোভে তারি পাদদেশে मार्क्त, जब्रूक, थड़ाी जब्रह्त त्रतम कतिरङह विष्ठत्र निर्देश क्रमश्र, কতরূপ শোভা কছে কেবা সমুদয়?

ক্রমে প্রাচী দিক হ'তে উদিও ওপন, मारम निज्ञी पूर्वभाक्त विरम्जन। লোহিত তপত লোভে অথে গিরি অছে, मील लिया ब्यांडे हतना महका गरम। গিরি হ'তে ভক্শিরে নামে রবিকর, অন্য রূপ শেষ্ডি। হলে। নিসর্গ উপর। গিরি হতে এঁকুতির শোউ। হেরি ধীর, करण कथा मन मत्न शक्त भंदीत। " আহা কি জপুর্বারপ হেরি চতুর্ভিত্তে, " थङ्खि भाजिन काम मानेन धतिरछ। " मचूर्य मिन्नर्ग-मिन्नू इत्र ध्रवाहिउ, " शवरम माधूर्या-छेन्रि इक्ट्र छेन्रिछ। " সে তরজমালা আসি মম দেহ-তীরে, " অছির করিল মম মানস পাখীরে। "থাইতেছে হাৰুড়ুবু সে তরজ-ভারে, " পাঙ্গে কুল পুনঃ চরে প্রকৃতি উপরে। " श्र्वेः त्म जबक्रमाना (वर्ग म्हर पानि, " মানস পাৰীর ছৈর্য্য দের আহা নাশি। " ठकू, कर्व, <mark>नाजा, च</mark>क, कामन जनना, <sup>e</sup> হাৰুভুৰু খায় ভাষা পাইয়া ভাড়না। " তর্ম অহামে প্রঃ পার তারা কুল, " विष्ठदत्र क्षेत्रक्ति शंदत्र कानत्म गांकूम। "मार्थक इरेन धार्न मार्थक भन्नीक, "মৰ মোহনিরা রূপ হেরি আফুডির। " পুৰ্বে ভূৰকদের শোজা? ও কি ৱে তপন ? " কথন তো জাখি, শোডা ছেরেনি এমন।

"নানান; ও রবি নয় ফাদ প্রকৃতির, " पतिरें मानंत्रभाशी मत्न कृति हितं। "পাতির প্রকৃতি ফাঁদ মধুরতা দিয়া, " কেমনে স্থান্থর থাকে মন-পাখী-ছিয়া। " উড়িল রে মন-পাখা তাই দেহ ছাড়ি, ' कि আশ্চর্যা ও মারুর্যা লবে মন কাড়ি। ' পবিত্ত হইল প্রাণ পরিত্ত শারীর, '' ইচ্চাকরি হেরি রবি আঁথি করি স্থির।'' তেজোরাশি তপনেতে ক্রমে মাবির্ভ্ ঝলদিল আঁখি যে রেও তেজ উদ্ভত। :মাহন চাছিল তাই তক শিরোপরে, মপূর্ব শোভন ছেরে জাঁথি ভূর করে। পর্বতের কিছু দূরে দ্ব্যাক্ষেত্র'পরে, মুগ এক ঘূগী সহ রহে গেণভরে। प्रभी - मूरक्नेश्रम भूथ कदिश अर्भन, চত্তাবেশে প্রেমভরে করিছে ঘর্ষণ। আহা কি অপুর্ব গ্রেম তাহাদের মরি, নাহি জানে কপটতা ভিতর উপরি। मांनरवत्र मठ नाहि ङात्न ध्ववक्षमा, ः ভিতরে পৰুষ ভাব মুথে আরাধনা। मृग - मृगी - अमानांश निद्रशि साहन, প্রীতিপূর্ণ হলে। দেহ এফুল জীবন। এক দৃষ্টে চাহি ধীর মৃগী-চক্ষু' পরে, কি যেন ভাবনা এক উঠে সে অন্তরে। হেন কালে তীক্ষ এক স্থবিশ্লি শর, বিদী**র্ণ করিল আসি মৃগীর অন্তর**।

পড়িল অমনি মুখী ছট করি, श्री-जाबि रान जानि जाबिनीत बिता, অঞ্চপুৰ সেই জাঁখি নির্থি মোহন, মোহিনী - इतिगी - जांशि इहेन अत्र।। व्यधीत रहेन भीत मिसू येथा अर्. কিন্তা যথা শিশু - মন বক্ত-কডমডে। মোহিনীয় মূৰ্ত্তি উঠি মান্স নয়নে, আফুল করিল অতি মোছন-জীবনে। অবভরি গিরি হ'তে ব্যাকুলিত-মন, কহিলেক রামধনে আপন সনন। "শুন শুন রামধন আজি মম প্রাণ "কাদিয়া উঠিছে কেন পাই না সন্ধান। " আজি আমি যা'ব বাটী কহিছি নিশ্চয়, " তরী আরোহণে যেতে দেরি নাছি সয়। " गाड़ी ठड़ि इन छुता इरे एः। यारे, " ফুকরিছে প্রাণ কেন সন্ধান না পাই।" প্রভুমুথে ভূত্য যবে এ কথা শুনিল, আনন্দে তাহার মন নাচিয়া উঠিল। ममवाख द्वरे जत्न आहेन। वामात्र, द्रामधन निम मार्थ खरा ममूनाय। गाड़ी जार्त्राहिए हरन शर्त्र इरे जन, করিল টিকিট ক্রয় জরান্তিত মন। .व्याद्वादिन यांत्न (माँट्र मिन यांन हाड़ि, ঘরছরি শব্দ করি চলিলা সে গাড়ী।. জমি-ৰাষ্প্ৰাৰ-গতি কে বৰ্মিৰে আহে. অই বন্ধ এই হলে। কে দেখে তাহারে।

এই পথ ব্ছুক বোধ কাণে দে সরল, এই বাটী একতল কণে সে ত্রিতল। এই রক্ষুত্র বোধ ক্রে দীর্ঘাকার \_ বিদ্যিতা হলো তার যেই একাকার। मार्ठ, यांचे, शर्थ, शृद्ध मरम इत्र कान, উড্ডীয়মান পক্ষীরে ফেলি ছুটে বান। গত হলো এক দিন গত এক রাতি, রামধন মোহনের যান লোক সাতি। পর দিন গাড়ী হতে উত্তরি গোহন, স্থাম - পথাভিমুখে করিল গমন। वाजिन अधिक दिना मिनि ब्रामधन, क भगमाना मत्या अत्यत्म इकन। त्माहम वर्मिन उथि क्रांच-कटनवत्र, গতক্রম মোহনের কিছুক্রণ পর। হেন কালে "হা প্রাণেশ রহিলে কোধায়!" ্ মূহ মূহ স্বর ধীর শুনিবারে পায়। পুনঃ সেই বামাস্থর ধীরি দীরি কর, "রহিলে কোথায় নাথ এমন সময়। "এসময় একৰার দাঁড়াও সম্মুথে, " তাজি হে এ পোড়াপ্রাণ তবে আমি স্থাথ।" পুন; সেই খেদধনি শুনি কামিনীর, মোহনের মন হলে। অতীব অভিব। দয়ার অন্তর যার মে কি পরছুখ মে চন করিতে কভু হয় হে বিমুখ 🛉 महान्त्र भत्रष्ट्र (भनमम वार्ष्ट्र, পরহিত কাধিবারে ভুলে নিজ কাজে।

বিমোচিতে পরছুধ সহে নিজে ক্লেশ, এমনি জেনো হে স্থা দয়ার আদেশ। রবিফর তক্ষবর ধরি শিরোপরি, जनात्रारम करत यथा शासू-इःश मति। কিন্তা যথা সুধানিধি পুড়ি রবিকরে, स्था दित्रको कर्त्र मानव - निकर्त्र। মোহন - ভাবণে পশি সেই খেদধনি. উদ্বেল করিল তার অন্তর অমনি। পণ্যাজীৰ কাছে ধীর কৃতৃহলী চিতে জিজাসিল কোন জন কাঁদে আচহিতে ? कहिल म পगांकीय ' अक्षी दम्गी, "উচ্চকুলোদ্ভব। তঁংরি ক্রন্দনের ধনি। " मूम्र्य अवस्। कांत्र मिश्र कार्टिवृत," মোহন দেখিতে তারে অতীব উৎস্ক। উপস্থিত নারী-পাশে বামা মেলি আঁথি চাহিল মোহন পানে মুখ উদ্ধে গ্ৰাথ। হতজ্ঞান হলো নারী হইলা মুক্তিত মোহনের হৃদি কাপে দেহ চুম্কিত। ৰহিতে লাগিল বেগে মোহন শোণিত, বিষ্ময় বিপ্লব চিত্ত দেহ লোমাঞিত। कूछि धीद आमि नीत निल मादोशूरथ. সংসার আঁধারময় হৃদি পূর্ণ হৃতে। किছूक्न পरङ्ग, मः छ। इहेन छेन्द्र, হাসিরা উঠিল তবে মোহন - ছদর। छेठिया विमन नाही कान दाग नाहे, যার জন্ম রোগ সে যে সমুখে রে ভাই।

হে পাঠক সহদয় কিবা প্রয়োজন বলিকারে এই নারী হয় কোন জন! माइटनत्र अनित्रनी माहिनी सम्बती, পাষও জীবন দেছে এ হুর্গতি করি। গুপ্তভাবে প্ৰাইলে পিত্ৰালয়ে ধনী, अही बर्म इ... इद कति मन्नाम व्यम्भि, মোহন - শৃশুরালয়ে আসি উপস্থিত, भाइन-थलात कके निज! यार्थाहिल। (भाककमा जातन किन स्माहिमी जनतक, বঞ্চিত করিল। অর্থ শুষি কপর্দ্ধকে। অন্যা হইয়া ধনী হতে গিতালয় পলাইয়া আমিতেছে শশুর-আলয়; খশুর জনকালর ভিন্ন রমনীর কোথা স্থান আছে মার পাঠক স্থীর। সংজ্ঞা দম্পাদিত যবে হলো মোহিনীব, मग्रंथ नार्थरत रहति जानरक जभीत। মোহিনীর মনোভাব কি হলে: তখন. সে ভাব বনিতে দক্ষ হয় কোন জন গ হে পাঠক স্থীবর **দে ভাবের** ভাব, তোমা ছাড়া কার হবে অনুভব লাভ। হে পাঠক তাই বলি তব হৃদি-পটে, মোহিনীর মনোভাব জাঁক অকপটে। কাব্যপটে দে ভাবের পাইবেঃ অভাব, করি দিল। স্থসশ্বান আঁক তুমি ভাব। সহদয় - করে যদি গড়ে সেই ভাব, তবে সে ভাবের পাবে যথাপু ফভাব।

त्याहिनीत्व मीना कीना निवृति त्याहन, डेर्किन वियान - यन तम किन गरान। विका आम्हरी अरु मिन मिक्सिकार्भे, ভাঙ্গিলা ইন্দ্রির তক দেখি লাগে জাস। কুভূহল - শিখা তায় হানিছে বিদ্লাৎ, नीत्रम-निर्द्याय जात्र अठि अम्कूर। অভা - রুফ্টি বরিষণ হক্তে কিছু ক্ষণ, থামিল আক্ষর্য বড়ি তাণি দেহ, মন। দেহ-তরী ত্রাণ পেরে যন্ত্রণা তুফানে, মোহন সম্বোধি কহে মোহিনীর পানে। \* একি একি বিধুমুখি কেন ছেন দশা, " সে শরীর চেনা ভার দেখিলে সহসা। " म नावगामत्री मूर्खि किन जिताहिएं, " সে সৌন্দর্যারাশি কোণা, হলো লুকায়িত। " কেন বা এ স্থলে প্রিয়ে যেন অনাথিনী, " কেন বা এ ৰেশ তব যেন পাৰ্গালমী। " वल वल इंग्ड्रमूथि वन्क क्टिंग योग्र, • ঘটিয়াছে কি জঞ্জাল কহ লো আমায়।" নাথেরে উত্তর দিতে অঞ্ধারা শত বহিল মোহিনী-**গ**তে বেগে অবিরত। দর দর অঞ্চ ঝারে বাক্য নাছি স্ফুরে क करत का का का किया विशाप मिसूरत। करत औषि इन इन गम गम खार व्यानकारस विरमामिनी अक्रतम मंस्रारत। " इन इन প्रान्याथ आर्ग राजि इन, "সে কথা কবার নয় এই পণ্যস্ত্র।

" कहिट दूर्ध काहिनी मण निणि निर्त, " ফুটিবে অরাতি-বক্ষ যবে সে শুনিবে।" মোহন ও রামধন হয়ে জুরাম্বিত আনে পাল্কি হ'তে এক পল্লী সন্নিহিত। প্রবেশিল পাক্তি মধ্যে মোহিনী স্থন্তরী, চলিল। বেছারাগণ ভ্রম হাম করি। ু চিন্তাপুর প্রামে ক্রমে আসি উপস্থিত, পড়ি গেলা কোলাহল সবে চমকিত। মহোৎসৰ পড়ি লীল মোহন-ভবনে, প্রতিবেশীগণ এলো দেখিতে মোহনে। (याहन - कननी - इति धतिल कि जात, স্নেহময়ী ুমাতা ভিন্ন সে ভাব-সভাব वुकिएक में कम (रुवा ? वुका भा जनिन, श्रांता अश्रालत निधि (शाल सुज्यनि, ক্রন্থে তোমার হৃদি হয় বিকসিত। অপুরে সে ভাব আশা পণ্ডিতাচ্চিত। माइन-क्रन्ती छनि जाहेला माइन, ধেয়ে আসি পুত্র কাছে করে সম্ভাষণ। " थिन कि माइन माइ जक्षानत धन. " আয় বাছা কোলে করি মুখানি চুম্বন। " কাঁদি কাঁদি ভোর তরে ও মোর রতন, "হইরাছে দৃফিহার। ৫ ছ্টী নয়ন। " সাঁচলে রেখেছি বাঁধি ছলো কত দিন " এই মিষ্ট দ্রবাটুকু, স্থ-তার-বিছীন " বুঝি ছইয়াছে এবে দেখ দেখি খেয়ে, " এই भूँ टिं म निनम की तर्रेक् পেয়ে

- " तारिशाहि वाधि वाहा धत कहत धत,
- \* দেখিরা জুড়াক মম এ পোড়া অন্তরী।-
- " विटिन ना श्रिया मित्र खकारतह मूथ,
- "পাইয়াছৈ বাছা মোর কতই অস্থ।
- े " वर्षे या लक्षी आभात ननीत श्रक्ति,
  - "কষ্টে হইয়াছে সার পাঁজর কেবলি।
  - " বোস মা গোঁ বোসু বোসু মোছনের বামে."
  - "কাজনি মা আর তোর কাজনি প্রণামে।
  - "দেখিয়া জুড়াক চোক জুড়াক হৃদয়,
  - **" কি আনন্দ আজি নো**র অন্তরে উদয়।" মোহন - জননী ভাবি ভাবি পুত্র তরে, अर्क भागनिनी थात्र आहितन, घरत। উপযুক্ত স্থত তরে নহিলে 🗤 কার, একটুকু क्लीत नैरिध जाँहरलत धात? আননের সীমা নাই মোহন-ভবনে আখীয় স্বজন এলো দেখিতে মে হনে। পরম মিত্র মাধব, বন্ধু দরশনে, আদি উপস্থিত হলো মোহন-ভবনে। মোহন মাধ্বে করি যথেষ্ট আদর, সদর বাটীতে এলো ধরি তার কর। नाना कथा करह फ्रांटर अकटा विभाग, क्रन शर्द्ध कहिंग माध्य विवित्रिया আজোপান্ত সমুদায় রভান্ত ভয়াল, ঝরিল মোহন-অত হামিল কপাল।

जनरकत ভ्यकत प्र्या छत्न शीत, ছ্ইল তাহার মন বিষাদে অন্থির।

জीवत्तद कर्श छनि रेगाइन-पष्ठत, काॅिश्टि नांशिन। त्कांदिश्यत्थत् थत्। ক্রোধ সম্বরণ করি স্থার, মেহিন, জীবন-জায়ার গুণ করিল। বর্ণন। म जंकी कामिनी-कथा वर्नितन माहन, মধেব একাগ্রচিতে করিলা অবণ। উঠিল মাধৰ-ছদে জিখংগা ভাগাল, দে বৃত্তি করিতে তৃপ্থ উপস্থিত কাল। गाध्य त्रांहरन जानि महारमय मम, दाशिन राग्भिन कति (म वाङ्गा विसम। মাধব মোহন - কাছে চাহিল বিদায়, পর দিন শুক্তপুরে চলিলা ছরায়। সাসি শৃত্যপুরে এক দরিতের যমে, মাধব লছল। বাসা প্রফুল অন্তরে। ত্বির পুলোভান বাহির ভ্রমিয়া, রাখিল গবাক দার ঠিকানা করিয়া। কাল্পনের অমানিশি করিয়া প্রত্যাশা মাধব রহিল সেই আপনার বাসা। निक्षीतिञ निभीशिनी काम जाविङ्ज, মাধব পূরিতে বাস্ত কামনা অভূত। মেদিনী আরতা দেখি যোর অন্ধকারে, উপস্থিত মাধ্ব সে উভানের দারে। পরশিল যেই ছার খুলিল অমনি, জীবনের জায়া গুণবভী মধুমতী, তাহারি কিন্ধরী ইনি মিটর্মুণী অতি।

माधटन मिथाटश शर्थ 'दांधा घांटि जानि. विभाग विभाग क्षे (भाग स्वत्रामी) কহিল সকল কথা মধুমতী কাছে, ভবে হেম স্থমংবাদ বল কিবা আছে। প্রাণসংগ-আগমন-কথা শুনি ধনী, आस्तीरम नाहिन मन धनीत उशनि! दामना-मर्जिका इत्म मुक्षवित्व जािक, এত দিনে জগদীশ তার প্রতি রাজি। আভরণ নানাবিধ হীরকে খটিত, পরিল ক্মনারী অঞ্চে বদন ছসিত। করি বেশ মনোহর শয়ন-ভবনে চলিলা কামিনী হরা ভেটিতে জীবনে। মিষ্ট মিষ্ট কথা কহি আপন স্বামীরে, ভুলাইল তার মন কতই ফিকিরে। কতক্ষণে নিজা যায় দয়িতঃ আপন, করিতে লাগিলা করে সেবা ছচরণ। অপর পুরুষে যবে প্রদন্ন হাদয়, স্বামীরে সে নিশি যতু কতই গো হয়। ় জ্বীৰন নিদ্ৰিত দেখি স্থন্দরী উঠিল, চিত্তচোরে ভেটিবারে অমনি চলিল। पानत्म प्रधीता धनी इता जलाविज, মাধবের সন্নিধানে আসি উপস্থিত। জাঁধারে মাধবে ভাবি সুধীর মোহন, কছে কথা কলঙ্কিনী করি সম্বোধন। " जरमा जरमा थानमर्थ खुड़ाई नज़न, " তোমার ও চাদমুখ করি দরশন।

'' চারি মানু ভাবি ভাবি'ওহে চিত্তচোর, " শুরীর হয়েছে কালি চৈয়ে দৈখ শোর। " এক দিন হ'তে জান একটা বংসন, "ভাগিত ও মুখশশী হ্লদে নিরপ্তর। " আমার যৌধন ধনে তুমি সক্ষেশ্বর, 'ধ্ধন মন্ কি যৌবন লছ গুণাকর। -" वरमा वरमा थानमत्थ क्षमः भागतन, '' কৰুকু ব্যজন পাধা সোহাগ-প্ৰনে। " गीउन विभन भात जानम-कीवन, ' कबक् थार्णम उत् भन थकानन। ' कबक् इर कूलशजु भजु जाकर्रन, " ছউক সার্থক মম জীবন যৌবন। 'কর সংখ<sup>়</sup> সুখে এই তামুল ভক্ষণ 'কহ কথা সূহদেশ জুড়াক প্রবণ।" रह পाठक ऋधीयत अन्तरह साहन, যেমনি সে মধুমতী মাধ্ব তেমন। মধুমতী-রূপ হেরি মাধ্ব মোহিত, কি যেন ভাবনা হৃদে হৃহল উদিত। কফে সৃষ্টে মনোভাৰ করিয়া গোপন, মধুমতী প্রতি কছে মাধৰ তথন। " শুন শুন বিধুমুখি অপূর্বে কথন, " রাখিতে হইবে মম আর এক পণ। "আমার বান্ধব-পত্নী হরিবার তরে, " তব স্বামী কত কফ দিলা নৈ অন্তৱে। "ভোমার স্বামীর ছদি গঠিত পাষাণে, " নিজ স্থ তরে বধে অপরেরে প্রাণ্ডে।

"কত কট প্ৰদানিল বান্ধক ভাৰ্যাৱে " वहमः न। नत्त्र मर्मः छाङ्। वर्तिवादः। " निल केंद्र कृषि यपि शाक् मानिवाद्य, " তোমার আমীরে ধনি তীক্ষ তরবারে, " তবে হে প্ৰে<mark>য়সি হ</mark>ৰ তোখাৰি তথনি "নতুবা চলিছু আমি শুন সুবদনি।" মধুমতী শুনি এই কথা ভয়ানক, শরীর কাঁপিল তার ঘুরিল মন্তক। কছে সে কামিনী পরে মাধবের প্রতি " তৰ কথা প্ৰাণকান্ত আশ্চৰ্যা হে অতি। " কেমনে বধিব আমি স্বামীরে আপম, " নারী হয়ে পুৰুষেরে বধিব কেমন।" মাধৰ কছিল তবে "চলিলাগ আমি " স্থে লয়ে থাক ধনি আপনার স্বামী।" **७७ द**िन कति एल म'्धव हिनन, मधूमजी माधरदरत अमनि धतिल। यागीत हतिज्ञाना श्रीन कर्ल धनी, উঠিছিল কোপানল অন্তরে অমনি। মুখে প্রকাশিল শঙ্কা অন্তর অভয়, সকলি করিতে দক্ষ ভ্রমীর হৃদয়া। মাধবে কছিল পরে কথা বিনাইয়া, " क्रमरन श्रूरम विधि तमगी हरेगा। " সাহায্য করিতে হবে তোমারে হে নাথ, " তাই বলি এসে। হুদ্ এ অধিনী সাথ।". **७७ विन भाषायात माम नाम धनी,** আপৰ জন্দরে চলে শকা নাহি গণি।



জীবন পর্যাকে মগ্ন প্রসাচ নিজায় वर्ज्जि-आरंगिक स्थू खेनिए उथाता। ञ्जीक्ष इतिका हिन माधरवृतं कंदतः, লইলা যে মধুমতী অতীব সত্তরে। क्षीवत्नतः पूरे कत्र माधव धतिन, \* मध्यजी धीवातामा इति वमारेम। উঠিল চীৎকার করি জীবন "ভয়াল, শোণিত বহিল বেগে উপস্থিত কাল। माधक रम मृथा मिथि इति भनारेन, मधूमजी जात शिष्ट अमेनि शाहेल। মাধবের দেখা আঁর পাইবে কোখার ?ু মধুমতী হানে কর আপন শায় হাঁয় করে ধনী হয়ে অনাথিনী. মধুমতী, এক্রারে খোর উন্নাদিনী। আলু থাকু উন্নাদিনী ছুটিয়া বেড়ায়, \* কি করিত কি হইল হার হার হার।"

## नगाथ ।